जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

अक्टूबर 2017 द्वितीय पक्ष पृष्ठः 52 मूल्यः 7:00 रुपये

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

परम श्रद्धेय गुरु भगवंतों को हार्दिक वंदन-नमन्

श्रमण संघीय एवं जैन कॉन्फ्रेंस की आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियाँ

इंदौर में आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. को मध्य प्रदेश शासन की ओर से आचार्य श्रीजी को 'ध्यान गुरु' की उपाधि का अलंकरण सौंपने एवं आर्शीवाद लेने पहुंचे म.प्र. मुख्यमंत्री मा. श्री शिवराज सिंहजी चौहान।

इंदौर में आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. को मध्य प्रदेश शासन की ओर से 'ध्यान गुरु' की उपाधि का अलंकरण सौंपते हुए म.प्र. के मुख्यमंत्री मा. श्री शिवराज सिंहजी चौहान।

इंदौर में आचार्य श्रीजी के समक्ष वयोवृद्ध श्राविका सौ. मंजुलाबेन बोटदरा जैन को 'वात्सल्य-वारिधी' से सम्मानित करते हुए श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, श्री चंदनमलजी चोरड़िया जैन, श्री रमेशजी भंडारी जैन, श्री जिनेश्वरजी जैन, सौ. रेणु डिपिन जी जैन एवं अन्य।

इंदौर में आचार्य श्रीजी के समक्ष श्रावक को ....सम्मानित करते हुए श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, श्री चंदनमलजी चोरड़िया जैन, श्री केसरीमल जी बुरड़ जैन, श्री रमेशजी भंडारी जैन, श्री जिनेश्वरजी जैन, श्री राजेन्द्रजी जैन महाजन, श्री सुभाषजी विनायिका, श्री संतोषजी जैन 'मामा' एवं अन्य।

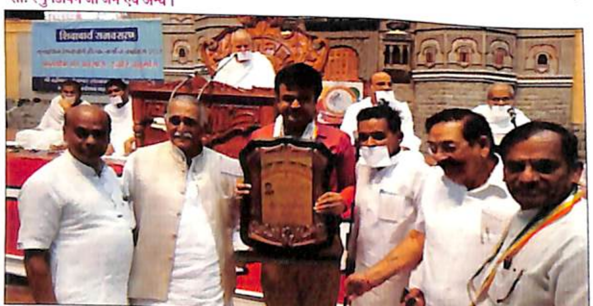

इंदौर में आचार्य श्रीजी के समक्ष श्री आदेशजी खिंवसरा जैन-पुणे को राष्ट्रीय स्तर पर वैय्यावच्च के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिये 'श्री आनंद-शिव-महेन्द्र सेवा युवा रत्न अवार्ड' से सम्मानित को करते हुए श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, श्री केसरीमल जी बुरड़ जैन, डॉ. अशोककुमारजी पगारिया जैन, श्री जिनेश्वरजी जैन एवं अन्य।

हैदराबाद में विराजित उपा. प्रवर पू. श्री प्रवीण ऋषि जी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में भगवान महावीर मेडिकल रिसर्च सेंटर, डायलिसिस सेंटर एवं अर्हम् विज्जा फाउंडेशन के संयुक्त प्रयास से डायलिसिस के साथ ध्यान-साधना उपक्रम के आरंभ के अवसर पर अपना उदबोधन देते पू. श्री प्रवीण ऋषि जी म.।

कात्रज, पुणे में विराजित सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी म. से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए श्री केसरीमलजी बुरड़ जैन, श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, श्री पारसजी मोदी जैन, श्री अशोकजी धोका जैन, श्री बालासाहेबजी धोका जैन, श्री सुजानमलजी बुरड़ जैन आदि।

इंदौर में युवाचार्य पू. श्री महेन्द्र ऋषि जी से आर्शीवाद लेते श्री केशरीमलजी बुरड जैन, श्री सुजानमलजी कल्याणसिंज जीम बुरड़ जैन परिवार एवं श्री अशोककुमारजी धोका जैन, श्री नेमीचंदजी दलाल जैन, श्री उमरावसिंह जी मेहता जैन, श्री जसवंतजी गन्ना जैन एवं अन्य।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

परस्परोपग्रहो जीवानाम

श्रमणसंघ निर्देशेः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम

वर्ष-60 | अंक-20 | अक्टूबर 2017 | द्वितीय पक्ष 23-24 अक्टूबर | मूल्य एक प्रति 7 रुपये

प्रधान सम्पादक

अशोककुमार एन. पगारिया जैन

सम्पादन सहयोगी

शेर सिंह जैन

बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

नई दिल्ली

जैन भवन

12, शहीद भगत सिंह मार्ग

गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001

दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420

फैक्स : 011 - 23344380

E - mail

aissjc1906@gmail.com

Website

www.jainconference.org

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता	
12 वर्ष	रु. 1000/-

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन	07
अध्यक्षीय उद्‌गार	श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन	09
जयं चरे	आचार्य सम्राट पू. श्री शिवमुनि जी म.	11
महामंत्र की महा आराधना	पू. श्री उपेन्द्र मुनि जी म. 'शास्त्री'	12
जैन	पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म.	13
नव पद की आराधाना	पू. डॉ. श्री प्रमोदकंवर जी म.	14
मनोबल	पू. श्री युगल निधि कृपा जी म.	15
प्रत्येक व्यक्ति भगवान ...	श्री अविनाश चोरड़िया जैन	16
जैसी भावना वैसा फल	श्री शेर सिंह जैन	18
एकता के जीवान्त ...	डॉ. दिलीप धींग	19
अप्प दीपो भव	श्री सुमेर सिंह मुणोत जैन	22
अपने व्यक्तित्व कृतित्व	डॉ. प्रेमसुख सुराना जैन	23
संयम पथ के सजग ...	डॉ. रतनलाल मारू जैन	25
धनतेरस के उपलक्ष में ...	श्री रमेश बम निर्मल बम जैन	27
निराशा एक धीमा ज़हर	श्री बनेचंद बोथरा जैन	29
भारतीय संस्कृति-पाश्चात्य ...	सौ. निधि दिनेश लोढ़ा जैन	30
विद्वानों की दृष्टि में ...	श्री सुरेशचन्द्र धींग	32
संतो की दृष्टि में ...	सौ. उपरावदेवी धींग	33
ध्यान	सौ. दिपाली सुमतिलाल मगदिया जैन	34
महिला शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ		35
समाचार प्रकाश		36
शोक समाचार		48

सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा,
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज
युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज

उपाध्याय मण्डलः श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
श्री मूलचंद जी महाराज
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक मण्डलः श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
श्री सुमन मुनि जी महाराज
श्री रतन मुनि जी महाराज
श्री मदन मुनि जी महाराज
श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

महामंत्री - श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री मण्डलः श्री शिरीष मुनि जी महाराज
(शिवाचार्य मुख्य सचिव)
श्री आशीष मुनि जी महाराज
श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार मण्डलः श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
श्री सहज मुनि जी महाराज
श्री सुकन मुनि जी महाराज
श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
श्री तारक ऋषि जी महाराज
श्री रमणीक मुनि जी महाराज
श्री दिनेश मुनि जी महाराज
श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डलः श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
श्री चंदना जी महाराज
श्री सुधा जी महाराज
श्री सुप्रभा जी महाराज
श्री सरिता जी महाराज

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे - पदेन सदस्य

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

	एस.टी.डी.	दूरभाष कार्यालय	दूरभाष निवास	मोबाइल	फैक्स
राष्ट्रीय अध्यक्ष :				09423962818	
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	0253	2461546, 2465569	2460026, 2461546	09423963100	2461546
निवर्तमान अध्यक्ष :					
श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	0731	401157, 4011111		09303232777	4011110
चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :					
श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर	080	25475895, 25478567	25475901, 25475695	09844152853	41250211
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :					
श्री जे. डी. जैन, गाजियावाद	0120	2706100	2750100	09810006462	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	02932	280898,280899	222125,325125	09829025729	222125
श्री सुवालाल बाफना जैन, धुले	02562	232033, 233133	235544, 235555	09422296155	
प्रमुख मार्गदर्शक :					
श्री कान्तिलाल एच. जैन, मुंबई	022	26398752	26352434	09821033225	26356983
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली	011	43573099,43573499		09313813899	23346899
श्री रामकुमार जैन, लुधियाना	0161	2449493, 2447538	2448714, 4413040	09814002335	2449957
श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	0731	2540914	2540900	09826022621	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :					
श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ), अहमदनगर				09960666065	
श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई	022	29255921, 29250508	25222104	09821668548	29200223
श्री भंवरलाल डी. बोहरा जैन, मोलेला (राज.)				09324556349	
श्री ओंकारसिंह सिरोया जैन, उदयपुर	0294	2414033	2410374, 7023907574	09414167574	
श्री बालासाहेब चोरड़िया जैन, मुंबई	022	26367681	26367381	09324122233	
श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	0240	2337015, 2324811	2480979	09822659910	
श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	0731	460069 4070069		09302103817	2460069
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर	0181	5001111, 5019611		09815184311	
श्री भंवरलाल भण्डारी जैन, हैदराबाद				09440897417	
श्री वी. शांतिलाल पोखरना जैन, बैंगलोर			9845155799	09342535887	
श्री जगदीश चन्द्र जैन, पानीपत	0180	4009181		09896200081	
राष्ट्रीय महामंत्री :					
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	020	46703433	09422036831	09028736831	
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :					
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	011	43573099, 43573499		09868125710	23346899
राष्ट्रीय मंत्री :					
श्री विमल जैन, अम्बाला		7027131008	09216701008	09466701008	
श्री संजय जैन, 'निशा' लुधियाना	0161	2621237		09417253101	
श्री कंवरलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा	01482	236641	239104	09414113056	
श्री सोहनलाल भण्डारी जैन, नाशिक				09823079708	
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	0253	2599400	2599500	09422246500	
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	011	27372290		09810672111	
श्री विजय डागा जैन, मुंबई	022	28470384	28398165	09821095976	
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुले	02562	278519		09423193447	
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद				09810078214	
श्री आनंद कोठारी जैन, बैंगलोर	080	28538338		09341234176	
श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन, चेन्नई				09035010666	
श्री सागर सांखला जैन, भोसरी				08888090999	

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री					
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	011	27296131		09310054428	
राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री :					
श्री सुभाष जैन 'लिली', मंगलदेश (पंजाब)				09814699393	
श्री रिखबलाल सांखला जैन, मुंबई				09820668898	
राष्ट्रीय युवा शाखा :					
अध्यक्ष- **श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव				09823955515	
महामंत्री- **श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद	0240		2338224	09822276008	
राष्ट्रीय महिला शाखा :					
अध्यक्षा - **श्रीमती रूचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई			09423966963	09820004079	
महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत				09426115241	
जीवन प्रकाश योजना :					
अध्यक्ष - **संजय बोथरा जैन,** घोटी				09822596781	
मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई				09833866852	
जीव दया योजना :					
अध्यक्ष - **श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत				09879550981	
मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत				08980018801	
मानव सेवा योजना :					
अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर	0731	2531066	2970666	07773866000	531066
मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर	0731	28753681	2780090, 2785232	09425062147	
ज्ञान प्रकाश योजना :					
अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर	080	22383557		09448238429	
मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर	080	41221890	41223853	09844058123	
वैय्यावच्च समिति :					
अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक	0253	2575799		09422944800	
मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे				09822285538	

:: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु)	मो. : 098410 30035
श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश)	मो. : 094924 44444
श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक)	मो. : 093412 32573
श्री अतुल जैन (दिल्ली)	मो. : 098110 75336
श्री विनय जैन (हरियाणा)	मो. : 086075 00001
श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाव)	मो. : 098150 20661
श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098370 67082
श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 098260 62838
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 094220 74172
डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098300 30774
श्री सतीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 22138
श्री कांतिलाल बोथरा जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 094223 05755
श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात)	मो. : 095958 91111

:: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

श्री महावीरचन्द वोहरा जैन (तमिलनाडु)	मो. : 096772 47246
श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश)	मो. : 098480 54130
श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक)	मो. : 098806 28555
श्री जसवंत जैन (दिल्ली)	मो. : 098104 35108
श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा)	मो. : 099963 33388
श्री अरुण जैन (पंजाव)	मो. : 098155 66885
डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098083 79242
श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 094251 01230
श्री वलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 098297 85197
श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098302 49151
श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 21511
श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 098231 29411
श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात)	मो. : 093769 01329

सम्पादकीय

चलों, आत्मा की खोज में

– **डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन,** राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

प्रिय पाठक भाईयो एवं बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र!

यह जैन प्रकाश पत्रिका जब आप पढ़कर रहे होंगे तब तक दीपावली का त्यौहार आपने हर्षोल्लास तथा प्रसन्नता के साथ मना लिया होगा। जहाँ-जहाँ पर चातुर्मास संपन्न हो रहा है, वहाँ पर तो जप-तप तथा भगवान महावीर की अंतिम देसना **'उत्तराध्ययन सूत्र'** का श्रवण करते हुए भी दिपावली मनाई गई होगी।

आपको सूचित करते हुए हर्ष होता है जैन कॉन्फ्रेंस की महत्वपूर्ण योजना जीवन प्रकाश योजना तथा मानव सेवा योजना का काम सूचारु रूप से चल रहा है। जीवन प्रकाश योजना के राष्ट्रीय मंत्री श्री लादुलालजी बाफना जैन एवम् मानव सेवा योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री महेशजी डाकोलिया जैन की मेहनत एवं योजना को उनके द्वारा दिया जा रहा योगदान सराहनीय है, जिसके लिए वे वास्तव में बधाई के पात्र हैं, मैं उन्हें धन्यवाद प्रेषित करता हूँ, उनका अभिनंदन करता हूँ।

इस पखवाड़े की विशेषता यह है कि आचार्य भगवन् पूज्य डॉ. शिवमुनि जी म. सा. को जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से अनुरोध किया गया था कि जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों के लिए चार दिवसीय **'आत्म-साधना गंभीर शिविर'** का आयोजन करने की कृपा करना और गुरु भगवन ने तथा इन्दौर श्रीसंघ ने दिनांक 11 अक्टूबर से 14 अक्टूबर तक चार दिवसीय शिविर का आयोजन बड़े और सुंदर और सुचारू रूप से किया। शिविर में काफी संख्या में शिविरार्थी शामिल थे। शिविर में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय स्तर के कई पदाधिकारीगण उपस्थित हुए, शिविर में सम्मिलित हुए थे।

राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाशजी चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, श्री बालासाहेब जी चोरड़िया जैन, श्री रमेशजी भण्डारी जैन, मैं स्वयं, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शशिकुमारजी 'पिन्टू' कर्नावट जैन, युवा कार्यकारी महामंत्री श्री गणेशजी सांखला जैन, श्री जयप्रकाशजी लुणावत जैन, महिला राष्ट्रीय मंत्री श्रीमती लताजी पगारिया जैन, श्रीमती विमला प्रकाशजी बाफना जैन, श्री रमेशजी जी बाफना जैन, श्री रमेशजी चोपड़ा जैन, श्रीमती अनुराधा रमेशजी बाफना जैन, श्री गौतमजी पारख जैन, श्री विजयजी जैन-भोपाल, श्री सुनीलजी लोढ़ा-उज्जैन आदि पदाधिकारियों के साथ सदस्य सहित लगभग 40 जैन कॉन्फ्रेंस के महानुभाव चार दिवसीय गंभीर आत्म-ध्यान शिविर में सम्मिलित हुए। कुल लगभग 80 शिविरार्थियों ने शिविर में हिस्सा लिया।

सभी ने **'आत्म-साधना गंभीर शिविर'** का लाभ लिया, आनंद लिया और आचार्यश्री जी के साथ युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म., मंत्रीवर पूज्य श्री शिरीष मुनि जी म., वीतराग साधिका निशाजी

जैन आदि ने भी मार्गदर्शन प्रदान कर शिविरार्थियों को लाभान्वित किया।

मेरे अनुभव के माध्यम से मैं कह सकता हूँ कि आप भी एक बार **'आत्म-साधना शिविर'** में सम्मिलित होकर आनंद की अनुभूति लेकर अपने आपको लाभान्वित करें। चलों, आत्मा की खोज में सम्मिलित हो जाईयें आत्म-ध्यान साधना शिविर में।

जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला शाखा की ओर से राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रूचिराजी सुराणा जैन के नेतृत्व में नवम्बर महीने में **'सिंगापुर-मलेशिया'** की विदेश यात्रा का आयोजन किया गया है। महिलाओं ने महिलाओं के लिए इस विदेश यात्रा का सुंदर आयोजन किया है और 70 से ज्यादा महिलाएं इसमें सम्मिलित हुई हैं। इस विदेया यात्रा के संयोजन के लिए राष्ट्रीय महिला पदाधिकारियों सौ. रूचिराजी सुराणा जैन, सौ. सुनंदाजी भंसाली जैन, सौ. मंजुजी दर्डा जैन को ढ़ेर सारा धन्यवाद तथा अभिनंदन ।

इन्दौर में युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. के स्वर्ण जन्मोत्सव के अवसर पर राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शशिकुमार जी कर्नावट जैन के नेतृत्व में संपन्न हुए वैय्यावच्च पुरस्कार समारोह में श्री आदेशजी खिंवसरा जैन को **'श्री आनंद-शिव-महेन्द्र सेवा रत्न पुरस्कार'** राष्ट्रीय से सम्मानित किया गया। उनको यह पुरस्कार राष्ट्रीय स्तर पर वैय्यावच्च के क्षेत्र में साधु-साध्वी जी महाराज की सेवा के अनुकरणीय कार्य के लिए प्रदान किया गया। स्वयं देशभर से साधु-साध्वीजी महाराज ने उनके इस महान कार्य की प्रशंसा करते हुए अनुमोदना की है, जिसके लिए वे वास्तव में साधुवाद और इस अद्भुत पुरस्कार के पात्र हैं। इसके अलावा श्री दीपकजी मुणोत जैन-मनमाड़, श्री विवेकजी जैन-रोहतक, श्री राजेशजी गोलेछा जैन-बैंगलोर, श्री अनिलजी कुचेरिया जैन-रायपुर को **'श्री आनंद-शिव-महेन्द्र सेवा रत्न पुरस्कार' प्रांतीय स्तर पर वैय्यावच्च के श्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रदान किया गया। मैं सभी पुरस्कार युवाओं को उनके मिले सम्मान की अनुमोदना करता हूँ, वे ऐसे ही साधु-साध्वी जी महाराज की सेवा करते रहें, धन्यवाद! शुभकामनाएं।**

गत् अंक में संघ सेतु, उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री रवीन्द्र मुनि जी म. सा. के दीक्षा दिवस के स्थान पर जन्म दिवस गलती से प्रकाशित हो गया, जिसके लिए मैं उपाध्यायश्री जी से तथा सभी पाठकजनों से हृदय से सम्पादक मण्डल की ओर से माफी चाहता हूँ।

इस पखवाड़े में दिनांक आचार्य पू. श्री कांशीराम जी म. का 27 अक्टूबर को, आचार्य पू. श्री सोहनलाल जी म. का 07 नवंबर को तथा उपाध्याय पू. श्री कस्तूरचंद जी म. का 02 नवंबर को दीक्षा दिवस है। इसके अलावा जैन दिवाकर पू. श्री चौथमल जी म., कर्नाटक गज केसरी पू. श्री गणेशीलाल जी म. 09 नवंबर, उपाध्याय पू. श्री विशाल मुनि जी म. का 02 नवंबर को एवम् प्रवर्तक पू. श्री प्रकाश मुनि जी म. 'निर्भय' का 03 नवंबर को जन्म दिवस आ रहा है। मैं सभी पूज्य गुरु भगवंतों को जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक वंदन, नमन करता हूँ।

बहुत ही दुःखद समाचार प्राप्त हुआ कि पू. श्री गणेशलाल जी म. सा. एवं महाश्रमण उप-प्रवर्तक पू. श्री विवेक मुनि जी म. सा. के सुशिष्य सेवाभावी पू. श्री संभव मुनि जी म. सा. ने दिनांक 12 अक्टूबर को संथारा ग्रहण किया जो 13 अक्टूबर को प्रातः 7:30 बजे पूर्ण हुआ और उन्होंने संथारा सहित देवलोक गमन किया।

वहीं दिनांक 13 अक्टूबर की रात्रि में युवाप्रज्ञ कवि डॉ. पू. श्री अमरेश मुनि जी म. 'निराला' का संथारा सहित देवलोक गमन हो गया है, ऐसी सूचना प्राप्त हुई। भगवान महावीर प्रभु से प्रार्थना है कि पूज्यवान आत्माओं को अपने चरणों में स्थान दें। मैं जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से दोनों पुण्य आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, जय महावीर।

अध्यक्षीय उद्गार

दीप पर्व की हार्दिक शुभ मंगलकामनायें ...

- **मोहनलाल चोपड़ा जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : chopdagroup@gmail.com

सम्माननीय बन्धुओं, बहनों

सादर जय जिनेन्द्र!

सबसे पहले मैं चतुर्विध संघ को भगवान महावीर निर्वाणोत्सव दीप पर्व पर हार्दिक मंगलकामनायें देता हूँ। कार्तिक कृष्णा अमावस्या को भगवान महावीर का निर्वाण एवं गौतम स्वामी को कैवल्य ज्ञान हुआ। पावापुरी के अंतिम वर्षावास में सहज रूप से भव्य जनों के बोध की दृष्टि से जिनवाणी की गंगा बहाते हुये प्रभु महावीर ने मुक्ति का वरण कर लिया। प्रभु के निर्वाण के पश्चात् देव-देवियों के द्वारा जगमगाते हुये विविधरत्नों का आलोक किया गया तभी से जैन परम्परा के अनुसार दीप पर्व मनाया जाता है। वैसे दीप पर्व के साथ मर्यादा पुरुषोत्तम राम, महात्मा बुद्ध, कर्मयोगी कृष्ण आदि भी कई महापुरुष जुड़े हुये हैं।

भगवान महावीर का सान्निध्य आज प्राप्त नहीं है, किन्तु उनके द्वारा व्यक्त की गई कल्याणी वाणी हमारा सौभाग्य है कि आज भी विद्यमान है। भगवान महावीर ने हजारों वर्ष पूर्व एक ऐसी सौम्य क्रांति का आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धरातल पर सूत्रपात किया जो वर्तमान में भी सर्वतोमुखी जागृति के प्रेरणा मात्र के रूप में आंदोलित कर रही है तथा भविष्य में भी युगों-युगों तक अपने मौलिक प्रभाव से जन चेतना को विशुद्ध आत्मदर्शन एवं सन्मार्ग, स्व-पर कल्याण मार्ग की ओर उन्मुख बनाती रहेगी।

हमे दीप पर्व के अवसर पर हम सेवा, साधना, स्वाध्याय, स्नेह, सद्भाव और संगठन, सहयोग, सह-अस्तित्व के ऐसे दीप जलायें जिससे राग-द्वेष के अंधकार को दूर किया जा सके।

यदि हम विषमता का परिहार करते हैं तो मुक्ति की मंजिल हमसे दूर नहीं रहेगी। महावीर सिद्ध हो गये। वे आज सशरीर नहीं हैं, किन्तु उनकी प्रेरणा को हम आत्मालोचन का विषय बनायें तो निश्चय ही महावीर और हमारे बीच की दूरी घटती चली जायेगी। हम आंखें बन्द करके नहीं चलें अपने विवेक को जागृत रखें, सुप्रवृत्तियों को पुष्ट करें।

आज परम पूज्य आचार्य भगवन पूज्य डॉ. शिवमुनि जी म. सा. के पावन सान्निध्य में आत्म-ध्यान करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मन को एक अलग ही प्रकार की आत्म-शांति का एहसास हुआ। मन जैसे अंदर से प्रकाशित और कोमल हो गया। धन्य हैं हमारे परम पूज्य आचार्यश्री जी जो वर्षों आत्म-ध्यान की ज्योति को जलाते हुए अपनी असीम भक्त श्रृंखला को भी इस अद्भुत संगम से रूबरू करा रहे हैं। मैं सभी से निवेदन करूंगा कि आप सब भी आत्म-ध्यान शिविर करके देखें, अंदर के दीप जल उठेंगे।

आचार्य पूज्य श्री कांशीराम जी म. तथा आचार्य पूज्य श्री सोहनलाल जी म., उपाध्याय पूज्य श्री कस्तूरचंद जी म. दीक्षा दिवस, जैन दिवाकर पूज्य श्री चौथमल जी म., कर्नाटक गजकेसरी पू. श्री गणेशीलाल जी म. उपाध्याय पूज्य श्री विशाल मुनि जी म. तथा प्रवर्तक पूज्य श्री प्रकाशमुनि जी म. 'निर्भय' के जन्म दिवस पर जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक वंदन नमन!

ऐसे समय में अचानक ही ऐसे दो दुःखद

समाचार प्राप्त हुए, जिनकी अपेक्षा किसी ने भी नहीं की होगी। औरंगाबाद के चिकलठाणा में चातुर्मासार्थ विराजित परम पूज्य महाश्रमण उप-प्रवर्तक पू. श्री विवेक मुनि जी म. सा. के सुशिष्य सेवाभावी पू. श्री संभव मुनि जी म. सा. ने दिनांक 12 अक्टूबर को संथारा व्रत ग्रहण किया। दिनांक 13 अक्टूबर को प्रातः 7:30 उन्होंने संथरा व्रत पूर्ण इस लोक विदा ले लिया और भगवान महावीर प्रभु के चरणों में चलें गए। हम इस दुःखद वेला से उभर भी नहीं पाए थे कि समाचार मिला कि श्रमण संघीय वरिष्ठ प्रवर्तक पूज्य श्री रूपमुनि जी म. सा. 'रजत' के सुशिष्य कविवर पूज्य डॉ. अमरेश मुनि जी म. 'निराला' ने भी दिनांक 13 अक्टूबर की रात्रि संथारा व्रत ग्रहण किया और रात्रि लगभग 10:30 बजे पूज्यवर भी हम सबको छोड़कर देवलोक की ओर गमन गमन कर गए।

हम सभी के समक्ष आई इस आकस्मिक दुःखद वेला में मैं सभी पूज्य गुरुजनों से सादर आग्रह करना चाहूंगा कि आप अपना आत्मबल सुदृढ़ बनाए रखें और अपने अध्यात्म पथ को उज्जवलता के साथ उत्कृष्ट भी बनाएं रखें। मैं अपनी ओर से तथा जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से आपके समक्ष हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूँ। मैं परम आराध्य प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वे पूज्य गुरुदेवों के आत्मतत्व को उनके सद्लक्ष्य की ओर लक्षित करें।

✧✧

वर्ष 2018 के कैलेण्डर संबंधी सूचना ...

सम्माननीय महानुभाव,

सादर जय जिनेन्द्र!

सर्वप्रथम आने वाले नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं! आप से निवेदन है कि श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के वर्ष 2018 (जनवरी से दिसंबर) के कैलेण्डर को जैन प्रकाश के प्रारूप में प्रकाशित करने का निर्णय किया गया है। पूर्व में वर्ष 2014 एवं 2017 में ऐसे ही कैलेण्डर बनवाये गये थे। ऐसे कैलेण्डर सदस्यों तक भेजना आसान होता है।

अतः जो सदस्य वर्ष 2018 के कैलेण्डर का सौजन्यकर्ता बनना चाहें उसे जैन कॉन्फ्रेंस में छः लाख रुपये जैन प्रकाश के खाते में जमा करवाना होगा। इसके लिए लिखित प्रार्थना पत्र दिनांक 25 नंवबर 2017 तक नई दिल्ली स्थित जैन कॉन्फ्रेंस में डाक या ई-मेल द्वारा भेजना होगा। एक से ज्यादा प्रार्थना पत्र आने पर उसका निर्णय ड्रॉ द्वारा किया जाएगा। प्रार्थना पत्र नहीं आने पर उसका अंतिम निर्णय राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्रीमान् मोहनलालजी चोपड़ा जैन करेंगे।

सौजन्यकर्ता का नाम कैलेण्डर में **'चेयरमैन कैलेण्डर प्रकाशन समिति'** के रूप में अंकित होगा। सौजन्यकर्ता को 7 फुल पेज तथा 7x21 से.मी. के 12 विज्ञापन (प्रत्येक माह हेतु) लेने का अधिकार होगा। सौजन्यकर्ता को उपरोक्त राशि 10 दिसम्बर 2017 तक केन्द्रीय कार्यालय में जमा करवाना अनिवार्य होगा। अधिक जानकारी के लिए श्री बालचंदजी खरवड़ जैन से 09821668548 से संपर्क कर सकते है। कैलेण्डर बनवाना एवं उसके वितरण की व्यवस्था जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की होगी।

विशेष : किसी भी तरह का विवाद उत्पन्न होने पर अंतिम निर्णय का अधिकार राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन को होगा।

"जयं चरे"

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पू. डॉ. शिवमुनि जी म.

आज विश्व में जितनी भी योग पद्धतियाँ प्रचलन में है। अधिकांश पतंजलि द्वारा रचित अष्टांग योग साधना का सार ग्रहण कर अपनाई गई है, लेकिन इन योग पद्धतियों में प्राण डालने का कार्य भगवान महावीर स्वामी की देशना **"श्री दशवैकालिक सूत्र"** में प्रयोगात्मक रूप से उपलब्ध होता है। इस सूत्र में साधक को **"होश पूर्ण"** जीवन जीने के लिए प्रेरित किया है। क्योंकि बिना होश के कोई भी ध्यान योग की क्रिया केवल द्रव्य साधना बनकर ही रह जाती है। वह अन्तर की गहराईयों में उतर कर अस्तित्व का साक्षात्कार नहीं करने देती है। जबकि आत्मसाक्षात्कार ही प्रत्येक साधक की साधना का चरम लक्ष्य है। **"श्री दशवैकालिक सूत्र" में वर्णित**

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयं आसे जयं सये।
जयं भुजंतो भासंतो पाव कम्मं न बंधई।।

उपरोक्त गाथा जैन दर्शन की गाथा है। जिसने अनेक मत संस्थापकों के जीवन चरित्र पर प्रभाव डाला तथा उन्होंने इसी विधि को अपनाकर उस परमतत्व का साक्षात्कार कर अपने अनुयायियों का मार्ग दर्शन किया। यह गाथा ध्यान का सार है। आत्माक्षात्कार का प्रथम और चरम बिन्दु है। कर्म निर्जरा का पावन मंत्र है। जीवन का संतुलन है। आत्म समृद्धि और वैभवता का प्रथम सोपान है।

भगवान महावीर स्वामी ने साधकों को आत्मबोध देते हुए कहा है कि- हे साधकों! मात्र सामयिक साधना के मध्य ही नहीं अहर्निश आपको इस मूल गाथा का स्मरण रखना चाहिये। यही वह रामबाण औषधि है, जो साधक को समस्त प्रकार के अनर्थ दण्डों से बचाकर संचित कर्मों का क्षयकर परम लक्ष्य की ओर अग्रसर करती है। जीवन में रूपान्तरण लाती है और मन, बुद्धि, चित्त एकाग्र होकर समग्रता प्राप्त करते है। इस गाथा का अर्थ बहुत ही रहस्यपूर्ण है। प्रत्येक शब्द भावों और ऊर्जाओं से परिपूर्ण है। प्रति क्षण जागरण का संदेश है यह गाथा। इसमें साधक अपना प्रत्येक क्षण पूर्ण 'होश' में गुजारता है।

जयं अर्थात् चेतनापूर्वक। चेतना का अभिप्राय होशपूर्ण! होशपूर्ण का अभिप्राय प्रमाद रहित। प्रमाद जहां समाप्त हो जाता है, वही सच्चा जागरण घटित होता है। अतः महावीर स्वामी कहते है कि हे साधक! होशपूर्ण चल, होशपूर्ण खड़े हो, होशपूर्ण बैठो, होशपूर्ण शयन करो, होशपूर्ण खाओं, होशपूर्ण बोलो, यदि आप जीवन की ये समस्त क्रियायें चेतनापूर्वक करते हो तो आपको कदापि पाप कर्मों का बंधन नहीं होगा।

अतः हे! आत्मन् प्रत्येक क्षण चेतनापूर्वक क्रिया कर। ऐसा करने से आत्म-ध्यान साधना को बहुत ही जल्दी उपलब्ध हो जायेगा। फिर समझो। **'आत्मसाक्षात्कार'** आपके बहुत निकट है। होशपूर्ण जीने से एक या दो भवों में ही आप अपने चरम लक्ष्य **'सिद्धालय'** को उपलब्ध कर सकते हो। आओ इसी क्षमा से **'जयं चरे'**। **'Let us perform carefully'**

✧✧

महामंत्र की महा आराधना

- पू. श्री उपेन्द्र मुनि जी म. 'शास्त्री'

मैं सकल भारतवर्ष की जैन समाज को, विशेषकर स्थानकवासी जैन समाज को आगाह करना चाहूंगा कि आत्म कल्याण की भावना से महामंत्र नवकार की महाआराधना प्रारंभ करें। वर्तमान की ज्वलंत समस्या का सुन्दर किन्तु दीर्घकालिक स्थायी समाधान हो जाएगा।

वर्तमान की ज्वलंत समस्या का जिक्र आने पर लोगों की जुबान से सुनने में आता है कि महाराज युवक स्थानकों में नहीं आते। मैं अपने श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज के युवाओं के पक्ष में हूँ। युवाओं में श्रद्धा नहीं है, ये बात मेरे गले नहीं उतरती और यदि लोगों को या संत-साध्वियों को ऐसा लगता है कि युवा स्थानक में नहीं आते या उनमें श्रद्धा नहीं है, तो इसके पीछे मुख्य दो कारण हो सकते हैः-

प्रथमः- कोई युवा स्थानक में आता है। संतों से धर्म चर्चा चाहता है या अपने जीवन की समस्याओं के समाधान की बात करना चाहता है और उस समय संत-साध्वी जी म. ठीक से उनके साथ बात न करके, किसी धनी मानी, लम्बे कुर्ते-पजामों वालों से बात करने में मशगूल रहते हैं और युवा इंतजार करते-करते थक कर चले जाते हैं। फिर उनका आने का मन नहीं करता। या बिना समझ के उन्हें नियम करवाते हैं, नियम नहीं लेने पर नास्तिकादि कहकर डांट देते हैं, तो युवा वर्ग पीछे हट जाता है। ऐसे में संत-साध्वियों को चाहिए कि उन्हें जबरदस्ती नियम न करवाकर उनकी शंकाओं का, जिज्ञाओं का सुन्दर सहज समाधान करें। जिससे उनकी श्रद्धा टिक और वे स्वेच्छा से धर्म स्थान में आने लग जाएं। ये सावधानी भी रखें कि उन्हें अन्य संत-साध्वी के पास जाने से मना न करें, केवल उन्हें संतदर्शन व सेवाभाव की प्रेरणा दें।

दूसराः- किसी भी कारण से जब कोई युवा एक बार स्थानक में जाना शुरू कर देता है तो कुछ समय उपरांत साधु-साध्वियों का विहार हो जाता है अर्थात् निरंतरता खत्म हो जाती है और शनैः शनै पूर्ववत् स्थिति आ जाती है। ऐसे में क्या करें? आलम्बन देखिये किसी भी मंदिर में एक बार जाना प्रारंभ हो जाता है तो यह क्रम बना रहता है, क्योंकि मंदिर में प्रतिमा का आलम्बन मिल जाता है। ठीक इसके विपरीत संत-साध्वियों के विहार करते ही स्थानक भवन निष्क्रिय हो जाते हैं। परिणाम स्वरूप आलम्बन खत्म हो जाता है और आना-जाना भी बंद हो जाता है। युवाओं की बात तो छोड़िए, बुजुर्ग श्रावक-श्राविका भी स्थानक भवन जाने का भाव नहीं रखते हैं।

मेरा समस्त भारतवर्ष की स्थानकवासी जैन समाज से, सभी श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि हर स्थानक में पर्युषणों के दिनों में नवकार मंत्र के जाप का कमरा निश्चित है। उसी जाप के कमरे में एक 'नवकार मंदिर' विराजमान कर दें, वहां कोई और तस्वीर न लगाई जाए और वहां पर कुछ भी सामग्री चढ़ाने पर सख्त प्रतिबंध हो (जिससे हमारी सामाजिक)। **व्यवस्थाएं प्रभावित न हों अर्थात् मूल परम्परा का विखंडन न हो।** नवकार महामंत्र पर बच्चे बूढ़े जवान सभी की गहरी श्रद्धा है। जो जाप नहीं भी करते, तो भी उनकी महामंत्र पर श्रद्धा है।

नवकार महामंत्र, नवकार मंदिर (जाप का कक्ष) में स्थापित करने पर समाज के भाई-बहिनों, जवानों को बुजुर्गों एवं नादानों को आने का सिर झुकाने का स्थाई आलम्बन मिल जाएगा।

(क्रमशः ...)

जैन

- पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म.

महत्वः जो जिनेन्द्र देव को मानता-पूजता है उनके गुणों का आदर करता है तथा उनके बतायें हुए मार्ग का अनुसरण करता है। वह वास्तव में जैन है और जैन कहलाने के लायक है। उसका आचार-विचार और व्यवहार ही ऐसा होता है कि उसे देखकर जन साधारण कह उठे क्या आप जैन हैं? शुद्ध व्यवहारी ही जैन है। जन से जैन बना मानव-राग द्वेष को कम करने का प्रयास करता है, नीति, प्रामणिकत, मार्गानुसारिता के पालन करने के बाद उसमें धर्म का पालन के भाव जागते हैं। यदि वह गृहस्थ धर्म का पालन करता है तो श्रावक के 21 गुण, 7 व्यसन का त्याग करते हुए, श्रावक के 12 व्रतों का पालन करता है और यदि साधु धर्म का पालन करता है, तो साधु के 27 गुणों को धारण करके 5 महाव्रत और 1व्रत रात्रि भोजन त्याग, पाँच समिति 3 गुप्ति की पालना करता है।

प्र. जैन की जीभ कैसी?

उ. पत्थर को पिघला दे जैसी।

प्र. जैन कैसे बोले?

उ. थोड़ा मीठा और मोती से महंगा।

प्र. जैन के हाथ कैसे हो?

उ. दान देते कुबेर के असंख्य भंडार खाली कर दें।

प्र. जैन के शब्द कैसे?

उ. सर्वत्र शांति फैलाने वाले।

प्र. जैन का समागम कैसा?

उ. अशांति किसी भी क्षण में शांत करे ऐसा।

प्र. जैन का निश्चय कैसा?

उ. इन्द्र सेभी न डिगाया जाने वाला।

प्र. जैन क्या करता है?

उ. सर्वत्र सत्य की ध्वजा फहराता है।

प्र. जैन के पांव कौन से?

उ. दृढ़ता और शांति।

प्र. जैन के हाथ कौन से?

उ. विनय और शौर्य।

प्र. जैन के कान कैसे?

उ. दुखी की आवाज सुनकर दुख दूर करने वाला।

प्र. जैन की आँखें कैसी?

उ. करुणा रस से जगत को वश में करने वाली।

प्र. जैन का शत्रु कौन?

उ. जैन के समस्त जीव मित्र हैं, शत्रु कोई नहीं।

प्र. कोई शत्रु बनकर आये तो?

उ. प्रेम से भेंट कर उसे मित्र बनाये।

प्र. जैन क्या ढूंढ़ता है?

उ. दूसरों के गुण और अपने दोष?

प्र. जैन को देखकर दूसरा क्या करे?

उ. मैं भी वैसा बनूं, ऐसी भावना भावे।

प्र. जैन की नाक कैसी?

उ. सत्य आचार-विचार की टेक में मेरू के समान ऊँची और अटल।

प्र. जैन लक्ष्मी का क्या करता है?

✧✧

दान देने से पहले अपने कमजोर भाई को सहारा दो, क्योंकि तुम्हारे दान की भगवान से ज्यादा तुम्हारे भाई को जरुरत है।

नवपद की आराधना

- साध्वी-रत्ना पू. डॉ. श्री प्रमोदकुंवर जी म.

चौबीसवें तीर्थंकर प्रभु महावीर के प्रथम गणधर गौतम स्वामी हुए। वे अट्ठाईस लब्धियों के धारक थे। उनके दाहिने पैर के अंगूठे में लब्धि थी। उस लब्धि के प्रभाव से एक कटोरी खीर को उन्होंने इतना विशाल रूप दिया कि पाँच-सौ से अधिक शिष्यों ने आहार कर लिया। ऐसे अनेक चमत्कार उनकी लब्धियों से हुए। वे अनेक नगर-ग्रामों में विचरण करते हुए राजगृही आए, जहाँ राजा श्रेणिक राज्य करते थे और वे भगवान महावीर के अनन्य उपासक थे। गौतम स्वामी के आगमन से उन्हें अत्यन्त हर्ष हुआ और वे सपरिवार आए और गौतम स्वामी के सदुपदेशों को ग्रहण किया।

गौतम स्वामी ने उपदेश दिया कि **'णमोकार'** महामंत्र की आराधना से रिद्धि-सिद्धि प्राप्त होती है। नवपद की महिमा राजा श्रेणिक ने सुनी। वे बोले, इसकी आराधना करने वाले ऐसे कौन पुण्यशाली एवं बलशाली आराधक हुए, उनका चरित्र मुझे सुनाएँ, अनुग्रहित करें। गौतम स्वामी ने राजा श्रेणिक की जिज्ञासा का समाधान करते हुए ऐतिहासिक वृतांत सुनाया।

अवसर्पिणी काल के चौथे आरे में चंपा नगरी अनुपम सुंदर थी। वह अत्यंत विशाल और धर्म प्रिय नगरी थी। राजा एवं प्रजा धर्म-आराधना, नीति-न्याय में आस्था रखते थे। एक समय नगरी के राजा सिंहरथ थे, जो प्रजा का पुत्रवत् पालन-पोषण करते थे। उनकी महारानी कमलप्रभा थीं, वह गज गामिनी थीं, रूप-लावण्यवती एवं अनिंद्य सुन्दरी थी। राजा-प्रजा के दिन अति हर्ष से व्यतीत हो रहे थे, धन-धान्य संपदा और नौकर-चाकर भरपूर थे, परन्तु कोई राजपुत्र न होने से रानी कमलप्रभा उदास रहती थीं।

पुण्य प्रबल योग से वर्षों बाद रानी की मनोकामना पूर्ण हुई, उसने एक सुन्दर स्वप्न देखा। नौ माह और साढ़े सात रात्रि व्यतीत होने के बाद एक बलशाली पुत्र का जन्म हुआ। वह वीर पराक्रमी था। एक सहस्त्र व्यक्तियों को एक साथ उठा ले, जितना उसमें बल था। राजा ने ज्योतिषाचार्य एवं निमितज्ञों को बुलाकर आदर-सत्कार दिया। दास-दासियों को पुरस्कृत किया और बंदीगृह से सभी कैदियों को मुक्त किया। मंगलगान गाए और संपूर्ण राजमहल और नगरी में वाद्ययंत्र की स्वर लहरियाँ गूंज उठी। हर्ष का पारावार न रहा। बालक का नाम श्रीपाल रखा।

सुख निरन्तर नहीं रहता है, चंपा नगरी के द्वार पर दुःख ने आ कर दस्तक दी। वह काल के रूप में आया और राजा सिंहरथ की अस्वस्थ अवस्था में मृत्यु हो गई। राजपुत्र पाँच वर्ष को होने से उसे राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया गया, परन्तु कमलप्रभा पर राज चलाने का दायित्व आ गया।

राजा सिंहरथ का छोटा भाई वीर दमन था। वह अति महत्वाकांक्षी और कुटिल था। राजा की मृत्यु से उसकी मनोकामना पूरी हो गई, जिसके लिए वह वर्षों से घात लगाए बैठा था। सत्ता-लिप्सा में परिवार और कुल की मर्यादा भूल गया। निजी विवेक खो बैठा। वह पाँच वर्ष के बालक का राज-तिलक देखकर मंत्री पर अतिक्रुद्ध हुआ और उसे अपने मार्ग से हटाने के लिए अधीर हो गया। राजपुत्र, मंत्री और राजमाता की हत्या करने के लिए उसने कुछ सुभटों को प्रलोभन देकर अपनी और मिला लिया।

मंत्री ने गुप्तचरों से वीरदमन की कुटिल चालों का पता लगा लिया और वस्तुस्थिति राजमाता के सम्मुख प्रकट कर दी। मध्यरात्रि में एक दो घड़ी रहते राजमाता और राजकुमार को सकुशल वहाँ से किसी अन्यत्र स्थान पर ले जाने के लिए समुचित व्यवस्था और रणनीति बनाई।

(क्रमशः ...)

मनोबल

- पू. साध्वी श्री युगल निधि-कृपा जी म.

राजा का एक हाथी था जिसे राजा बहुत प्रेम किया करता था। सारी प्रजा का भी वह प्रिय पात्र था। उसकी प्रिय पात्रता का कारण उसमें अनेक गुण थे। वह बुद्धिमान एवं स्वामी भक्त था। अपने जीवन में उसने बड़ यशोगाथा प्राप्त की थी। अनेक युद्धों में अपनी वीरता दिखाकर उसने राजा को विजयी बनाया था। अब वह हाथी धीरे-धीरे बूढ़ा हो गया था। उसका सारा शरीर शिथिल हो गया जिससे वह युद्ध में जाने लायक नहीं रहा।

वह एक दिन तालाब पर पानी पीने गया। तालाब में पानी कम होने से हाथी तालाब के मध्य में पहुंच गया। पानी के साथ तालाब के बीच में कीचड़ भी खूब थी। हाथी उस कीचड़ के दलदल में फंस गया। वह अपने शिथिल गात्र को कीचड़ से निकाल पाने में असमर्थ था। वह बहुत घबराया और जोर-जोर से चिंघाड़ने लगा। उसकी चिंघाड़ सुनकर सारे महावत दौड़े। उसकी दयनीय स्थिति को देखकर वे सोच में पड़े कि इतने विशालकाय हाथी को कैसे निकाला जाये। आखिर उन्होंने बड़े-बड़े भाले भौंके जिसकी चुभन से वह अपनी शक्ति को इकट्ठी करके बाहर निकल जाये, परन्तु उन भालों ने उसके शरीर को और भी पीड़ा पहुंचाई जिससे उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

जब यह समाचार राजमहल में राजा के कानों में पड़े वे भी शीघ्र गति से वहाँ पहुंचे। अपने प्रिय हाथी को ऐसे हाल में देखकर राजा के आँखों से आँसू बह निकले। कुछ सोचकर राजा ने कहा - बूढ़े महावत को बुलाया जाए। बूढ़े महावत ने आकर राजा को सलाह दी कि हाथी को बाहर निकालने का एक ही तरीका है कि बैंड लाओ, युद्ध का नगाड़ा बजाओं और सैनिकों की कतार इसके सामने खड़ी कर दो। राजा ने तुरन्त आदेश दिया कि युद्ध का नगाड़ा बजाया जाये और सैनिकों को अस्त्र-शस्त्र के साथ सुसज्जित किया जाए। कुछ ही घंटों में सारी तैयारियाँ हो गईं। जैसे ही नगाड़ा बजा और सैनिकों की लंबी कतार देखी। हाथी को एकदम से स्फुरणा हुई और वह एक ही छलांग में बाहर आ गया। नगाड़े की आवाज ने उसे भूला दिया कि बूढ़ा है, कमजोर है और कीचड़ में फंसा है। नगाड़े की आवाज ने उसके सुप्त मनोबल को जगा दिया। युद्ध के बाजे बज जाये और वह रूका रह जाये ऐसा कभी नहीं हुआ।

जीवन में मनोबल ही श्रेष्ठ है। जिसका मनोबल जागृत हो गया उसको दुनिया की कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती। जो मन से ही कमजोर है वह किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता।

✧✧

धर्म से प्राप्ति

धर्म से उत्तम कुल में जन्म, शरीर स्वस्थता, सौभाग्य, लम्बी-आयु, बल, निर्मल यश, विद्या और धन-संपत्तियां मिलती हैं। भयंकर जंगल में धर्म रक्षा करता है और तो क्या? मनुष्य जन्म में अच्छे प्रकार से किया हुआ धर्म स्वर्ग-अपवर्ग को देने वाला है। जैसे कीमती जेवर छिपाकर अन्दर तिजोरियों में रखा जाता है और कूड़ा-कर्कट बाहर फेंका जाता है, क्योंकि छिपी वस्तु की सुरक्षित रहती है तथा प्रकट की वस्तु समाप्त होती है। वैसे ही धर्म को गुप्त रखना चाहिए और पापों को सबके सामने दिखा देना चाहिए। जिससे पाप जीवन में समाप्त हो व धर्म सुरक्षित रहें। पर खेद है कि लोग पापों को छिपाने की कोशिश करते हैं और धर्म को दिखाने की।

- राजकुमार जैन

प्रत्येक व्यक्ति भगवान बन सकता है

- **अविनाश चोरडिया जैन,** राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

हर आदमी में जन्म से ही दैवी गुण भी होते हैं और दानवी अवगुण भी। ये गुण-अवगुण इस प्रकार अदृश्य होते हैं, जैसे तिल में तेल। घर के संस्कारों, वातावरण और अपने प्रयासों से इन गुण-दोषों का विकास होने लगता हैं यदि जन्म से मृत्यु तक मनुष्य को अपने गुणों के विकास के लिए उचित वातावरण मिलता है और वह स्वयं भी प्रयासरत रहता है, तो वह अपने उन दैवी गुणों का विकास करता हुआ पूर्णता को प्राप्त करता है- तब वह भगवान हो जाता है। भगवान बनने की क्षमता हरेक आदमी में होती है। कुछ लोग ईश्वर एंव भगवान को एक ही समझते हैं। लेकिन दोनों में बहुत फर्क है। ईश्वर निराकार, अजन्मा, अजर, अमर, स्त्राष्टा और पालनकर्ता है, जबकि भगवान तो मनुष्य के जीते-जागते उसके भौतिक शरीर में ही प्रकट होता है, उदाहरण के लिए बुद्ध व महावीर। 'भगवान' शब्द के अनेक अर्थ हैं, जैसे भागवान, भाग्यवान, भजनकर्ता, ऐश्वर्यवान, सुखभोक्ता, भाववान् आदि। 'भगवान' श्रेष्ठ शब्द है, उत्तम शब्द है, गौरवपूर्ण है। भगवान का अर्थ भग्न करने वाला भी होता है- जिस व्यक्ति ने राग, ईर्ष्या, मोह, द्वेष आदि पापमयी भावनाओं और सेक्स, इन्द्रियों की संतुष्टि और भोग की इच्छा आदि को खत्म कर दिया है, वह भगवान है। जिसने सभी प्रकार के दुखों एवं क्लेषों को भग्न कर दिया है, वह भी भगवान है।

जो व्यक्ति अकेले विचरण वाला, लौकिक और लोकोत्तर धर्मों के विभिन्न रूप को जानने वाला है, जो अर्थरस, धर्मरस व विमुक्तिरस को प्राप्त करने वाला है, वह भी भगवान है। जिसने क्रोध, लोभ, मोह व तृष्णाओं को भग्न करके उन पर विजय प्राप्त कर ली है, वह भगवान है। जो व्यक्ति अपने भव संस्कारों का अंत कर निर्वाण तक पहुंच गया है एवं जिसने काया शील, समाधि की साधना पूरी कर ली है, जो व्यक्ति मन, वचन, कर्म से पाप नहीं करता, जो प्राणिमात्रा की हत्या नहीं करता, चोरी नहीं करता, व्यभिचार नहीं करता, झूठ नहीं बोलता एवं किसी प्रकार का नशा नहीं करता और मन को हमेंशा पवित्रा रखते हुए धर्म का आचरण करता है, वह भगवान कहलाने योग्य है।

ऊपर दिए हुए गुणों के अलावा और भी ऐसे गुण हैं, जिनके पालन एवं सिद्धि से मनुष्य भगवान बनता है। ये गुण इस प्रकार हैं:

1. **दानः-** दान का अर्थ सिर्फ देना ही नहीं, बल्कि उदारता और निर्लोभता भी उसमें शामिल होना चाहिए।
2. **शीलः-** इसमें कायिक, वाचिक व मानसिक सभी प्रकार की क्रियाएं शामिल हैं। शील, नैतिकता व सदाचार है, जिसका पालन मनुष्य को भगवान बनाता है।
3. **नैष्कम्यः-** यानी दुनियावी चीजों से लगाव न रखना।
4. **प्रज्ञाः-** इसका अर्थ है सत्य का ज्ञान अर्थात जो जैसी वस्तु है, उसे उसी प्रकार जानना। प्रज्ञा से अविद्या, अंधश्रद्धा एवं पाखण्ड समाप्त हो जाते हैं और जीवन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा होता है।

5. **वीर्यः-** इसका अर्थ है कल्याण के मार्ग पर चलने के लिए बल, साहस व सतत श्रम का इस्तेमाल।
6. **सहनशीलताः-** यदि आप में सहनशीलता होगी, तभी आप लाभ-अलाभ, यश-अपयश, प्रशंसा-निन्दा व सुख-दुख सब में समान भाव रख सकेंगे।
7. **सत्यः-** सत्य के प्रतिनिष्ठा, उसकी स्वीकृति एवं उसका प्रतिपादन।
8. **अधिष्ठानः-** यानी दृढ़ संकल्प।
9. **मैत्रीः-** यानी संसार के सभी जीवों के प्रति मित्रा भाव। मैत्री के बिना करुणा और दया उत्पन्न नहीं हो पाती।
10. **उपेक्षाः-** इसका अर्थ है सांसारिक सुख-दुख के प्रति उदासीनता का भाव।

भगवान बनने के लिए उपरोक्त गुणों पर चलना जरूरी है। इन गुणों पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान कठिन होता है, पर असम्भव नहीं। असम्भव होता तो बुद्ध एवं महावीर कैसे भगवान बन पाते? जातक कथाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि तीतर, बटेर, तोता,, बया जैसे पक्षी और कुत्ता, बन्दर, हिरन, बैल, भैंसा, शेर, हाथी आदि भी उपरोक्त गुणों पर चलने की वजह से बोधिसत्व बन गए थे। उस युग में शुद्र, वैश्य, क्षत्रिय एवं ब्राह्मण सभी उपरोक्त गुणों पर चलने की वजह से बोधिसत्व बन गए थे। जब पशु-पक्षी सद्गुणों का पालन कर भगवान बन सकते हैं, तो मनुष्य क्यों नहीं बन सकता?

✧✧

मेरे गुरुदेव!

- अशोक खिंवसरा कोठारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

हे मेरे गुरुदेव भगवन शरण मुझको दीजिए। कृपा दृष्टि ड़ालकर मेरा सुधार कीजिए,
मैं कुपथ पर चल रहा हूं सुपथ मुझे दिखाइए। मुझ पतित को दे सहारा कर पकड़ उठाइए।।

मैं कर रहा वंदन-नमन अब प्रार्थना सुन लीजिए, भक्ति पथ पर बढ़ सकूं ऐसी कृपा अब कीजिए,
चित्त है चंचल मेरा प्रभुवर इसे संवारिए, धर्म धारण कर सकूं ऐसा विवेक जगाईए।।

कैसे चलूं, पथ विकट है, अब आप दर्शाइए, सन्मार्ग पर बढ़ता रहूं साहब मेरा बढ़ाइए,
आत्म-चिंतन करता रहूं वरदाना ऐसा दीजिए, दोष-दुर्गण दूर हों सब उपाय वैसा बताइए।।

जिसके ह्रदय में हो शुद्ध मेरा ऐसा मार्ग सुझाइए, कर कृपा अब तो प्रभु सुप्त को जगाइए,
अंतर प्रकट हो ज्ञान ज्योति, शक्ति ऐसी दीजिए, प्राप्त समकित कर सकूं ऐसी विधि बताइए।।

मित्यात्व से मुख मोड़ लूं सद्ज्ञान ऐसा दीजिए, अंतः बाह्य तप कर सकूंगा सद्बुद्धि वैसी बनाइए,
बन सकूं पर का सहारा ऐसे भाव जगाइए, डूबती नौका 'मगन' की भव से पार लगाइए।।

जैसी भावना वैसा फल

- शेर सिंह जैन, रोहिणी, नई दिल्ली

सायं काल का समय था। एक व्यक्ति अपने घर आया, जब उसने घर के चबूतरे पर कदम रखा तो उसका पांच गोबर में पड़ गया। समय की बात है, उस समय मुहूर्त अच्छा था। उसने अपनी पत्नी को आवाज दी और कहा - 'जरा पानी लाना, मैं भर गया हूँ। वह स्त्री आज्ञाकारिणी, सुशीला, सदाचारिणी और पति परायणा थी। उसने आवाज सुनी और पानी का लोटा लेकर दरवाजे पर आ गयी और पति के पाँवों को धो दिया। वह मुहूर्त अच्छा था और व्यक्ति के मुख से निकला - मैं भर गया हूं! ऐसी आवाज उस शुभ मुर्हुत में उसके अंतरंग से निकली कि उस दिन के बाद उसका घन धन-दौलत से भरना शुरू हो गया। वह भक्ति-परायण, हृदय का सरल और सत्यनिष्ठ व्यक्ति था। व्यापार और व्यवहार में प्रामाणिक व्यक्ति था। उसके बच्चे भी बड़े सुशील थे। भले ही उसके पास पूंजी थोड़ी थी किन्तु स्वर्ग जैसा सुख उसे उस छोटे से घर में ही मालूम हो रहा था।

एक व्यक्ति उसके पड़ौस में रहता था। पहले व्यक्ति के घर में सारी चीजें और परिवर्तन देखकर उस व्यक्ति ने पूछा क्या मामला है? पहले तो तेरे पास कुछ नहीं था, अब इतना कुछ हो गया? पहले व्यक्ति ने कहा मुझे मालूम नहीं। यह सब भगवान की कृपा है, गुरु की कृपा है और कुछ समय का फेर है। आगे बताया कि मैं एक दिन रात को आया था, अंधेरा हो रहा था। उस अंधेरे में मुझे कुछ नज़र नहीं आया। मैंने जब चबूतरे पर कदम रखा तो पांच गोबर में पड़ गया और मेरा पांव भर गया। मैंने अपनी पत्नी को आवाज़ दी और कहा- जरा पानी लाना, मैं भर गया हूँ। पता नहीं जिस दिन यह घटना हुई उसी दिन से मेरा घर धन-दौलत व ऐश्वर्य से भरने लग गया है।

यह बात सुनकर पड़ौसी सोचने लगा कि घर भरने कायह तो बहुत अच्छा तरीका है। इसी तरह तो घर बड़ी जल्दी भर जाता है। उसने अपने नौकर से कहा कि - आज शाम को मैं लेट आऊंगा और तुम थोड़ा सा गोबर लाकर घर के आगे ड़ाल देना। नौकर ने कहीं से गोबर लाकर ड़ाल दिया। जब वह सांयकाल घर आया तो जानबूझकर उसने अपना पांव गोबर में दे दिया।

यहां समझने की बात है कि भाग्य अनुकूल न हो तो आप चाहे किसी अच्छे मुहूर्त में घर पहुंचे तो भी वह ठीक नहीं होगा। न तो आप नियति को बदल सकते हैं और न रेख में मेख लगाने की आप में शक्ति है। हाँ शक्ति हो सकती है यदि आप साधक बन जाए, सच्चे धर्मात्मा, धर्मनिष्ठ और भक्ति परायण हो जायें। उस पड़ौसी ने सब कुछ बना लिया किन्तु जब आवाज देने लगा तो उसके मुंह से निकला कि 'मैं फंस गया हूँ'। साधन तो वैसे ही बना लिया, गोबर भी ड़लवा दिया, पैर भी उसमें रख लिया। बाहर से तो सारी चीजें वैसे ही बन गयी, लेकिन कर्म का चक्र तो अभी बदला नहीं। कर्म अभी अशुभ ही था, भाग्य तो अभी वैसा ही चल रह है। अतः जैसी उसकी भावना थी वैसे ही शब्द मुंह से निकले और वैसा ही उसे फल मिला। सारांश यह कि व्यक्ति को सदैव शुभ भावना करनी चाहिए। पता नहीं कौन से शुभ मुहुर्त में शुभ कर्म का उदय हो और शुभ भावना मिलने पर सब कुछ शुभ फलित होना प्रारंभ हो जाए। ✧✧

एकता के जीवन्त प्रतिमान जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमलजी

- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (तमिलनाडु)

युगांतकारी सन्त जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज का जीवन जिस प्रकार प्राणियों के अवध और अहिंसा के लिए समर्पित था, उसी प्रकार एकता और अनेकांत के लिए भी समर्पित था। एकता के लिए अनेकान्त को उन्होंने हर स्तर पर विवेकपूर्ण तरीके से जिया और उसे मूर्त रुप देने के हर संभव श्रेष्ठ प्रयास किये। उन्होंने अहिंसा के उत्कर्ष के लिए एकता को अपनाया और एकता को बलवान बनाने के लिए अहिंसा को माध्यम बनाया। वे अपने जीवन, मिशन और साधना में इस छोर से उस छोर तक रचनात्मक, सकारात्मक और प्रतिपल सक्रिय/अप्रमत्त थे। जहाँ तक एकता की बात है, उसे उन्होंने समय और सन्दर्भ के अनुसार अनेक स्तरों पर जिया, प्रचारित किया और समाज में सहिष्णुता, समरसता, सौहार्द और सद्भावनाओं को बढ़ाया। जैन दिवाकर जी के एकता के दर्षष्टिकोण को हम मुख्यतः तीन स्तरों में वर्गीकृत कर सकते हैं - मानवीय एकता, जैन एकता और स्थानकवासी परम्परा की एकता।

मानवीय एकताः- जैन दिवाकर जी ने मानवीय एकता को कम से कम चार स्तरों पर पुष्ट किया - मजहबी एकता, जातीय एकता, सामाजिक एकता, भाषाई एकता और हैसियत की एकता।

मजहबी एकताः- जैन दिवाकर जी ने जैन आगमों और अन्य जैन साहित्य के अलावा सभी धर्मों के ग्रंथों (गीता, रामायण, बौद्ध पिटक, कुरान, बाइबिल, गुलिस्तां आदि) का अध्ययन किया था। अपने प्रवचनों में वे सबके उद्धरण और उदाहरण देते थे। यही वजह थी कि सभी धर्मों के अनुयायी उनकी धर्मसभा में उपस्थित होते और अहिंसा व मानवता के पथ पर चलने का संकल्प करते थे।

जातीय एकताः- जैन दिवाकर जी ने जातिवाद का बहुत ही प्रभावशाली तरीके से प्रतिवाद किया था। उस जमाने में पथिक विश्राम करते समय अपने जूतों को सिरहाने रखकर सो जाया करते थे। जैन दिवाकरजी कहा करते थे कि क्या विडम्बना है कि लोग चर्मकार द्वारा मष्त पशुओं के चर्म से निर्मित चमड़े के जूते सिरहाने रखकर सो जाएंगे, लेकिन चर्मकार से घष्णा करेंगे। अनुभव और साधना की आँच में तपी उनकी साधारण बातों का लोगों पर असाधारण असर होता था। उनकी धर्मसभाओं में सभी जातियों के व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के प्रवचन सुनते थे।

सामाजिक एकताः- मेवाड़ क्षेत्र में बावन (५२) गाँवों का वर्षों पुराना झगड़ा था। उनकी प्रेरणा व पहल से वह झगड़ा सदा-सदा के लिए समाप्त हो गया। कितने ही स्थानों पर एक ही जाति, समाज, बिरादरी, वर्ग या क्षेत्र के लोगों में कटुता और मनमुटाव थे। जैन दिवाकरजी ने ऐसे अनेक झगड़े-टण्टे समाप्त करवाये। प्रेम और मैत्री के वे सच्चे सन्देशवाहक थे।

भाषाई एकताः- हिन्दी के अलावा प्राकृत, संस्कृत जैसी प्राचीन शास्त्रीय भाषाओं के वे जानकार थे। वे उर्दू, फारसी, मराठी, गुजराती आदि प्रादेशिक भाषाओं के भी जानकार थे। इनके अलावा स्थानीय और आँचलिक भाषाओं का उन्हें अच्छा ज्ञान था। तत्कालीन जनबोलियों व लोकभाषाओं के माध्यम से उन्होंने अहिंसा का सन्देश जन-जन तक और अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचाया। वे सही मायनों में 'लोक महर्षि' थे।

हैसियत की एकताः- यह बड़ा ही महत्वपूर्ण बिन्दु है, जिसे जैन दिवाकर जी ने अपने धर्म प्रचार अभियान का हिस्सा बनाया। सब व्यक्तियों की क्षमता, योग्यता और स्थिति समान नहीं हो सकती है। लेकिन अहिंसा, सदाचार और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा सर्वत्र जरूरी है। जैन दिवाकरजी ने राजा और प्रजा, मालिक और नौकर, विद्वान और अल्पज्ञ, शहरी और ग्रामीण, सबको किसी न किसी रुप में प्रभावित किया। एक ओर

सद्गृहस्थ उनसे शीलव्रत अंगीकार करते थे तो दूसरी ओर वेश्याएँ सदा-सदा के लिए अपना हीन कर्म छोड़ देती थी। भगवान महावीर ने जिस समत्व, समदर्शिता और सम्यग्दर्शिता की देशना प्रदान की, उसे जैन दिवाकरजी ने व्यावहारिक और प्रायोगिक रूप दिया। 'तीर्थंकर' के सम्पादक साहित्यकार डॉ. नेमीचन्द जैन के शब्दों में- "हमारी समझ में शताब्दियों बाद कोई ऐसा सम्पूर्ण पुरुष क्षितिज पर आया, जिसने राव-रंक, अमीर-गरीब, किसान-मजदूर, विकसित-अविकसित, साक्षर-निरक्षर, सभी को प्रभावित किया, सबके प्रति एक अभूतपूर्व समभाव, ममभाव रखा।" मानवीय गरिमा और एकता का यह स्वरूप सचमुच अद्भुत था। यही वजह थी कि उन्हें जन-जन के दिवाकर भी कहा जाता है।

जैन एकता:- जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी भगवान महावीर के शासन के एक प्रभावक श्रमण थे। जिनशासन कैसे शक्तिशाली बने, इस विचार को साकार करने के लिए उन्होंने अनेक क्रान्तधर्मी अभिनव कदम उठाये। 1950 में उनका अन्तिम वर्षावास कोटा में हुआ। वहाँ उन्होंने जैन एकता की दिशा में विशेष पहल की। प्रत्येक रविवार को कोटा में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक आचार्य आनन्दसागर जी और दिगम्बर आचार्य सूर्यसागर जी के साथ एक मंच पर बैठते और तीनों के सामूहिक प्रवचन होते थे। आज से बासठ साल पहले यह सफल प्रयोग बहुत कठिन था। लेकिन जैन दिवाकर जी की प्रभावशीलता और दीर्घदर्शिता के सुपरिणामस्वरुप वह सहज व आसान हो गया था। कोटा में जैन धर्म की तीन सम्प्रदायों के मुनिवरों द्वारा एक ही मंच से प्रवचन की गंगा बहती देख तेरापंथी श्रावक दानवीर सोहनलाल दुगड़ (कलकत्ता) बहुत प्रभावित हुए और प्रवचन समाप्ति पर बोले, "महाराजश्री! आपके प्रयास से तीन दिशाओं का मधुर मिलन तो हो गया, पर अभी एक चौथी दिशा और बाकी है, अतः आपका आगामी चातुर्मास जयपुर हो और इस दिशा का मधुर मिलन भी वहाँ हो, जिससे समाज की चारों ही सम्प्रदायों में भाईचारे की सरिता प्रवाहित हो जाए।" उल्लेखनीय है कि सन् १९५० में कोटा में तेरापंथी सन्तों का वर्षावास नहीं होने से सामूहिक प्रवचन में उनकी सहभागिता नहीं हो सकी थी। जैन दिवाकर जी तो वैसा ही चाहते थे, लेकिन उनके देवलोकगमन से दुगड़ जी की भावना जैन दिवाकर जी की मौजूदगी में मूर्त रूप नहीं ले सकी।

स्थानकवासी एकता:- जीवन और समाज के अनेकांत को गहराई से समझने वाले दिवाकर जी ने एकता को हर स्तर पर लाने के प्रयत्न किये। जैन धर्म की जिस स्थानकवासी परम्परा में उन्होंने अपने श्रमणत्व को नये अर्थ और आयाम दिये, उस परम्परा में भी एकता का अभाव देखकर उनका मन खिन्न हो जाता था। इस सन्दर्भ में 'जैन दिवाकर ज्योतिपुंज' के सम्पादक श्री विपिन जारोली की पुस्तक "मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठापक जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज" के आधार पर यहाँ विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। विपिनजी लिखते हैं -

इस दिशा में वि. सं. 2005 में ब्यावर में स्थानकवासी परम्परा की पाँच सम्प्रदायों का एक संगठन "श्री वीर वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ" के गठन का निर्णय हुआ तो दिवाकर जी ने अपनी सम्प्रदाय की ओर से कुछ संतों के साथ उपाध्याय पू. श्री प्यारचन्दजी म. को सन्त सम्मेलन में प्रतिनिधि के रुप में यह संकेत देकर भेजा कि- "संघ के कल्याण के लिए अपनी सम्प्रदाय की सभी पदवियों का त्याग कर देना। संगठन के लिए यदि सभी मुनिवर एकमत हो जाएँ तो आचार्य अपने सन्तों में से किसी को मत बनाना। ऋषि सम्प्रदाय के आचार्य पू. श्री आनंदऋषिजी म. को आचार्य स्वीकार कर लेना।" वैसा ही हुआ। संघ का गठन हुआ और आचार्य पद पर पू. श्री आनंदऋषिजी म. को प्रतिष्ठित किया गया। संगठन के लिए अपनी सम्प्रदाय की सभी पदवियों का त्याग कर देने के प्रसंग को लेकर एक दिन एक शिष्य ने जैन दिवाकर जी से पूछा, 'हमारी सम्प्रदाय की सभी पदवियाँ समर्पित करके हमें क्या मिला ?' इस पर जैन दिवाकर जी ने जवाब दिया था, 'आज का बीज कल का वटवृक्ष

बनेगा, संघ व्यक्ति से बड़ा होता है। संघ हित के लिए सर्वस्व समर्पण कर देना चाहिये। एकता के प्रयत्नों मधुर फल जिस दिन आएगा, तब देखना।' जैन दिवाकर जी तथा अन्य एकता व संगठन के पक्षधरों की भावना अभिवर्द्धित हुई और वि. सं. 2009 में सादड़ी (मारवाड़) में अधिकांश स्थानकवासी सम्प्रदायों को मिलाकर श्रमणसंघ बना।

इस सन्दर्भ में जैन दिवाकर जी को 'जैन समाज के गांधी' कहा जा सकता है। जैसे गांधी कोई राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री नहीं बने, लेकिन उनका व्यक्तित्व-कृतित्व ऐसे पदों से कई गुना ऊपर है। आधिकारिक रूप से जैन दिवाकर जी आचार्य, उपाध्याय जैसे पद पर भले ही आसीन नहीं हुए हो, लेकिन उनका व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावक और कृतित्व कालजयी है। राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया के अनुसार जो साधु-साध्वी पद/उपाधि के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाते हैं, उन्हें जैन दिवाकर चौथमलजी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिये। जैन दिवाकरजी के बारे में विपिन जारोली के छन्द के साथ मैं इस लेख को विराम देता हूँ-

साधुमार्ग मान्यता के, श्रमणों में कितने ही,
फिरकों को देखकर, क्षोभ मन आया था।
संयम में रह रत, रहें सभी एक मत,
बने ऐसा संगठन भाव गहराया था।
दिगम्बर-श्वेताम्बर, आचार्यों के संग कोटा,
एक मंच बैठ जिनवाणी को सुनाया था।
उसी भाव अनुरुप आज का 'श्रमण संघ',
हुआ था गठित, जो कि सब मन भाया था।

साधर्मी वात्सल्य जगाएँ

- उपाध्याय श्री कस्तूरचंदजी महाराज

प्रसिद्ध वक्ता जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज का सम्पूर्ण जीवन एक पूर्ण विकसित महकते गुलाब की भाँति था। अपने जीवनकाल में तो वे शीतल, सुरभित मलय की भाँति सारे देश में विचरते हुए अहिंसा, सत्य, प्रेम की धारा प्रवाहित करते ही रहे, पर स्वर्गवासी बनने के बाद भी आज उनके उच्चादर्श, सदुपदेश जन-जन के जीवन को मंगलमय बनाने में लगे हुए हैं।

श्री जैन दिवाकरजी महाराज के जीवन का उद्देश्य था - श्रमण संस्कषति की श्रेश्ठता को स्थापित करते हुए धर्म-प्रचार करना, ऊँच-नीच, छोटे-बड़े के भेदभाव को मिटाना तथा जातिगत बन्धनों की जंजीरों में जकड़े समाज को व्यापक परिवेश देकर उन्हें यह समझाना कि कोई भी व्यक्ति मानव पहले है, बाद में जैन, हिन्दू, मुसलमान या हरिजन। सबसे बड़ा धर्म है - मानवमात्र की सेवा करना, दीन-दुःखियों की सहायता करना, गिरते को ऊँचा उठाना। अपने इस पावन उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे जीवनभर सतत कार्य करते रहे और सफल रहे। यही कारण है कि उनके मानवता हितैशी कार्यों की वजह से वे आज मात्र जैन समुदाय में ही नहीं, वरन् समस्त वर्गों में पूजनीय-वन्दनीय व श्रद्धा के पात्र हैं।

क्या हम यह अनुभव करते हैं कि श्री जैन दिवाकर जी महाराज ने जिस समाज-रचना की कल्पना की थी, उसे हम यथार्थता प्रदान कर चुके हैं ? साम्प्रदायिक भावना से ऊपर उठकर सामाजिक उत्थान के साथ-साथ हमने दीन-दुःखी साधर्मी, भाई-बहनों के लिए क्या अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया है ? इस मनीशी को अपने हृदयगत श्रद्धा सुमन अर्पित करने की दिशा में पहला कदम होना चाहिए - अपने दिलों में साधर्मी-वात्सल्य भाव को जागष्त करना, एक भेदभाव-मुक्त सुन्दर, आनन्दमय समाज का निर्माण करने के लिए प्रयास करना। यदि हम इस दिशा में पैर बढ़ायेंगे, तभी श्री जैन दिवाकरजी महाराज को अपनी वास्तविक श्रद्धांजलि समर्पित करेंगे।

प्रस्तुति : श्राविकारत्न उमरावदेवी धींग, बम्बोरा (राजस्थान)

अप्प दीपो भव

- सुमेर सिंह मुणोत, बैंगलोर (कर्नाटक)

दीपावली का पर्व भारतीय पर्वों का सरताज है। भारतीय संस्कृति में दीपावली का विशेष महत्त्व है। यह पर्व ज्ञान-ज्योति का सुखद प्रसंग है, मैत्री भाव का अटूट बंधन है, तेल-बाती-तीली का त्रिवेणी संगम है। अपने आप में खुशियों का भंडार है। यह पर्व अमावस्या की कालिमा को विलिनकर पूर्णमासी के उजाले की आरे बढ़ने का संदेश देता है। यह त्यौहार कहता है कि ये मनुष्य अपने मन की कालिमा को दूर कर अपने जीवन को सार्थक बना लें अन्यथा अंधेरी गलियों में भटक रहा है और भटकता ही रह जायेगा। दीपावली के दिन हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि 'तमसो मा जयातिर्गमय मृत्योर्मामृत गमय' अर्थात् हे परमेश्व हमें अंधकार से उजाले की ओर ले चलो और मृत्यु से अमरत्व प्रदान करो।

किसी त्यौहार को मनाने के लिए नये कपड़े पहनना, मेवा-मिष्ठान का भोग लगाना, बाहरी साफ-सफाई करना, खरीददारी करना, नफा-नुकसान ा आकंड़ा मिलाना ही नहीं होता है। अगर हम गहराई से चिंतन-मनन करेंगे तो पायेंगे कि प्रत्येक त्यौहार मनाने के पीछे विभिन्न धार्मिक भावनाएँ जुड़ी हैं, मार्मिक उद्देश्य छिपे हैं। इनमें हित शिक्षाओं का समावेश है, अपनत्व का आभास है, प्रेम व वात्सल्य का भाव है। त्यौहार मनाने के तौर-तरीके अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन मकसद है अपने जीवन की ऊर्जा को ऊंचा उठाते हुए वास्तविकता ज्योति की प्राप्ति करना। दीपावली का त्यौहार हमारे जीवन में मिठास भरता है, ऊर्जा पैदा करता है, ज्ञान-प्रकाश फैलाता है। यह त्यौहाकर तेल-बाती-तीली और दीये का अद्भुत संगम हैं दीया चाहे मिट्टी, पीतल, ताम्बा, स्टील चाँदी या अन्य किसी भी धातु का हो, हमें अनेक हित-शिक्षाएँ प्रदान करता है बिना सी भेदभाव के अंधकार मिटाता है। मिट्टी के दीये से उजाला कम और चाँदी के दीये से उजाला ज्यादा ऐसा नहीं होता, बस एक ही लक्ष्य है अंधकर मिटाना है। दीपावली पर्व परस्पर प्रेम-भाव का अहसास कराता है। दिया-तेल-बाती और तीली का गठजोड़ हमें शिक्षा देता है कि भूमंडल में सभी से मैत्री भाव रखो, सद्भावना रखो, आत्मियता दर्शाओं। हमारा जीवन भी एक त्रिवेणी संगम है, जिसमें ज्ञान दीपक का, तेल परिश्रम का और बाती स्नेह का काम करती है। दीये में बिना तेल की बाती जलाएंगे तो बाती जलकर राख हो जायेगी, खुद जलेगी और दूसरों को भी जलाएगी। इससे हमें अटूट प्रेम की शिक्षा मिलती है। आपसी प्रेमभाव को कैसे बनाए रखना यह हमें सीखने को मिलता है। दीये में तेल-बाती-तीली का समागम होता तभी ज्योत प्रज्जवलित होगी। अगर किसी वस्तु से ढ़क देंगे या अपना हाथ खेंगे तो हाथ जलेगा और रोशनी की जगह कालिमा छा जायेगी तथा पूर्ण वातावरण दूषित होगा। कालिमा को दूर करने के लिए हाथ या बर्तन का हटाना जरुरी है। उसी तरह अपने मन की कालिमा को दूर करने के लिए, अपने अंदर छिपे राग-द्वेष को बाहर निकाल कर स्वच्छ व सुन्दर वातावरण को जन्म देना है।

दीये के टूटने से तेल बिखरता है, बाती स्वयं बुझ जाती है, हिन्दू मान्र्ूता के अनुसरार इसे अपशकुन भी मानते हैं। इसी तरह का झटका हमारे जीवन का अंत कर देता है। परिवार को झकझोर कर अपंग बना देता है। अतः दीय हमें सदैव सचेत रहने का संदेश देता है कि जीवन की ड़ोर को कभी टूटने मत देना। एक दीपक में सैंकड़ों दीपों को प्रज्जवति करने की क्षमता है छोटा होते हुए भी विशालता का प्रतीक है। अपने जीवन में खुशियां भरकर दूसरों के जीवन में भी खुशियां भरो दीप स्वयं बनो, प्रकाश फैलाओ।

अपने व्यक्तित्व कृतित्व को ऐसे निखारें

- डॉ. प्रेमसुख सुराणा जैन, अजमेर (राजस्थान)

अपना जीवन ईश्वर को समर्पित कर दें। जो कुछ काम करें, प्रभु का समझकर करें। यदि ईश्वर प्रार्थना में थोड़ा समय लगाना लाभकर है तो सोचिए सारा समय प्रभु के हेतु लगाना कितना लाभकर होगा।

इन 11 सूत्रों से अपना जीवन निखर सकता है।

1. ब्रह्ममुहुर्त में उठें-प्रातः चार बजे स्वाधयाय करें। सामायिक, पूजा-पाठ आदि करें। 2. अल्पाहारी बनें। 3. आचरण शुद्ध रखें। 4. सद्गुणी बनें। 5. आत्म विश्वासी बनें। 6. समय का सदुपयोग करें। 7. दूसरों के प्रति स्नेह सहानुभूति रखें। 8. अपनी त्रुटि को स्वीकार करें। 9. कुव्यसनों को त्यागें 10. सादा जीवन उच्च विचार रखें। 11. दृढ़ संकल्पी बनें।

'सूर्योदय के समय सोकर समय बर्बाद करने वाले को, चाहे वह चक्रधारी विष्णु ही क्यों ने हो, लक्ष्मी, विद्या, बुद्धि सब छोड़ जाते है। वह व्यक्ति एक न एक दिन दरिद्र हो जाता है।'

संसार के प्रायः सभी उच्च कोटि के साधक, संत वर्ग सतीवृंद बड़े-बड़े विद्वान और दीर्घजीवि मनुष्य सूर्योदय से पूर्व ब्रह्ममुहुर्त में उठकर शुभ चिंतन के अभ्यस्त रहे हैं। बाल सूर्य की परम स्वाथ्यकारी किरणों को शरीर पर लेने से, प्रतिदिन सूर्यनारायण को अर्ध्य देने से, दर्शन करने से बड़ा पुण्य लाभ होता है। स्वास्थ्य और वीर्य बढ़ता है। नेत्र-ज्योति उद्दीप्त होती है। मन प्रसन्न रहता है।

ब्राह्मो मुहुर्ते बुध्येत स्वास्थ्यरक्षार्थ मानुषः।
तत्र दुःखस्य शान्त्यर्थं स्मरेद्धि मधुसूदनम्।।

अर्थात् - स्वास्थ्य बढ़ाने के लिए केवल ब्रह्ममुहुर्त ही मनुष्य के लिये अति उपकारी है। स्वस्थ्य मनुष्य को चाहिए कि वह अपने स्वास्थ्य, यौवन, वीर्य, बुद्धि आदि की रक्षा के लिये ब्रह्ममुहुर्त से सोकर उठ जायं और दुःख-नाश तथा प्रसन्नता, लाभ, शांति के लिये भगवान का भजन, पूजन, कीर्तन, पूजा-पाठ स्वाध्याय सामायिक संवर आदि से दिन का प्रारंभ करें।

यदि आप प्रभु की सेवा में कुछ पत्र पुष्प चढ़ाना आवश्यक समझते हैं तो अपनी सारी संपदा उनके चरणों में रखना किना सुखकर है। यदि पवित्रता, ईमानदारी और बुद्धिमानी की किसी क्षण भी जरुरत है तो उनसे हर समय काम लेना आवश्यक है।

जीवन का इससे अच्छा और क्या उपयोग हो सकता है कि इसका प्रत्येक क्षण प्रभु की सेवा में लगे। प्रत्येक कार्य, विचार और हमारा प्रत्येक शब्द उसकी सेवा के लिए हो। यह आप आज से ही शुरू कर सकते हैं। इसका उत्तर ईश्वर आपसे चाहता है। इस पर विचार कीजिए। न भविष्य के लिये बड़े-बड़े मंसूबे बांधिए और न व्यर्थ की चिंता में ही पड़िए। सब कुछ ईश्वरार्पण करके उसकी आज्ञानुसार उसकी इच्छापूर्ति के लिए कीजिए। इससे आपके जीवन मे आनंद, शांति, मधुरता और विश्वास का प्रवेश होगा। आपका जीवन महान हो, इसके लिए आवश्यक है कि आपके पास साहस का भंडार हो। जब आपको विश्वास हो जायेगा कि आपकी शक्ति अनंत है, तब अपनी विशालता के कारण बड़े-बड़े आपको साधारण जान पड़ेंगे। आप बड़े-बड़े काम कर सकते है। इसमे कोई संदेह न करें। पर इसके लिए यह आवश्यक है कि आप अपना ध्येय ऊंचा रखकर लगन के साथ बुद्धिमता पूर्वक काम करें। दुनिया के सभी महान व्यक्तियों ने ईमानदारी और मेहनत से काम किया है। उन्होंने कार्य के फल को

उसके फैलाव से नहीं, उसकी किस्म के हिसाब से तौला है। यदि जीवन का ध्येय न हो, कार्य और आकांक्षऐं न हों, तो जीवन सदा चलने वाली चक्की बनकर रह जाता है। आलस्य और शिथिलता जीवन में लापरवाही औ असंतोष पैदा करते हैं।

यदि खुश रहना चाहते हैं तो काम कीजिए। काम से मिलने वाला सबसे बड़ा लाभ है। यह विश्वास कि आपके द्वारा काम ठीक ढंग से किया गया है, अच्छे कार्यों की कमी नहीं है और यदि आपकी काम करने की इच्छा है, तो आपके लिए हर अच्छे काम का दरवाजा खुला है।

चाहने मात्र से न अच्छा स्वास्थ्य मिल सकता है, न उसे बनाये रखा जा सकता है। स्वास्थ्य से प्राप्त होने वाले सौंदर्य और शक्ति को समझिए और फिर अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील होईए। न किसी के प्रति द्वेष रखिए न अपनी असफलताओं के संबंध में बहुत विचार ही करते रहिए। अपने को उन्नत बनाने और लोगों से मैत्री स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील होईए। अपने जीवन को प्रकृति के नियमों के अनुकूल चलाईए। अपनी खुशी में दूसरों को हिस्सेदार बनाइए। इस विधि से आपकी खुशी दूनी हो जाएगी। संसार को कुछ अच्छा बनाने की कोशिश करें। ऐसा करना आपका कर्त्तव्य है, क्योंकि आप इस संसार में अपने स्वभाव को मृदु बनायें। मीठे बोल और सहानुभूतिपूर्ण कार्य मनुष्य के अंतर का परिमार्जन करते हैं, जिसकी छटा उसके शरीर पर दस गुनी होकर दिखती है।

कुछ जल्दी-जल्दी करके सफलता प्राप्त करने की कोशिश न कीजिए। जो जल्दी में किया गया है, उसका परिणाम कभी संतोषजनक नहीं होता। सोने जाने के पहले अपने से प्रश्न कीजिए। क्या आज मेरा व्यवहार सबके प्रति मृदु एवं शिष्टातापूर्ण था? आज मैंने किसके साथ अपनी मैत्री के बंधन को अधिक मजबूत बनाया? एक बार में एक काम कीजिए। इस प्रकार काम आपके वश में रहेंगे। कार्य करते समय न जल्दी मचाइए, न घबराईए और न चिंतित होईए। आवश्यक और अनावश्यक के अंतर को समझिए और अपने उद्देश्य को स्पष्ट समझिए और फिर उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होईए। आप जिस लाभ के लिये कार्य कर रहे हैं यदि आप उसकी बात अपने पड़ौसी से कर सकें तभी वह कार्य ठीक कहा जा सकता है। ✧✧

।।आचारांग सूत्र का सार।।

भगवान महावीर ने दीक्षा से मोक्ष तक साधना की, यह आचाराग सूत्र में कहा गया है। भगवान को 12 1/2 वर्ष तक सबसे ज्यादा उपसर्ग आये। भगवान के जीवन में कितने दुःख आये, हमारे जीवन में बहुत कम दुःख आते हैं। इस परिस्थ्तिति में मैं कैसे रहूँ। मैंने क्या किया? जिससे मेरी यह स्थिति है, आचा रांग सूत्र पूछता है।

मनकी पसप्रता जिसकी रहती वही हमेशा प्रसन्न समाधानी रह सकता है। परिस्थिति को स्वीकार नहीं कर सकते, इसलिंये हम दुःखी रहते हैं। जो जैसा मिला उसे स्वीकार करो। हमें कोउनी दुःखी नहीं कर सकता। केवल मेरे कर्म ही मुझे सुख-दुःख देते हैं। जैसा मिला, उसमें खुश रहो, यही आचारांग सूत्र की सीख है।

- राणूलाल माणिकचंद कोचर

संयम पथ के सजग पथिक गुरुदेव मेवाड़ प्र. पू. श्री मदनमुनि जी म.

- डॉ. रतनलाल मारू, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

राजस्थान का मेवाड़ प्रांत वीर एवं वीरांगनाओं की पावन धरा है जहां के देश भक्त महाराणा प्रताप, दानवीर भामाशाह, त्याग एवं बलिदान की साक्षात प्रतिमा पन्नाधाय, भक्तिमति मीरा की कीर्ति सभी तरफ पायी जाती है। यह प्रदेश जैन आचार्यों की तपोभूमि एंव कर्मभूमि होने के साथ जैन संस्कृति का प्राचीन क्षेत्र भी रहा है। ऐसे प्रदेश में परम, श्रद्धेय महाश्रमण पू.प्रवर्तक श्री मदन मुनि जी म.सा. पथिक का जन्म वि. सं. 1987 फाल्गुन शु. 5 रविवार 22 फरवरी 1931 को लावा सरदारगढ़ (जिला-राजसमन्द) मेवाड़ प्रांत में हुआ।

आपने नारी रत्न मातु श्री सुंदरबाई की कुक्षी से श्रावक रत्न पिताश्री गंभीरमल जी हींगड के घर आंगन में जन्म लिया। नाम था लक्ष्मीलाल। माता श्री का आकस्मिक निधन हो गया। मिडिल की परीक्षा पास करके थोडी अवधि के लिए निष्ठापूर्वक राजकीय सेवा की। घर वालों को शादी करने के लिए मना कर दिया। लक्ष्मीलाल सोचा करते क्या मानव का यही कर्तव्य है कि पैदा हो, बड़े होकर अपना और अपने परिवार का भरण पोषण करे और जीवन समाप्त हो जाये। लक्ष्मीलाल का मन इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। उनमें इतनी समझ तो थी कि मानवभव सार्थक करने के लिए कुछ किया जा सकता है। यह जीवन तो पानी के बुलबुले के समान क्षणभंगुर है। परन्तु लक्ष्मीलाल को इसके आगे मार्ग दिखाई नहीं दे रहा था। एकाएक उनके मानस पटल पर यह विचार उत्पन्न हुआ कि यदि आसपास कोई संत-सतियाँ पधारे तो उनकी सेवा में जाकर अपनी जिज्ञासा का समाधान करें।

इसी बीच महासती पू. श्री रुपकंवर जी म. व पू. श्री प्रेमवती जी म. आदि ठाणा का वि.स. 2009 का चातुर्मास लावा सरदारगढ़ हुआ। और उनके पावन सान्निध्य में आने से लक्ष्मीलाल के मन में वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया। और मेवाड़ भूषण श्री मोतीलाल जी म. ने उनकी वैराग्य की कड़ी परीक्षा लेकर आनंद के साथ मोलेला गांव में वि.स. 2010 कार्तिक कृष्ण 9 शनिवार 31 अक्टूबर 1953 को दीक्षा प्रदान की। पूज्य मोतीगुरु ने लक्ष्मीलाल से बने नवदीक्षित श्री मदनमुनि को पू. श्री अम्बालाल जी म.का शिष्य घोषित किया। नवदीक्षित श्री मदनमुनि जी ने गुरु सेवा में तल्लीन रहते हुए भी कई भाषाओं- राजस्थानी, मेवाड़ी, हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत का अध्ययन कर जैन सिद्धांत शास्त्री तक की परीक्षा पास की। आप का प्रथम चातुर्मास वि. स.2010 में मोलेला हुआ और वर्तमान वि.स. 2074 का चातुर्मास धर्म ध्यान के साथ शक्ति-भक्ति की ऐतिहासिक नगरी चित्तौड़गढ़ के ओसवाल भवन-खातरमहल में भव्यता के साथ गतिमान है। इसी बीच आपने मेवाड़, मारवाड़, मालवा, गुजरात, महाराष्ट्र आदि क्षेत्रों को अपने चरणों से पावन किया है।

महाश्रमण प्रवर्तक पू. श्री मदनमुनि म. एक उच्च कोटि के साधक तो है ही, कुशल प्रवर्चनकार एवं साहित्यकार भी हैं। अपने साहित्य के माध्यम से आपने अनुयाईयों को सदैव सत्कर्म करने और धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है। आपने निबन्ध साहित्य में- उद्बोधन, आत्मा के संग जीवन के रंग, चिंतन के चरण, ज्योतिकण, ज्ञान माधुरी, जीवन कण, प्रकाश की पगडंडीया। कथा साहित्य में मुक्ति का राही, सपनों की सौगात, कथा कुसुम भाग 1 से 3 तक। नाट्य साहित्य

में पर्दा उठ गया, अमर प्रीत, निर्धूम ज्योति, अंजना सती, भागो वासना के भूत, शील सौर्य। काव्य साहित्य में अर्जुन माली और सम्पादित साहित्य में रसिक मूनि स्मृति ग्रंथ आदि का सृजन एंव सम्पादन का कार्य किया।आपकी संयम साधना, सेवा भावना, और साहित्य सेवा को देखते हुए 6 जून 1994 को सेमा में आपको उपप्रवर्तक एवं 20 अप्रैल 2005 को नाथद्वारा में प्रवर्तक पद से अलकृत किया गया। सन् 2012 में नाथद्वारा चातुर्मास में गुरुदेव की 59वीं दीक्षा जयंती के शुभ अवसर पर आचार्य प्रवर पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. ने आपको महाश्रमण जैसे गरिमामय अलंकरण से विभूषित किया।

मेवाड़ परम्परा के सभी मुनिराजों की तरह पू. श्री मदनमुनि म. स्वभाव से सरल, सहज दयालु और मृदुभाषी है आपकी सरलता एंव निर्मल चरित्र जन-जन को स्वतः ही अपनी ओर आकर्षित करता है। आप हर स्थिति में अपने भक्तों से बडे स्नेह भाव के साथ मिलते है। इससे आपके और आपके भक्तों का अटूट रिश्ता बना हुआ है। आप श्री का जीवन व्यक्तिव एवं कृतित्व दोनों महान है। आप श्री विनम्र है, मन से सरल है, हदय से उदार है, विचारों से महान है, भक्तों के वत्सल है।

आप बड़ों का पूर्ण सम्मान और छोटों को स्नेहदान करने में सिद्ध रूप है। पथिक जी ने जिस लग्न से प्रवर्तक पू. श्री मगनमुनि जी म. रसिक की सेवा की, एक अद्‌भुत सेवा शिरोमणी ही कर सकता है। धन्य है ऐसा महान सेवाभावी साधक रत्न को। आप मेवाड़ संघ शिरोमणी पूज्य प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म. के यशस्वी सुशिष्य रत्न होकर मेवाड़ संघ के श्रद्धा पुंज है। पूज्य प्रवर्तक भगवान महावीर की साधना के सच्चे वीर पथिक है। संयम, सेवा, व सादगी की त्रिवेणी आपके जीवन में प्रवाहित होती है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तपरुप, मोक्ष मार्ग के सच्चे पथिक है। जिन्होंने मंजिल की तरफ अपने कदमों को अद्म्य उत्साह के साथ आगे बढ़ाते हुए कभी पीछे मुड के नही देखा है। आप न केवल मेवाड़ प्रदेश के अपितु सम्पूर्ण श्रमण संघ के महान संत है। ऐसे योजस्वी वक्ता कवि, लेखक परम तपस्वी बाल ब्रहाचारी वचन सिद्ध, क्रियापालक व्यवहार कुशल उच्चकोटि के साधक व जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र भोले बाबा महाश्रमण पू.प्रवर्तक श्री मदन मुनि जी म.के 64वीं दीक्षा जयंती पर आप श्री के स्वस्थ दिर्घायु एवं यशस्वी जीवन के लिए मंगल कामना करते हुएं श्रद्धा सहित आपको कोटिशः वंदन नमन। गुरुदेव श्री का सुदीर्घ साधक जीवन निश्चित ही हमारे लिए अभिनन्दनीय, अर्चनीय व अनुकरणीय होकर सचमुच ही आप संयम पथ के सजग पथिक है। ✧✧

अगर आपको जैन प्रकाश पत्रिका नहीं मिल रहा है तो कृपया ध्यान दें

1. **आपने आजीवन सदस्यता फार्म पर जो पता दिया था अगर वह बदल गया है तो उसकी सूचना केन्द्रीय कार्यालय को देवें।**
2. **आपको जैन कॉन्फ्रेंस का आई-कार्ड नहीं मिला है तो उसकी जानकारी हमें अवश्य देवें।**
3. **अगर आपके परिवार में एक से अधिक पत्रिका प्राप्त हो रही है तो इसकी सूचना भी हमें अवश्य देवें।**

सम्पर्क करें : श्री विनय द्विवेदी

Ph. 011-23363729

E-mail : aissjc1906@gmail.com

- प्रधान सम्पादक

धनतेरस के उपलक्ष्य में ...

- रमेश बम निर्मल जैन, मुंबई, (महाराष्ट्र)

जैन समाज की परम विदूषी महासाध्वी तपसूर्य पू. श्री लज्जावती जी म. का 94वां जन्म दिवस धनतेरस 17 अक्टूबर, 2017 को परम पूज्य आचार्य डा. श्री शिव मुनिजी म सा., युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म., प्रवर्तक पू. श्री प्रकाश मुनिजी म. के सान्निध्य में अभय प्रशाल परिसर, रेसकोर्स रोड (इंदौर) में समारोह पूर्वक मनया गया। महासती पूज्य श्री लज्जावती जी म. के दीक्षा पर्याय का यह 57वां वर्ष है। इस उपलक्षय में हम अपनें पाठकों के लिए यह आलेख प्रकाशित कर रहे हैं।

मालवा की पावन धरा का मस्तक भारतवर्ष में सदैव उन्नत रहा है। मालव माटी का गौरव मंडित मुकुट अपने आप में इतिहास की तेजस्वी कड़ियों से जुड़ा रहा है। ऐसा यशस्वी आंचल आज भी दैदीप्यमान है, जिसके कण-कण में उन धर्म-कर्म, दान-तप एवं शीलवान साधकों की यशोगाथाएं प्रतिध्वनित हुई हैं, हो रही हैं और भविष्य में भी होती रहेगी। मालव माँ ने समय-समय पर ऐसे एक-दो नहीं, अपितु अगणित साधकों को जन्म दिया है, जिन्होंने अर्हत-धर्म-दर्शन-संस्कृति की रक्षा में अपना जीवन अर्पण किया। शील रुपी किरीट से जिसका मस्तक शोभित है, दान रुपी कंगन से जिसके युगल-कर उदारता लिये हुए हैं, तप रुपी मुक्ताहार से जिसका वक्षस्थल दीप्तिमान है व सादा जीवन, उच्च विचार के साथ उच्च संस्कार-शाकाहार- उच्च विचार रुपी विविध भाव मुक्ताओं, आभूषणों से सुसज्जित मंडित होकर अहिंसा, मैत्री, सह-अस्तित्व एवं दयाभाव का मूक संदेश दे रहा है, ऐसे मालव प्रदेश के बारे में सच ही तो कहा गया है- **"मालव धरती गहन गंभीर, डग-डग रोटी पग-पग नीर"।**

ऐसी मालव माटी के जिला देवास (मध्य प्रदेश) के हाटपिपल्या नगर में ओसवाल वंशीय पालरेचा गोत्रीय श्रीमान सेठ राजमल जी की धर्मपत्नी शीलपरायणा सौ. उमराव बाई पालरेचा की कुक्षी से आपका शुभ जन्म कार्तिक वदी धनतेरस विक्रम संवत 1981 को हुआ। आपका जन्म नाम लाड़कुंवर बाई होकर आप अपने पांच भाईयों श्री गंभीरमलजी, श्री नथमलजी, श्री माणकचंदजी, श्री हंसराजजी और श्री बच्छराजजी के भरे-पूरे परिवार की लाड़ली बहन रहीं। आपका जीवन प्रारंभ से ही अप्रतिम, साहस और श्रम का प्रबल प्रतीक था। आपका विवाह हाटपिपल्या के निकट ग्राम नेवरी (जिला देवास) निवासी बम परिवार की प्रतिष्ठित फर्म मेसर्स श्रीमान मोतीजी कस्तूरचंदजी बम के यहां श्रीमान सेठ श्री ताराचंदजी बम के सुपुत्र श्री नंदलालजी बम के साथ हुआ। श्री नंदलालजी के पुत्र श्री मदनलालजी बम नयापुरा, उज्जैन में रहते हैं और उनकी दो पुत्रियां श्रीमति माणकबाई (आष्टा) और श्रीमती सजनबाई (बड़नगर) में निवास करते हैं। भरापूरा खानदानी बम परिवार में आपके पोते-पोतियाँ, भतीजे-भतीजियाँ इन दिनों उज्जैन, इंदौर, देवास, मुंबई में निवास करते हैं।

आपश्री को **"काकीजी महाराज"** के नाम से बम परिवार और जैन जगत में लोकप्रियता प्राप्त है। माता-पिता के धार्मिक संस्कार आपको बचपन में ही मिलते रहे। गृहस्थ जीवन से ही आपश्री को धर्म, दर्शन और अध्यात्म के प्रति जुड़ाव रहा है। स्थानकवासी परंपरा के महाप्रभावक, जिनशासन श्रंगार, ज्ञानी, ध्यानी, संयमी, यथानाम तथा गुण संपन्न गुरुदेव मालव केसरी श्री सौभाग्यमल जी म.सा. की महानतम शरण आपको मिली। 38 वर्ष की आयु में मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के मेघनगर में कार्तिक सुदी 8 विक्रम संवत् 2017 की शुभ घड़ी में आपके दीक्षा प्रदाता गुरुवर पू. श्री सौभाग्यमल जी महाराज ने आपश्री

को भागवती दीक्षा प्रदान कर विख्यात गुरुणी मैया बालब्रह्मचारी पूज्य श्री चांदकंवरजी म. एवं शांतिमूर्ति पूज्या श्री शांतिकंवरजी म. के मार्गदर्शन में सौंप दिया। आपश्री की गुरु बहन मधुर वक्ता पू. श्री रमणीककंवर जी म. आदि ठाणा-7 के साथ इन दिनों शुजालपुर में चातुर्मास कर रही हैं। दीक्षा लेने के पश्चात आपश्री ने बड़ी तन्मयता के साथ जैन दर्शन एवं जैनागम ज्ञान प्राप्त किया। ज्ञान के साथ-साथ तप व क्रिया को आपने महत्व दिया व एकान्तर उपवास, मास क्षमण, अठाई तप एवं क्रिया को नियमपूर्वक संपन्न किया। अहिंसा परमो धर्म के प्रचार-प्रसार में जिन शासन की महत्त्वपूर्ण प्रभावना की।

स्थानकवासी परंपरा के श्रमण आचार-विचार संहिता का उत्कृष्ट पालन करते हुए मिथ्या मान्यताओं, अन्धानुकरण व जड़ क्रियाकांडों में उलझे हुए समाज को आपश्री ने सम्यक् दिशा बोध दिया। आपके जीवन में जैन धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा है। आपकी कथनी और करनी में एकरुपता है। जैसा आपका नाम "लज्जावती", वैसा ही आपके चरित्र में लज्जा और शीलता का दर्शन होता है। जिसका मन अच्छा होता है उसका आचार, विचार और चरित्र भी अच्छा होता है।

साधना एक ऐसी शक्ति है जिसे पाकर कर्म निर्जरा करता हुआ संसार बंधन से सदा-सदा के लिए प्राणी मुक्त हो जाता है। जैन जगत में अनेक महान विभूतियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिन्होंने इस साधना मार्ग पर चलते हुए प्रभु के उपदेश को घर-घर और जन-जन तक फैलाने का प्रयास किया है।

इसी कड़ी में हमारी महाविदुषी साध्वी पू. श्री लज्जावती जी म. का नाम भी आता है। यह उनकी पूर्व जन्म की साधना ही थी कि जो इस जन्म में उन्हें साधना पथ पर आगे ले आई। आपकी गहन ज्ञान आराधना, श्रुत सेवा, प्रवचन आदि के साथ ही आपश्री में सेवा का गुण भी प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहा है। आपका कथन है कि हमें सेवा के लिए ही जीवन मिला है। हमें धर्म की, समाज की, साधु संतों की सेवा करनी ही चाहिए। सेवा का फल कभी निष्फल नहीं जाता है।

आपश्री का सेवाभावी, मधुर व्याख्यानी, सुमधुर लेखिका, स्नेहमयी, सरल व समता विभूति, महातपस्विनी व्यक्तित्व आपके संपर्क में आने वाले प्रत्येक सुश्रावक को आकर्षित किये बिना नहीं रहता। दीक्षा पर्याय के इन 57 वर्षों में आपश्री ने अनेक मासक्षमण, अठाई तप आदि की तपस्या कर जीवन को तपोमयी व तेजस्वी बनाया है। अपनी दीक्षाकाल के इन सर्वोत्कृष्ट वर्षों में आपश्री का विचरण क्षेत्र राजस्थान, गुजरात, निमाड़, मेवाड़, मारवाड़, महाराष्ट्र, हिमाचल, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, दिल्ली, मुंबई, हरियांणा, गुड़गाँव, चंडीगढ़, जम्मू, अमृतसर, कुरुक्षेत्र तथा दक्षिण के कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, कृष्णागिरी, रत्नागिरी, वैराग्यगिरी, नालागढ़, चेन्नई, हैदराबाद आदि में प्रमुख रहा है। जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, देवास, झालावाड़, झालरापाटन, मेरठ, होशियारपुर, दिल्ली, कानपुर सहित अनेक प्रमुख नगरों में विचरण करते हुए इन दिनों आपश्री 16 जुलाई 2017 को इन्दौर में स्थिवीर हैं। आचारांग सूत्र में श्रमणों के आचार का प्रतिपादन है।

हमें उस आचार को जीवन में लाना है। यह आचार साधु-साध्वी के लिए ही नहीं, अपितु श्रावकों के लिए भी आवश्यक है। यही कारण है कि युग प्रधान आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी ने अपने प्रवचनों में आचार के परिपालन पर बहुत जोर दिया है। आज हमारा आचार, चरित्र, आहार विकृत हो रहा है। मन मस्तिष्क में चल रहे विचार भी असंतुलित हो रहे हैं, ऐसी स्थिति में जन-जन के सम्यक पथ प्रदर्शन में पूज्य आचार्य डॉ. शिवमुनि की अहम भूमिका अविस्मरणीय है। आज के इस शुभ प्रसंग पर हम जैन समाज के समग्र श्रावक जन आपके दीक्षा पर्याय के 57 वर्ष पूर्ण करने और आपश्री की आयु के 93 वर्ष पूर्ण होकर सन् 2017 की धनतेरस को 94वें वर्ष में मंगल प्रवेश करने के लिए मंगलकामनाएँ व्यक्त करते हैं। आपश्री का अभिनंदन करते हैं। ✧✧

निराशा एक धीमा जहर

- बनेचंद बोथरा जैन, शहादा (महाराष्ट्र)

जीवन में निराशा बहुत खतरनाक होती है। इससे बचके ही रहना चाहिए। जब भी मन में अत्यंत निराशा का भाव आ जाए और भावुक होकर पंखे से लटकर या कोई जहरीला पदार्थ खाकर या मृत्यु के तरीके अपनाने की ओर कदम बढ़े तो पहले सोचे एक विचार करें मन को अच्छे विचारों की ओर ले जाएं और गम्भीरता से सोचें। क्या किसी समस्या का यही एकमात्र समाधान है माना की समस्या कभी-कभी दिल को बहुत बेचैन कर देती हैं, आंखों के आगे अंधेरा छा जाता है। जीवन बोझ सा लगने लगता है लेकिन क्या जीवन को समाप्त कर देने से समस्या का निदान हो जाता है, इससे तो परिवार और भी ज्यादा संकट में आ जाता है। ईश्वर की दी हुई इस अनमोल सौगात को इस तरह समाप्त करने का हमें क्या अधिकार है? कितनी योनियों में भटकने के बाद हमें यह मानव जन्म मिलता है क्या इसका मूल्य इतना ही है कि हम किसी निराशा के भंवर में पड़कर जीवन को ही समाप्त कर दें।

निराश होकर हाथ-पैर पटक देना और चिंता में डूब जाना कहां की समझदारी है? इस आदत से तो हम स्वयं अपने जीवन के सामने प्रश्न चिह्न खड़ा कर देते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि कितने ही राजा-महाराजाओं का राजपाट छिन जाने के बाद जंगल में दर-दर भटकना पड़ा किन्तु उन्होंने आशा नहीं छोड़ी बल्कि उत्कृष्ट आकांक्षा से जीने की राह खोजकर फिर से खोआ हुआ वैभव पद प्राप्त किया। गहरी निराशा अंधकार बनकर इंसान को आगे नहीं बढ़ने देती, हताशा हावी हो जाती है, इससे बचने के लिए अपने मन के आंगन में निराशा के कांटे उगने ही न दें। सदैव आशा के ही फूल बोते रहें आशा जीवन की ओर ले जाती है।

जीवन जीने से किसी प्रकार अपने को असफल पाने पर हमें अपनी जीवन प्रक्रिया को व्यवस्थित बनाकर भले ही छोटे से छोटा साधन ही क्यों न हो हमें जीवन जीने का ही प्रयास करना चाहिए। संभलकर खड़े होने में लजाए नहीं। नए-नए तरीके खोजकर जीवन में फिर से आशा के प्राण फूंकने चाहिए हमें तो निरंतर प्रयत्नशील ही बने रहना चाहिए।

जीवन जीने में जब आदमी अक्षम हो तो उसके भीतर एक भारी वेदना जन्म लेती है, इस वेदना से उसमें तड़प पैदा होती है, उस तड़प के ही दौरान वह अपने भीतर साहस पैदा कर क्षमता पैदा करे अपनी विपरीत परिस्थितियों को सुलझाने के लिए साहस से सामना करें। यदि आपका मार्ग सच्चा है तो बंद कपाटों को दस्तक दे देकर खोला जा सकता है। जिसने जीने का साहस खो दिया वह तो जीते जी ही मृत के समान है उसके लिए और मरना कैसा?

सुख-दुख के द्वंद्वों को सहन करने का नाम ही मानव जीवन है। बात बात पर निराशा क्रोध शिकायतें करते रहना परेशानी का कारण बनता है। बार-बार दुःखों को याद करना मन में भारीपन पैदा करता है। दुःखों का स्मरण करने के बजाय हमें जीवन के प्रकाश की ओर बढ़ना चाहिए। आशा की किरणों की ओर बढ़ना चाहिए। जिन्दगी से परेशान होने की बजाए जीने की राह खोजने के लिए तत्पर रहना चाहिए। कुछ आदमी बदनामी के ड़र से मौत को गले लगा लेते हैं, किंतु उन्हें सोचना चाहिए, साहस रखना चाहिए। साहसी व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना दृढ़ता के साथ करता है अपनी गलतियों को सुधारकर जीने का प्रयास करता है।

निराशा जीवन का एक धीमा जहर है जो इंसान को धीरे-धीरे निगलने का प्रयास करता है, तो क्यों न ऐसी निराशा को हम पहले ही जीवन से दूर कर दें। ✧✧

भारतीय संस्कृति - पाश्चात्य संस्कृति

- **निधि दिनेश लोढ़ा,** कांदिवली मुंबई, (महाराष्ट्र)

संस्कृति किसी समाज में व्याप्त गुणों के समग्र रुप का नाम है जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, साहित्य-कला आदि में दिखाई देती है। हम बचपन से ही दो प्रकार की संस्कृति के बारे में सुनते आए हैं। भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति/पाश्चात्य संस्कृति के बारे में नकारात्मक ही ज्यादा पढ़ा लेकिन जब मैंने कई देशों की यात्रा की जैसे सिंगापुर, अमेरिका, यूएई, इंग्लैंड, फ्रांस, इटली, जर्मनी आदि कई यूरोपियन देश तो मैंने कई अच्छी चीज़ें पाई मसलन सफाई।

भारत में अकसर लोग का कचरा साफ करके बाहर सड़क पर ड़ाल देते हैं। हर जगह कचरा दिख जाता है, वहीं अमेरिका के बच्चों को देखा, कचरा डस्टबिन में ही ड़ालते हैं और आसपास डस्टबिन न हो तो अपने बैग में रख लेते हैं। यहाँ मुंबई में लोकल ट्रेन चढ़ना हो तो धक्का-मुक्की लगी रहती है, वहीं विदेशों में लोग हमेशा कतार में खड़े होते हैं, यहाँ पर ट्रेफिक नियमों का पालन कोई करता है और कोई नहीं करता, जरुरत हो या ना हो बस होर्न बजाते रहते हैं, ध्वनि प्रदूषण फैलता है। वहीं हमने 18 दिन का यूरोप ट्रिप किया, पूरे ट्रिप में बस चालक ने एक बार भी होर्न नहीं बजाया, वहां बिना कारण के होर्न बजाने वाले को असभ्य माना जाता है।

भारतीय संस्कृति के हिमायती लोग अंग्रेजी पर भी कटाक्ष करते हैं परंतु यह लेख पढ़ने वाले कितने लोग अपने बच्चों को हिन्दी-मीडियम स्कूल में पढ़ाते हैं? शायद एक भी नहीं? हिन्दी हमारी मातृभाषा है और हमें इस पर गर्व है और हर बच्चे को आनी ही चाहिए परंतु अंग्रेजी का महत्व इस नकार नहीं सकते। विदेशों की बात तो छोड़ो यदि एक प्रोफेशनल (चाहे कोई भी प्रोफेशन में हो जैसे सीए, एमबीए, डॉक्टर, इंजीनियर, सेल्स पर्सन आदि) भारत में भी नौकरी करता है और यदि अंग्रेजी में Fluent है तो उसे अधिक वेतन मिलता है, एक सर्वे के अनुसार जो अंग्रेजी में मास्टर है उसे 25 से 30% तक वेतन मिलता है। अंग्रेजी अभी पूरे की भाषा बन चुकी है, तो कहीं भी जाते हैं तो communiction आसान हो जाता है। हमारे सम्मानीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी भी बाहर जाते हैं तो अंग्रेजी में बोलते हैं जिससे दूसरे देशों के साथ हमारे संबंध अच्छे बने हैं।

अगर हम पहनावे की बात करें तो यहाँ भारतीय संस्कृति का पहनावा, सूट, साड़ी, कुर्ता-पजामा आदि हैं तो वहीं पाश्चात्य संस्कृति का पहनावा पैंट-शर्ट, स्कर्ट-टॉप आदि हैं। मैंने हमेशा देखा है कि जब विदेशी लोग भारत में आते हैं तो यहां के पहनावे से आकर्षित होते हैं जैसे अभी जापान के प्रधानमंत्री जी बुलेट ट्रेन की परियोजना के लिये अहमदाबाद आये थे तो उन्होंने कुर्ता-पायजामा और मोदी जैकेट पहनी और उनकी पत्नी ने सलवार सूट। प्रिंसेस डायना ने सलवार सूट पहना था, मार्क जुकेरबर्ग (फेसबुक के मालिक) ने जब पहली बार भारत आये थे तो कुर्ता पहना और उनकी पत्नी ने हरी साड़ी। तो स्वभावतः जब कोई भारतीय विदेश जाता है तो वह भी वहां के पहनावे से आकर्षित होता है और कहा भी गया है कि जैसा देश वैसा भेष। यहां अब व्यक्ति का अपना विवेक है कि वह शालीन कपड़े चुने क्योंकि मैंने देखा कि कई महिलाएं साड़ी पहनती हैं परंतु क्या और केसी इसका विवेक नहीं रखती जैसे पारदर्शक साड़ियां और

बड़े-बड़े गलों वाला ब्लाउज। कहने का तात्पर्य यह है कि कपड़े शालीन हो और अवसर के अनुकूल हो।

पाश्चात्य संस्कृति के कारण महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना बढ़ी है, महिलायें घर की चार दीवारी से बाहर निकलकर हर क्षेत्र में नाम कमा रही हैं। हम पाश्चात्य संस्कृति की आलोचना उनके स्वछंद और खुले व्यवहार के कारण करते हैं लेकिन उनके विशेष गुणों को (जैसे कि देश प्रेम, ईमानदारी, कठोर परिश्रम, कर्मठता) भूल जाते है। इसलिये हमें गुणग्राही दृष्टि रखते हुए West के Waste को नहीं देखना है बल्कि West में Best है उसे ले लें। हमारे सामने दोनों संस्कृतियाँ हैं, हमें किसी को नकारना नहीं बल्कि दोनों की अच्छाईयाँ अपनाते चलें।

✧✧

उत्कृष्ट कला

अयोध्या नगरी में एक चमत्कारी यक्ष का मंदिर था। हर वर्ष बड़ा मेला लगता था, वहां की परंपरा के अनुसार हर वर्ष चित्रकारों द्वारा उस यक्ष का चित्र बनाया जाता था। लेकिन उत्सव समाप्त होते ही यक्ष अपने चित्रकार को मार डालता था। इसका परिणाम यह हुआ कि चित्रकार नगरी छोड़-छोड़कर भागने लगे। राजा को यह मालूम हुआ तो उसने सोचा कि इस तरह से सब चित्रकार भाग जाएंगे, फिर यक्ष को कौन चित्रित करेगा? राजा ने एक नियम बना दिया कि सबके नाम पर्तों पर लिखकर एक घड़े में डाल दिए जाते। एक-एक नाम निकला जाता। जिसका नाम निकलता, उसे यक्ष को चित्रित करना पड़ता। एक बार कौशाम्बी का एक चित्रकार अयोध्या आया और किसी चित्रकार के घर रहने लगा। यह चित्रकार अपनी वृद्धा मां का इकलौता बेटा था। संयोगवश इस वर्ष इस चित्रकार की बारी आई। वृद्धा को जब यह मालूम हुआ तो वह बहुत दुःखी हुई।

कौशाम्बी के चित्रकार ने कहा - 'मां तुम क्यों रोती हो? यक्ष को चित्रित करने मैं जाऊंगा।' नवयुवक चित्रकार ने दो दिन का उपवास किया, नए-नए वस्त्र पहने, नए कलशों के जल से स्नान किया, नई तूलिकाएं लीं, नए रंग और नए पात्र लिए और वह यक्ष को चित्रित करने चल दिया। उस चित्रकार ने यक्ष को इतने भक्तिभाव से, अपनी संपूर्ण क्षमताओं का उपयोग करके चित्रित किया कि यक्ष का रूप पूरी तरह निखरकर सामने आ गया। यक्ष ने प्रकट होकर चित्रकार के हुनर की प्रशंसा की और कहा - 'आज तक मेरा चित्र जिसने भी बनाया उसने मृत्यु के भय से उसे विक्रित कर दिया, इसलिये मैं आज तक अपना चित्र बनाने वाले प्रत्येक चित्रकार का वध करता आया हूं। तुम पहले चित्रकार हो जिसने मृत्यु के भय को त्यागकर अपनी उत्कृष्ट कला का नमूना प्रस्तुत किया है, तुमसे प्रसन्न होकर मैं तुम्हें तुम्हारा मुंह मांगा वर देने को तैयार हूं। यक्ष ने वर मांगने को कहा।'

चित्रकार ने भक्तिभाव से हाथ जोड़कर यक्ष से विनम्रतापूर्वक कहा - 'देव यदि आप मुझ पर प्रसन्न ही हैं तो आप चित्रकारों का वध करना बंद कर दें। यक्ष ने तथाअस्तु कहा और उसे वरदान दिया कि वह किसी के भी शरीर का एक अंग देखकर पूरा चित्र बना देगा। चित्रकार ने यक्ष के वरदान का सदुपयोग किया और उसने आगे चलकर अपनी चित्रकला और यक्ष से मिले वरदान से मान प्रतिष्ठा के साथ-साथ अपार धन अर्जित किया। साथ ही साथ उसने समाज के दबे कुचले लोगों का भी भरपूर साथ दिया।

✧✧

विद्वानों की दृष्टि में जैन दिवाकर

संकलन : सुरेशचन्द्र धींग, (बम्बोरा-राजस्थान)

व्यक्ति-क्रांति के महान प्रवर्तक

जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी का सारा जीवन श्रमण संस्कृति की उत्कृष्टताओं पर तिल-तिल न्योछावर था। वे उसके जीवन्त-ज्वलन्त प्रतिनिधि थे। उनका सारा जीवन उन लक्ष्यों की उपलब्धि पर समर्पित था, जिनके लिए भगवान महावीर ने बारह वर्षों तक दुर्द्धर तप किया, और जिन्हें सदियों तक जैनाचार्यों ने अपनी कथनी-करनी की निर्मलता द्वारा एक उदाहरणीय उज्ज्वलता के साथ प्रकट किया। जैन दिवाकरजी व्यक्ति-क्रांति के महान प्रवर्तक थे। वे जहाँ भी गये, वहां उन्होंने व्यक्ति को ऊँचा उठाने का काम किया। जैन दिवाकर चौथमलजी केवल जैन मुनि नहीं थे, मनुजों में महामनुज थे। वे त्याग व समर्पण के प्रतीक थे, निष्कामता और निश्छलता के प्रतीक थे, निर्लोभ और निर्वैर, अप्रमत्तता और साहस, निर्भीकता और अविचलता की जीती-जागती मूर्ति थे। क्या यह सच नहीं है कि ऐसा मनस्वी संत पुरुष हजारों-हजार वर्षों में कभी-कभार कोई एक होता है, और बड़े भाग्योदय से होता है। मुनिश्री चौथमलजी एक वाग्मी संत थे, वाग्मी इस अर्थ में कि वे जो-जैसा सोचते थे, उसे त्यों-तैसा अपनी करनी में अक्षरशः जीते थे।

- डॉ. नेमीचन्द जैन

उन्हें नापने हमारा पैमाना छोटा

मुझे बचपन की स्मषति है। कानोड़ (राज.) के गांधी चौक में इस उत्तुंग ज्ञान हिमालय से प्रवचन गंगा फूट रही है। उसके पावन शीतल स्पर्श से सबका मन आह्लादित है। क्या राजा, क्या रंक, क्या अमीर, क्या गरीब, क्या खटीक, क्या कलाल, क्या मोची, क्या चमार; सब उनकी वाणी के आकर्षण की डोर में खिंचे चले आ रहे हैं। व्यक्तित्व का अद्भुत प्रभाव, वाणी का बेमिसाल चमत्कार। इतने वर्षों बाद जब जैन दिवाकरजी महाराज के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करता हूँ तो उस महान व्यक्तित्व के आगे हमारा पैमाना उत्तरोत्तर छोटा पड़ता जाता है। उस अकेले व्यक्तित्व ने जो धार्मिक-सामाजिक क्रांति की, कई लोग और संगठन मिलकर भी उसके समानान्तर आज तक वह क्रांति नहीं कर सके हैं।

- डॉ. नरेन्द्र भानावत

अन्य जातियों पर अद्भुत प्रभाव

यह जैन दिवाकरजी जैसे संतों का ही प्रभाव लगता है कि मेवाड़ में भील लोग भाद्र माह में जो 'गवरी' नाचते हैं, उसमें पूरे माह ही वे ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। एक समय भोजन करते हैं। हरी सब्जी नहीं खाते हैं। पाँवों में जूते नहीं पहनते और न स्नान आदि ही करते हैं। खाली जमीन पर सोते हैं। इनके अतिरिक्त और भी जातियाँ हैं, जो जैन धर्म के नियमों व सिद्धांतों का अक्षरषः पालन करती आ रही हैं।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

संतों की दृष्टि में जैन दिवाकर

- उमरावदेवी धींग बम्बोरा, (राजस्थान)

संपूर्ण जीवन अनुकरणीयः- चौथमलजी महाराज सच्चे जैन के दिवाकर थे। उनके ज्ञान की किरणें झोंपड़ी से महलों तक पहुँचीं। वाणी के अद्भुत जादू ने वह कार्य किया जो सत्ता अपने तलवार एवं धन के बल से नहीं कर सकी। पतितों को पावन बनाया, लाखों जीवों को अभयदान दिलाया। अपने त्याग-तप से अद्भुत कार्य कार जनता को एक नई दिशा दी। बिखरे हुए समाज को एकत्र करने का अथक प्रयास किया। उनके जीवन के आद्योपान्त कार्य सबके लिए अनुकरणीय हैं। **- आचार्य श्री आनन्दऋषिजी**

सदैव स्मरणीयः- श्री जैन दिवाकरजी महाराज ने प्राणिहित और जनहित के अनेक कार्य किये। यत्र-तत्र जीवहत्याएँ बन्द करवाईं। पर्व के दिनों में अगते पलवाए। अनेक राजाओं और जागीरदारों से हत्या बन्द करने के पट्टे लिखवाये। ये कदम उनके सदा-सदा के लिए संस्मरणीय रहेंगे। युग पर युग बीतते जायेंगे तो भी उनका नाम यत्र-तत्र-सर्वत्र गूंजता रहेगा। **- युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी**

साक्षात् सरस्वतीपुत्र :- जैन मुनि होने पर भी उनके प्रवचनों में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि सभी धर्मावलम्बी बिना संकोच के उपस्थित होते और उनके उपदेशों को सुनकर अपने आपको धन्य अनुभव करते। मैंने स्वयं उनके प्रवचनों को सुना। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि साक्षात् सरस्वती-पुत्र ही बोल रहा है। वाणी में इतना माधुर्य कि सुनते-सुनते श्रोता अघाता नहीं था। पुण्य पुरुष जैन दिवाकरजी महाराज जिधर से निकलते, उधर टिड्डीदल की तरह भक्तों की भीड़ जमा हो जाती। उनके नाम में ही ऐसा जादू था कि जनता अपने आप खिंची चली आती। एक बार जो आपके सम्पर्क में आ जाता, वह भुलाने का प्रयत्न करने पर भी आपको भुला नहीं पाता। **- उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी**

जैन धर्म को बनाया लोकधर्मः- जैन दिवाकरजी महाराज ने जैन धर्म को लोकधर्म का स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने महान् वीतराग मार्ग को महाजन समाज से अलग अन्य वर्ग के लोगों में इसे फैलाकर भारत में जैन ध र्म की व्यापक उपयोगिता को सिद्ध कर दिया। झोंपड़ी से लेकर राजमहलों तक जिनशासन की कीर्तिध्वजा लहराने वाले जैन दिवाकरजी महाराज को भुलाना असंभव है। **- प्रवर्तक श्री अम्बालालजी महाराज**

युगप्रवर्तक महापुरुषः- जैन इतिहास ही नहीं, अपितु भारतीय इतिहास के पिछले ढाई हजार वर्षों में ऐसे मनस्वी तेजस्वी प्रभावशाली सन्त बहुत ही कम हुए हैं, जिन्होंने युग की बहती धारा को अपनी वाणी से मोड़ दिया हो। असदाचार को सदाचार व कुसंस्कारों को सुसंस्कार में बदलना वास्तव में युग प्रवर्तन का कार्य है। श्री जैन दिवाकरजी ने यह ऐतिहासिक कार्य किया, अतः उन्हें एक युगप्रवर्तक महापुरुष कहा जा सकता है।

- भण्डारी श्री पदमचन्दजी महाराज

ध्यान...

- दिपाली सुमतिलाल मुगदिया जैन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

धर्म जीवन सतत जागृत रहे।

दोहा: भले जगत प्रतिकूल हो कोई मित्र न होय।
धर्म सतत जागृत रहे तो मंगलकारी होय।।

धर्म हमारे साथ रहने पर किसी भी बात का भय नहीं।

धर्म हमारा ईश है धर्म हमारा नाथ है।
हमको भय किस बात का धर्म सदा ही साथ।।
कर्म क्षय के लिये, मोक्ष प्राप्ति के लिये।

ध्यान की भूमिका।

1. ध्यान बहोत सहज है। उस हम कठिन न बनाये। ध्यान बहोत सहजता से ले बस खुद में उतारण है। खुद को निहारना है। खुद के मस्ती में मस्त रहना है।
2. ध्यान हम जब भी करना चाहे जब भी भावना हो ध्यान में जाना। सुबह ब्रह्म मुर्हुत में ध्यान की एक बैठक कर ही लेनी, याद दिन में रात को सोने से पहले ध्यान करे तो बहुत अच्छा।
3. ध्यान से पहले शारीरिक, स्फूर्ति और नाड़ी शुद्धि के लिये वंदना प्राणायम, दिर्घ श्वास, अनुलोम विलोम, चंद्रभेदी, सूर्यभेदी, कपाल भारती, बाह्य प्राणायम (कुचक्र), अभ्यांतर प्राणायम कुचक्र अग्निसारक्रिया भ्रामरि, शितती आदि।
4. शरीर स्वयं साधना कक्ष है। स्वस्थ शरीर और प्रसन्न हृदय ध्यान की श्रेष्ठ भूमिका है।
5. ध्यान ब्रह्म करे जहाँ बाहरी शोर न हो।
6. ढ़ीले सफेद साफ वस्त्र पहने।
7. नरम आसन बिछायें।
8. बैठक वैसी हो जिससे आप आराम से दो चार घड़ी बैठ सके। स्वयं की अंतर यात्रा।

ध्यान में चिंतन:-

मैं शुद्ध, बुद्ध, सचितानंद, ज्योर्तिमय परब्रह्म हूँ।

दोहा: ध्यान चक्र चलित करे, प्रज्ञा ले जगाये।
जिससे सारी गंदगी मन पर ही हट जाये।

मैं इन्द्रियों से परे हूँ:-

दोहा: मैं इन्द्रियों से परे हूँ, इंद्रिय विषय विभाव।
भेद विज्ञान जो घट अंदर, तब प्रगटे स्वभाव।।

मैं द्रव्य से मन से परे हूँ:-

दोहा: सुख-दुःख आते ही रहे, जो आवे दिन रैन।
तू क्यों खावे बाबलां, अपने मन की चैन।।

मैं जड़ पदर्थों से परे हूँ:-

दोहा:- तीन बाद बंधन बने, राग, द्वेष, अभिमान।
तीन बाद बंधन खुले, शिल समाधी ध्यान।

मैं विभावों से परे हूँ:-

दोहा:- राग, द्वेष, मोह का मैल भरा भरपूर।
योग साधना जल से धुले हो तो हो जावे दूर।।

मैं कषायो से परे हूँ:-

दोहा:- रोग मिटे समाता बढ़े मिले परम संतोष।
दूर होय बेचनिया, मिले शांति सुखकोष।।

मैं सरागी दी भावों से दूर हूँ:-

दोहा:- जब तक मन में मोह है, राग, द्वेष भरपूर।
जब तक मन संतज है, शांति बहुत ही दूर।।

दोहा:- आत्मबल प्रगटाय ऐसा तेज प्रचंड़।
निकट न रहे आपके, ढोंग, पाप, पाखंड।

ध्यान के लक्षण:-

1. मुमुक्ष:- जिसे मुक्ति पाने की इच्छा है, वहीं ध्यान कष्ट को सहन करने के लिये तैयार होगा, इसलिये मोक्ष प्राप्ति की इच्छा होनी चाहिए।
2. जन्म निर्विघ्न:- जो पोदगलीक, क्षणिक सुख से विसक्त हो, जन्म लेने की परंपरा से उदासीन हो उसके परिणाम ध्यान में स्थिर रह सकते हैं।

क्रमश...

महिला शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

महिला शाखा विदेश भ्रमण यात्रा का हरेक प्रांत में स्वागत

मुंबई (महाराष्ट्र) : वर्ष 2016 से 2018 का कॉन्फ्रेंस का कार्यकाल स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा ऐसा जनमानस कह रहा है। जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में पहली बार महिला शाखा द्वारा आयोजित विदेश भ्रमण यात्रा का देश के हर प्रांत से स्वागत हो रहा है। कॉन्फ्रेंस के आयोजन गुणवत्ता के लिए सभी विश्वस्थ है। महिला शाखा के असीम प्रयत्नों से कुशल पदाधिकारियों के नेतृत्व में सिंगापुर, मलेशिया (क्रूज) के साथ विदेश यात्रा का आयोजन सभी के मन को लुभा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय ट्रेवल एजेंसी एसओटीसी के साथ मिलकर राष्ट्रीय महिला शाखा ने जैन समाज को सिंगापुर, मलेशिया के लिए विशेष पैकेज टूर का तोहफा दिया है। 75 से 100 अधिक यात्रियों के साथ चातुर्मास समाप्ति के पश्चात नवंबर के प्रथम प्रथम सप्ताह में अंतराष्ट्रीय महिला शाखा के नेतृत्व में मुंबई से सिंगापुर के लिए प्रस्थान होगा। करीबन 10 दिन के बाद यात्री मुंबई लौटेंगे।

इस यात्रा के दौरान सभी यात्री सिंगापुर, मलेशिया क्रूज (आइलैंड) तथा आसपास के सभी प्रेक्षणीय स्थलों का लुफ्त उठाएंगे। संपूर्ण टूर के दौरान विशेष तिथि नवकारसी और चोविहार का विशेष ध्यान रखते हुए जैन रसोई का ही आयोजन होगा। इस यात्रा के आयोजन लिए राष्ट्रीय महिला शाखा से राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रुचिराजी सुराणा जैन के मार्गदर्शन से सौ.सुनंदा भंसाली जैन,सौ.मंजू दर्डा जैन, सौ.संध्या लोढा जैन ने विशेष परिश्रम किया।

प्रेषक : मंजू दर्डा

कोमल और कमजोर नहीं शक्ति का नाम ही नारी

भीलवाड़ा (राजस्थान) : श्री जैन श्वेताम्बर संस्था सोड़ाला, जयपुर के तत्वावधान में श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की महिला शाखा द्वारा चतुर्थ महिला अधिवेशन नारी-नारायणी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूज्य श्री सन्मति मुनि जी म 'साहिल' ने मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में महासती पू. श्री कंचन कंवर जी म., महासती पू. श्री डॉ. सुलोचना जी म., महासती पू. श्री डॉ. सुलक्षणश्री जी म. आदि ठाना की निश्रा प्राप्त हुई। इस अवसर पर पू. श्री सन्मति मुनि जी म. सा. ने कहा कि जब तक जीवन में समय का महत्त्व नहीं समझेंगे तब तक गृहस्थ जीवन में भी खुशियाँ आती। महासती पू. श्री कंचनकंवर जी म. ने कहा कि नारी का नाम इस संसार में सम्मान के साथ लिया जाता है। नारी ने ही तीर्थंकरों को जन्म दिया है। उन्होंने कहा कि नारी का सम्मान ही संसार के सुखों का आधार है। महिला कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती रुचिराजी सुराणाजैन, महामंत्री श्रीमती विनिताजी ओरडिया जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समारोह में लोकायुक्त जस्टिस श्री सज्जन सिंहजी कोठारी, श्री रमेशजी अरोड़ा, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी श्री एन.के. खींचा, श्रीमती लाड़ देवी जैन पूर्व अध्यक्षा-राजस्थान महिला आयोग आदि न भी अपने विचार व्यक्त किए। श्री अवंति पार्श्वनाथ महिला मंडल की अध्यक्षा श्रम्मती मधु कर्नाटव ने स्वागत सम्बोधन दिया। महिला जैन कॉन्फ्रेंस की प्रदेशाध्यक्षा कवयित्री सुश्राविका श्रीमती लाड़जी मेहता जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि चंदनबाला, मरुदेवी, मल्लीनाथ जैसी नारी शक्ति जिनशासन की गौरव है।

'नारी तू नारायणी' पर आधारित एक नाटिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन श्री कमल संचेती ने किया। महिला जैन कॉन्फ्रेंस की महामंत्री श्रीमती पुष्पाजी गोखरु जैन ने आभार जताया। इस अवसर पर दिवाकर संगठन समिति के राष्ट्रीय वरिष्ट अध्यक्ष लक्ष्मीलालजी तालेड़ा जैन, किशनगढ़ से विनोदजी मेहता जैन (अध्यक्ष), श्री निर्मलजी बरडिया जैन सहित श्रावक-श्राविकाएं, भीलवाड़ा से शांतिलालजी खमेसरा जैन (मंत्री) सहित, गुजरात व महाराष्ट्र से श्रावक श्राविकाएँ उपस्थित थे। **प्रेषक : लाड़ जी मेहता**

समाचार - प्रकाश

मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह जी चौहान ने आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म. को 'ध्यान गुरु' की उपाधि से अलंकृत किया

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : ध्यान-साधना पद्धति से, मनुष्य जीवन में सुख-शांति एवं आनंद का अनुभव करता है। आचार्यश्रीजी ने 20 साल की ध्यान-साधना से जो अमरत्व प्राप्त किया है वह जन-जन को प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं। ध्यान हर भाषा और धर्म के, हर बन्धन से मुक्त है। उक्त विचार मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह जी चौहान ने आज शिवाचार्य समवसरण अभय प्रशाल में आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. शिवमुनिजी म.सा. का आर्शीवाद प्राप्त कर व्यक्त किए। मुख्यमंत्रीजी ने इस अवसर पर **'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड'** में ध्यान-साधना पद्धति पर आचार्यश्री जी के दर्ज रिकार्ड एवं जन-जन को ध्यान-साधना से आध्यात्मिक अभियान के फलस्वरुप शासन की ओर से **'ध्यान गुरु'** की उपाधि से अलंकृत किया। इस अवसर पर समवसरण में युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म. ने आनंद मंत्रालय के सम्बन्ध में मुख्यमंत्रीजी से चर्चा की। इस अवसर पर प्रवर्तक पू. श्री प्रकाशमुनिजी म. 'निर्भय', पू. श्री शिरीष मुनिजी म., पू. श्री शुभम मुनि जी म. आदि संत उपस्थित थे। प्रारम्भ में पार्षद श्री दीपकजी जैन टीनू ने मुख्यमंत्रीजी एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा श्रीसंघ अध्यक्ष श्री नेमनाथजी जैन, महामंत्री श्री रमेशजी भण्डारी जैन ने चातुर्मास की रुप रेखा व्यक्त की। महापौर श्रीमती मालिनीजी गौड़, नगर अध्यक्ष श्री कैलाशजी शर्मा, विधायक श्री सुदर्शनजी गुप्ता, श्री मनोजजी पटेल, कलेक्टर श्री निशांतजी वरवड़े, उद्योगपति श्री डेविशजी जैन सहित कई गणमान्यजन उपस्थित थे। वहीं इस अवसरपर चातुर्मास आयोजन समिति के संयोजक श्री प्रकाशजी भटेवरा जैन, श्री जिनेश्वरजी जैन, श्री राजकुमारजी जैन, सहमंत्री श्री मनोहरलालजी जैन, श्री हंसकुमारजी जैन, युवक संघ के श्री रितेशजी कटकानी, सुविधिजी जवेरी, श्री गौरवजी जैन, श्री पंकजजी पार्श्वनाथ, श्री सुभाषजी विन्यायकिया जैन, श्री अशोकजी मंडलिक जैन, श्री पदमचंदजी तांतेड़ जैन, श्री राजेन्द्रजी लोढ़ा जैन आदि समाजजनों ने मुख्यमंत्रीजी को साहित्य भेंट कर अभिनन्दन किया। **प्रेषक : दीपक जैन टीनू**

युवाचार्यश्री जी का स्वर्ण जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में युवाचार्य प्रवर श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. का स्वर्ण जन्म महोत्सव 5 अक्टूम्बर 2017 को माँ अहिल्या की पावन नगरी इन्दौर के शिवाचार्य समवशरण, अभय प्रशाल के प्रांगण में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पू. श्री शुभममुनिजी म.सा. के मधुर स्वर से श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र का स्वाध्याय हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ 9.30 बजे से हुआ। एक मधुर भजन सौ. पुष्पाजी चोरड़िया चाकण ने प्रस्तुत किया। सौ. मधुजी लोढ़ा शिर्डी ने भी **'चाकण का बेटा'** इस गीत

को प्रस्तुत किया। उसके पश्चात् तत्वचिंतीका महासतीजी पू. श्री कल्पदर्शनाजी म. ने अपने विचार प्रस्तुत किये उन्होंने कहा कि युवाचार्यश्रीजी बचपन से ही पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में रहे और उन्होंने बहुत ज्ञान अर्जित किया है। इसके पश्चात् आचार्य भगवंत डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. का आगमन हुआ। आचार्य भगवंत के आगमन पश्चात् आचार्य भगवंत ने शुभकामना देकर कहा कि आज युवाचार्यश्रीजी का स्वर्ण जन्मोत्सव है इस जन्मोत्सव पर मेरी भावना है कि आज आप जितने भी लोग आये हो सभी मूक प्राणियों के दान के लिए कुछ न कुछ करें। 5 मिनट में करीब 6 लाख रुपये एकत्रित हो गये। उसी समय श्रीमती अर्चना चिटणीस, मंत्री महिला बाल कल्याण म.प्र. शासन भी पहुंचे। उन्होंने भी युवाचार्य प्रवर को जन्मदिन की बधाई दी एवं जैन धर्म को सर्वश्रेष्ठ बताया, जैन धर्म की कई बातें कहीं। इंदौर के ख्यातनाम डॉ. श्री राजीव चौधरी को **"समाज शिरोमणी"** के पद से गौरवान्वित किया गया। इंदौर में विराजित सभी साधु-साध्वीयों की जो गुप्तरुप से सेवा करती है ऐसी सुश्राविका मंजुलाबहन बोटादरा को **"वात्सल्य वारिधि"** इस पद से अलंकृत किया गया। अभय प्रशाल जहां शिवाचार्य समवशरण बना हुआ है इसके मालिक श्री अभयजी छजलानी को भी पद से नावाजा गया।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शशिकांत 'पिंटु' कर्नावट जैन ने संतो की जो युवा सेवा करते है उनका सन्मान होना चाहिए इस के उद्देश्य से '**श्री आनंद-शिव-महेन्द्र श्रेष्ठ सेवा पुरस्कार**' अवार्ड की घोषणा की। प्रथम वर्ष का राष्ट्रीय सम्मान पुणे निवासी श्री आदेशजी खिंवसरा को दिया गया एवं प्रांतीय सम्मान अवार्ड छत्तीसगढ़ रायपुर निवासी श्री अनिलजी कुचेरिया, मनमाड निवासी श्री दीपकजी मुनोत, रोहतक निवासी श्री विवेकजी जैन एवं बैंगलोर हनुमंतनगर निवासी श्री राजेशजी गोलेच्छा को प्रदान किया गया। संपूर्ण सभा हर्ष-हर्ष जयकारो से गुंजीत हुई। युवाचार्य प्रवर द्वारा स्वरचित एवं संग्रहित किये हुए 500 भजनों की किताब **"आनंद स्वर लहरिया"** का विमोचन प्रकाशजी भटेवरा, महावीर जी दुग्गड़, सुवालालजी बोरा, श्री केशरीमलजी बुरड आदि के द्वारा हुआ। पुच्छिस्सुणं चित्र सहित एवं संपुट विधि सहित किताब का भी विमोचन हुआ। इसका विमोचन श्री शिरीषजी भंसाली, श्री राजेन्द्रजी भटेवरा श्री मदनभाई कोठारी के कर-कमलों से हुआ। श्री तिलोक छंद संग्रह इसके द्वितीय संस्करण का विमोचन भी नवरतनमलजी पिंचा, हिरालालजी पिंचा, केशरीमलजी बुरड़ के कर कमलों से हुआ। दक्षिण ज्योति डॉ. आदर्शज्योति जी म.सा. की सुशिष्या मधुर व्याख्यानी डॉ. श्री आत्मज्योति जी म.सा. द्वारा रचित पुस्तक **'आखिर क्यों'** का भी विमोचन हुआ। युवाचार्य भगवंत की स्केच-फ्रेम अपने हाथों से ब्यावर निवासी कु. रूचि. मेहता ने बनाई थी। उनकी भावना थी कि यह फ्रेम युवाचार्य प्रवर को वही अर्पण करेगा जो 75 आयंबिल करेगा। जैसे घोषणा हुई 3-4 नाम तुंरत आ गये। उन्होंने युवाचार्य श्रीजी को फ्रेम अर्पित की। फिर दूसरी इसी फ्रेम की बोली जीवदया के लिए हुई। नाशिक निवासी श्री राजूभाई धरीवाल ने बड़ी राशि देकर यह फ्रेम ग्रहण की। इस प्रसंग पर जितने भी जीवदया, सेवा आदि के कार्यक्रम हुए उसकी घोषणा श्री हस्तीमल जी झेलावत ने की। विदुषी श्री प्रमोदकंवरजी म.सा. की सुशिष्या महासतीजी श्री प्रेक्षाजी म.ने युवाचार्य प्रवर को मिले हुए अनेक पदों की चर्चा की। उपप्रवर्तिनी श्री बसंताकंवरजी म. की सुशिष्या प्रखरवक्ता श्री मंगलप्रभाजी म. ने युवाचार्यश्रीजी के सरलता की चर्चा की। उपप्रवर्तिनी श्री रमणिककंवरजी म. सा. की सुशिष्या मधुर व्याख्यानी श्री मंगलप्रभाजी म.सा. ने युवाचार्यश्री जी के बारे में काव्यरुप से अपनी अभिव्यक्ती दी। दक्षिण ज्योति पू. श्री डॉ. आदर्शज्योतिजी म. ने कहा कि बड़ी प्रसन्नता है आप हमारे भावी अनुशास्ता का स्वर्ण जन्म जयंती वर्ष है उनका जीवन पूज्य गुरु आनंद से प्रारंभ हुआ है। आज भी हमें उनकी

कई स्मृतियाँ उपस्थित है पर समय की अपनी मर्यादा है। श्री निशांतमुनिजी म. ने अपने मधुर कंठ से 'युवाचार्यश्रीजी का आया जन्मदिन' यह गीत प्रस्तुत किया।

पू. श्री हितेन्द्रऋषिजी म. ने लुधियाना की घटना को लेकर प्रारंभ करते हुए युवाचार्यश्रीजी की दीक्षा, गुरुसान्निध्य, सेवा आदि का उल्लेख किया। आज भी उनकी जो सेवा है उसे याद करते हुए कैसे उनके उपकारो को पूर्ण करुंगा यह बात कही। पू. श्री शमितमुनिजी म. ने युवाचार्य श्रीजी को मराठी में शुभकामना दी एवं कहा कि आपका आशीर्वाद हम पर निरंतर बरसता रहे एवं आचार्यश्रीजी से भी विनंती की कि वे महाराष्ट्र पधारें। श्री शुभममुनिजी म. ने युवाचार्यश्रीजी के ज्ञानगुण, मौन, विनय आदि कई गुणों की चर्चा की कहा कि आज भी युवाचार्यश्रीजी शनिवार मौन के दिन सीखे हुए ज्ञान को फेरते हैं। मंत्री पू. श्री शिरीषमुनि जी म. ने कहा कि युवाचार्य श्रीजी के जीवन से कई प्रेरणा मिलती है। आज मैं कहूंगा कि युवाचार्य श्रीजी ध्यान करते है वे इसी तरह निरंतर ध्यान साधना जो आचार्य भगवंत का स्वपन है उसे आगे बढ़ाते रहे।

प्रवर्तक पू. श्री प्रकाशमुनिजी म. ने मंजु शब्द से लेकर महेन्द्र शब्द की व्याख्या की और यह हमारे जिनशासन को अवश्य आगे बढायेंगे यह विश्वास दिलवाया। नागदा जंक्शन से आये आदर्शमंडल ने काव्यमय प्रस्तुति दी। श्रीमती रेणु जी जैन द्वारा निर्मित युवाचार्य श्री के जीवन आलेख की डॉक्युमेंटरी भी प्रदर्शित की गई। इसके पश्चात् श्री केशरीमलजी बुरड़ ने आचार्य भगवंत एवं युवाचार्य भगवंत को सोजत में होने वाले अक्षय तृतीया के पारणे के लिए आमंत्रित किया। छोटे बच्चे श्री आयुश पटवा इंदौर, खुश कोठारी बैंगलोर ने भी अपनी भावनाएं प्रस्तुत की। युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. ने फरमाया कि आज का दिन कृतज्ञता एवं कर्तव्यबोध का दिन है माता-पिता के अनंत उपकार है। जिन्होंने बचपन से ही गुरुदेव की बातें सुनाकर संस्कार दिय। अनंत उपकार है पूज्य गुरुदेव के जिन्होंने इस अनघड़ पत्थर को घड़ा। मेरी हर गलतियों को माफ कर ज्ञान-ध्यान में आगे बढ़ाया। आचार्य भगवंत के भी उपकार है कि उन्होंने मुझे इस पद के योग्य समझा जो कर्तव्य संघ का है उसे पूर्ण करने में अवश्य लक्ष्य रहेगा। प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनि जी म. का भी स्नेह प्यार इस वर्षावास में प्राप्त हुआ। मंत्री श्री शिरीषमुनिजी ने ऋषि फूड का ज्ञान कराया। शेष सभी छोटे संतो का भी स्नेह प्राप्त होते रहता है। आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. ने कहा कि जन्म-मरण तो इस शरीर का होता है। आत्मा अजर अमर है। माता-पिता के संस्कारो ने एवं इनके विनयता ने उन्हें इस पद के योग्य बनाया। आप सभी दूर-दूर से आये हो मेरी एक ही भावना है कि आप सभी आवश्य एक दिन या चार दिन का ध्यान शिविर करें तभी आपका आना सार्थक होगा। जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा ने अच्छा कार्य प्रारंभ क़िया है अवश्य सेवा का ऐसा ही कार्य युवा करते रहें। 4 तारीख को भी महावीर नगर महिला मंडल ने युवाचार्य श्रीजी के जन्म से लेकर युवाचार्य पद तक की नाटिका टी.वी. शो के माध्यम से प्रस्तुत की। पंछियों को आजाद करना, गरीबो को भोजन कराना, स्कूल के बच्चों को नोटबुक वितरित करना आदि कई सेवा के कार्य हुए। सभी के लिए गौतमप्रसादी की व्यवस्था श्रीसंघ की ओर से की गई थी। **प्रेषक : कपिल जैन**

आचार्य युवाचार्य जयंती उत्सव हर्षोल्हास में संपन्न

इंदौर (मध्य प्रदेश) : श्रमण संघीय विद्यमान आचार्य पू. डॉ. श्री शिवमुनीजी म. सा. जन्म हीरक जयंती महोत्सव तथा युवाचार्य प. पू. श्री महेंद्रऋषिजी म.सा. स्वर्ण जन्म दिवस वर्ष दिनांक 2 अक्टूम्बर को पूरे भारतवर्ष मे मनाया गया। इस पावन उपलक्ष पर श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ

इचलकरंजी में विराजित परम पूज्य श्री सत्यसाधना जी म. आदि ठाणा-9 में तपचक्रेश्वरी पू. श्री अरुणप्रभाजी म. के 121 आयंबिल के पूर्णाहुती पर आयंबिल और उपवास का आयोजन किया गया। इंदौर श्री संघ द्वारा गुरुदेव सेवा मंडल के पास आयोजन की जिम्मेदारी दी गयी थी। अनुसार 150 आयंबिल और 10 उपवास की तपसाधना हुई। आयंबिल छोड़ने की व्यवस्था श्री संघ के द्वारा राजस्थान भवन मे की गयी थी। तपस्वीयों को श्री गुरुदेव सेवा मंडल, श्रीमती निर्मलाबाई बापुलालजी चंगेडिया, राजेंद्र कुंदनमलजी बोरा, स्व. राजेंद्रजी श्रीमलजी पटवा चॅरिटेबल ट्रस्ट द्वारा भेटवस्तू श्री संघ के अध्यक्ष पदमचंदजी खाबिया,उगमजी गांधी, जीवनजी पुनमीया, अशोकजी सालेचा, राजस्थान भवन के अध्यक्ष नरेंद्रजी चौधरी के करकमलों द्वारा प्रदान की गयी। कार्यक्रम के नियोजन में गुरुदेव सेवा मंडल के श्रीकांत चंगेडिया, राजेंद्र बोरा, सुमतीलाल रुणवाल, योगेश भळगट, संजय गुगळे जय आनंद, विलास गाँधी, अशोक गांधी, विनोद मुथा, मनोज मुनोत, अतिश भळगट, आदेश कटारिया, सुशील भंडारी, अमित पटवा, संपत गांधी, दिलीप चंगेडिया, हर्षल बोरा, नितीन बोरा, संजय गुगळे सो अँड सो, लाभम भळगट, स्वप्नील चंगेडिया, हर्षल सुरपुरिया, निखिल भंडारी, आनंद चंगेडिया, पंकज बाबेल, अभिजित पटवा आदि का योगदान दिया। **प्रेषक : अभिजीत पटवा**

पू. श्री रूपेंद्रमुनिजी म. सा. की पुण्यतिथि हर्षोल्लास से मनाई गई

बखतगढ़ (मध्य प्रदेश) : श्रमण संघीय सलाहकार करुणामूर्ति पूज्यश्री रूपेंद्रमुनिजी म.सा. की पुण्यतिथि मध्य प्रदेश सहित गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, विदर्भ आदि कई प्रांतो में जप तप, त्याग, प्रत्याख्यान एवं धर्म ज्ञान आराधना से मनाई गई। स्मरण रहे करुणामूर्ति मुनिश्रीजी जिनशासन गौरव आचार्य पूज्यश्री उमेशमुनिजी म.सा. के गुरु भ्राता थे। आचार्यश्री ने अपने संयमी जीवन की आराधना करते हुए गुरु भ्राता की उनके अंतिम समय तक समर्पण भाव से खूब सेवा की थी। अखिल भारतीय श्रीधर्मदास स्थानकवासी जैन युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री देवेंद्रजी गादिया, महामंत्री श्री रूपेशजी बुरड़ एवं युवा संगठन स्थानीय शाखा अध्यक्ष श्री नीलेशजी पटवा ने बताया कि महापुरुषजी की पुण्यतिथि प्रसंग पर श्री धर्मदास गण परिषद के देशभर के जगह-जगह वर्षावास स्थलों सहित श्रीसंघों में तप-ज्ञान ,आराधना के साथ महामंत्र के जाप, साधर्मी सेवा, मानव सेवा, धार्मिक गतिविधियां, गुणानुवाद सभा आदि आयोजित कर उनके गुणों को आत्मसात करने के भाव से स्मरण किया गया। मुख्य समारोह मेघनगर में वर्षावास हेतु विराजित आचार्यश्री के प्रथम शिष्य एवं गणनायक प्रवर्तक पूज्यश्री जिनेंद्रमुनिजी म.सा. ठाणा-4, साध्वी पूज्या श्री निखिलशीलाजी म.सा, पूज्याश्री श्रीकांताजी म.सा. ठाणा-7 के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कई स्थानों से गुरु भक्तों ने पहुंचकर दर्शन, मांगलिक, व्याख्यान आदि का लाभ लिया। चारित्र आत्माओं ने नियमित धर्म, ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। **प्रेषक : दिलीप दर्डा**

ऑक्सीजन मशीन भेंट की गई

खरगौन (मध्य प्रदेश) : मध्य प्रदेश जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से आचार्य डॉ. शिव मुनि जी म. सा. की हीरक जयंती के शुभ अवसर पर खरगोन जिला के करही गांव में सरकारी हॉस्पिटल को एक ऑक्सीजन मशीन भेंट की गई। जिसका उपयोग एक नवजात शिशु के जन्म के समय ऑक्सीजन की आवश्यकता होने पर उपयोग में लाया जायागा। मध्य प्रदेश जैन कॉन्फ्रेंस के प्रांतीय अध्यक्ष श्री विमल जी तांतेड़ ने बताया कि पाँच आक्सीजन मशीन अलग-अलग क्षेत्रों में अस्पतालों में दानदाताओं के सहयोग से देने का लक्ष्य रखा गया है। इस पुनीत कार्य में अपने धन का सहयोग प्रदान करके मध्य प्रदेश जैन कॉन्फ्रेंस का गौरव बढ़ावें। इस मानव सेवा के इस पुनीत कार्य में आप अपनाप योगदान दे सकते हैं। **प्रेषक : संजय नवलखा**

केसरीमल बुरड़ जैन समारोह समिति के अध्यक्ष बने

बैंगलूरु (कर्नाटक) : श्रमण संघ के मरुधर केसरी पू. श्री मिश्रीमल जी म. की दीक्षा शताब्दी वर्ष एवं शेरे राजस्थान वरिष्ठ प्रवर्तक पू. श्री रुपमुनि जी म. 'रजत' के दीक्षा हीरक वर्ष मनाने के लिए एक अक्टूबर को जोधपुर में पू. श्री रुपमुनि जी म. के सान्निध्य में समारोह समिति का गठन किया गया। जिसमें बैंगलुरु निवासी श्री केसरीमल बुरड़ जैन को समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। यह समिति 2018 में दीक्षा शताब्दी वर्ष मनाएगी तथा उस उपलक्ष्य में राजस्थान के सोजत में अक्षय तृतीया के मौके पर राष्ट्रीय स्तर का पाँच दिवसीय आयोजन करेगी। जिसमें 1008 वर्षीतप पारणे व अन्य कार्यक्रम शामिल हैं। पू. श्री रुपमुनि जी म. ने श्री केसरीमलजी बुरड़ जैन को यह जिम्मेदारी सौंपते हुए कहा कि इस आयोजन को विशाल बनाने की जिम्मेदारी व सोजत में एक छोटा साधु-सम्मेलन करवाने की जिम्मेदारी तुम्हारी है। ज्ञातव्य है कि श्री बुरड़जी पहले भी कई राष्ट्रीय स्तर की जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन कर चुके हैं। उनके मनोनयन से बैंगलूरू के स्थानकवासी सम्प्रदाय में खुशी की लहर है। इस मौके पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, मुख्य युवा संरक्षक श्री पारसजी मोदी जैन आदि राष्ट्रीय पदाधिकारी उपस्थित थे। ज्ञातव्य है कि श्री केसरीमलजी बुरड़ परिवार द्वारा पुणे, इंदौर, मोहनखेड़ा, भोपाल आदि में विराजित संतों के दर्शनार्थ 300 यात्रियों का एक संघ ले जाया गया था।

प्रेषक : पारस मोदी जैन

आत्म-शुक्ल-शिव अमर जन्म जयंती समारोह मनाया गया

पश्चिम विहार (दिल्ली) : पश्चिम विहार दिल्ली में पूज्य गुरुदेव उप-प्रवर्तक श्री सुकन मुनि जी म. के पावन सान्निध्य में आत्म-शुक्ल-शिव अमर जन्म जयंती के पावन अवसर पर फ्री जांच शिविर एवं सामूहिक जाप का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर उत्तर भारतीय प्रवर्तिनी पूज्या डॉ. सरिता जी म., दिव्य साधिका पू. श्री रश्मि जी म., पू. डॉ. सूर्या जी म., विदुषी पू. साध्वी श्री आरती जी म. आदि ठाणा एवं पू. श्री सुदर्शन जी म., पू. श्री विकसित मुनि जी म. ने पधारकर अपने-अपने विचारों से गुरु भगवंतों के जनम जयंती शुभ कामनाएं दी। सरस्वती सीनियर सैकेण्डरी स्कूल समालखा के बच्चों ने दहेज प्रथा एवं तांत्रिकों से दूर रहने की शिक्षा नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत की। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के दिल्ली प्रांतीय महामंत्री श्री जसवंत जी जैन के साथ श्री सुरेश जी जैन, श्री ललित जी ओसवाल जैन, श्री राजकुमार जी जैन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. डी. जैन जी, श्री मुन्नालाल जी जैन, श्री राय साहब जी, दिल्ली प्रदेश युवा अध्यक्ष श्री मनीषजी जैन, युवा महामंत्री श्री दीपकजी जैन आदिने पधाकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। समारोह की अध्यक्षता श्री अीय जी जैन ने की तथा ध्वजारोहण श्री अश्वनी जी जैन ने किया। स्वागताध्यक्ष श्री संजयजी जैन रहे तथा शिविर का उद्घाटन श्री राजेश जी जैन ने किया। गौतम प्रसादी श्री महावीर जी लोढ़ा जैन ने सौभाग्य प्राप्त किया। श्री नीरज जी गुप्ता लोकप्रिय निगम पार्षद ने राजकीय अतिथि के रूप में गरिमा बढ़ाई। कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने में श्री संघ एवं महिला मण्डल के समस्त कार्यकर्ताओं का सहयोग सराहनीय रहा।

प्रेषक : नरेन्द्र जैन

सवालाख मंगलकारी महाजाप सानंद सम्पन्न

बठिंडा (पंजाब) : एस. एस. जैन सभा रामा मंडी जिला बठिंडा पंजाब के तत्वावधान में उपप्रवर्तक महाश्रमण पंडित रत्न पू. श्री आनन्द मुनि जी म., प्रवचन दिवाकर पू. श्री दीपेश मुनिजी म., नवदीक्षित पू. श्री पार्थ मुनि जी के मांगलिक सान्निध्य में महामंत्र नवकार के बीज मंत्र का सवालाख मंगलकारी महाजाप सानंद सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर महाश्रमण गुरुदेव ने विशाल जन सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि जहाँ नवकार मंत्र का उचारण होता है वह जगह पवित्र हो जाती है वहाँ का वातावरण आलोकिक हो जाता है। उन्होने बताया कि नवकार के स्मरण मात्र से सघन कर्म बन्धन भी पल भर में निर्जरित हो जाते हैं। गुरुदेव ने स्थानीय श्रीसंघ को साधुवाद देते हुए रामां श्री संघ के अध्यक्ष श्री जिनेन्द्र जैन (मिठा) को 'समाज रत्न' के पद से अलंकृत किया और साथ ही वर्ष 2018 के चातुर्मास के लिए आई हुई विनंतियों में दिल्ली पंजाबी बाग,नरेला दिल्ली, हनुमान गढ़ डबवाली, चंडीगढ़, मानसा व पंचकुला को देखते हए, पुज्य प्रवर्तक श्री सुमन मुनि जी महाराज की आज्ञानुसार प्रवर्तक श्री जी के साथ वर्ष 2018 का चातुर्मास पंचकुला करने की उदघोषणा की इस जाप मे मुख्य अतिथी श्री अमरजीत सिंह सिद्धु पै रिटायर्ड पूर्व चेयरमैन मिलकफैड समारोह अध्यक्ष महिला गौरव सौ. शकुंतला देवी श्री रतन लाल जी गर्ग मोड मंडी स्वागत अध्यक्ष श्री संदीप जैन (अध्यक्ष मंगल देश) ध्वजारोहण की रस्म श्री राजेंद्र जी गर्ग डक शिवा इलेक्ट्रिकल विक्रम बाग हिमाचल ने की नवकार दरबार का अनावरण श्री लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल दिल्ली ने किया, प्रभु ऋषभ दरबार का अनावरण श्री राम निवास जी जैन सोनीपत, प्रभु पारस दरबार का अनावरण श्री नरेश जी जैन सोनीपत, प्रभु महावीर दरबार का श्री अक्षय-दीपा जैन मेरठ ने, श्री खुशहाल दरबार का विजेन्द्र-नरेन्द्र जैन सोनीपत ने, आचार्य शिव दरबार का अनावरण श्री भारत भूषण जैन यमुना नगर, गुरु हेम दरबार का पवन जैन मुजफ्फरनगर ने,गुरु सुमन दरबार का श्री केवल कृष्ण गर्ग मौड मंडी ने और गुरु आनंद दरबार का अनावरण श्री अक्ष जैन गुडगांव ने किया। गौतम प्रसादी का लाभ श्री निर्मल औसवाल (महामंत्री रामां श्री संघ) ने प्राप्त किया। कार्यक्रम का प्रारंभ मास्टर आदर्श जैन ने जय जिनेंद्र गीत गाकर की। इस दौरान चंदन बाला महिला मंडल व तरुणी मंडल ने सुन्दर गीतों की प्रस्तुति की। स्थानीय बाल कलाकारों ने सती चन्दन बाला का भव्य नाटक पेश किया वही डी. ए. वी. स्कूल के बच्चो ने जैन पंजाबी भंगडा पेश किया। मुख्य अतिथी श्री अमरजीत सिंह सिद्धु ने धर्म सभा मे उपस्थित लोगों को जैन धर्म के बारे मे अपना वक्तव्य पेश किया। श्री महेन्द्रजी बोकरिया जैन (कोषाध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस) जय कुमार जैन (मंत्री जैन कॉन्फ्रेंस) विनय जैन (अध्यक्ष कॉन्फ्रेंस हरियाणा) राजेन्द्र जैन (महामंत्री कॉन्फ्रेंस हरियाणा) ने अपने सुन्दर विचार रखे। दिल्ली से परम गुरु भक्त शिखर चन्द जैन, सोनीपत के महामंत्री त्रिलोक चन्द जैन,व दिल्ली,हरियाणा पंजाब अनेक श्री संघों ने गुरु चरणों विनंती रखी। रामा श्री संघ ने कार्यक्रम के सुत्रधार प्रवचन दिवाकर श्री दीपेश मुनि जी म. को 'श्रमण रत्न' की उपाधी दी। इस दौरान बठिंडा, मानसा, सरदूलगढ़, गिदड़बाहा, झुंबा, रानियां सिरसा, गंगा नगर, फतेहाबाद, सोनीपत, दिल्ली, चंडीगढ़ पंचकूला, मोड़, ओढा, रतिया, तलवंडी साबो, पटियाला, मोगा, लुधियाना, बडोत, चरखी दादरी आदि कई राज्यों से श्री संघ एवं गुरुभक्तगणों ने पहुँच कर श्रद्धा व्यक्त की । रामा श्री संघ के सरपरस्त श्री हेमराज जैन, प्रधान जिनेंद्र जैन, उप प्रधान अनिल जैन बाबेल, उप प्रधान मोहित जैन, महामंत्री निर्मल जैन, मंत्री रविंद्र जैन, कोषाध्यक्ष जीत जैन ने बाहर से आये हुए श्री संघों और सभा मे उपस्थित वरिष्ठ महानुभावों को सन्मान चिन्ह देकर सम्मानित किया। समारोह के अन्त में लक्की ड्रॉ द्वारा चाँदी की माला निकाली गई।

प्रेषक : जिनेन्द्र जैन

गढ़ सिवाना में गुरु पुष्कर जन्म जंयति समारोह सानंद सम्पन्न

गढ़ सिवाना (राजस्थान) : प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी उपाध्याय पू. श्री रमेश मुनि जी म., प्रवर्तक गुरुदेव डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी म., साहित्य दिवाकर पू. श्री सुरेन्द्र मुनि जी म. सेवाभावी पू. श्री दिपेश मुनि जी एव महासाध्वी उप-प्रवर्तिनी पू. श्री चरित्रप्रभा जी आदि एवं मूर्ति पूजक संत-साध्वी जी के पावन पुनीत सान्निध्य एवं बाहर से पधारे हजारों श्रावक गुरुभक्त जनों की पावन उपस्थिति में गुरुपुष्कर जयंती का मंगलमय कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ। समारोह के अध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन के साथ श्री पारसजी मोदी जैन मुंबई, श्री बालासाहेबजी चोरडिया जैन, श्री बालचंद खरवड़ जैन के साथ ही महिला कॉन्फ्रेंस अध्यक्षा सौ. रुचिरा सुराणाजी, महामंत्री विनीताजी ओरडिया जैन, कोषाध्यक्ष मंजुजी दर्डा जैन आदि अतिथि दीर्घा में विराजमान थे तो गौरव के मंच पर महामंडलेश्वर स्वामी श्री राहुलेश्वरानंद जी म. विराजमान थे।

राजकीय अतिथियों में पूर्व प्रधान ठाकुर चक्रवर्ती सिंह जी मंत्री गोपाराम जी मेघवाल विधायक श्री कानसिंह जी के साथ स्थानीय पंचायत समिति के प्रधान सरपंच आदि सभी गणमान्य महानुभावों के अलावा सुशोभित पंडाल में दिल्ली, जयपुर, चंडीगढ़, गुड़गांव, मद्रास, बैंगलूरू, अहमदाबाद, सूरत, वसई, बड़ौदा, उदयपुर,भीलवाड़ा, जोधपुर, पाली, आसींद सवाई माधोपुर, कोटा, किशनगढ़, मदनगंज, पीपाड़ आदि नगरों से श्रावकों की भव्य भक्ति भावना के साथ सर्व प्रथम सामुहिक नवकार महामंत्र का जाप प्रारंभ किया गया। तत्पश्चात महासाध्वी जिनाज्ञा श्रीजी इशिता श्रीजी प्रतिक्षा श्रीजी व चरित्रप्रभा जी द्वारा मंगलमय जन्म जयंती गीव व प्रवचन प्रदान कर गुरु पुष्कर के प्रति श्रद्धा भक्ति समर्पित की गई विभिन्न श्रीसंघों के प्रमुख जनों ने गुरु पुष्कर गुणानुवाद एवं विराजमान गुरुदेव के चरणों में अगले चातुर्मास के विनती भाव समर्पित किए। इसी के साथ श्री संघ सिवाना द्वारा चातुर्मास के लाभार्थी परिवार बाबूलाल जी रांका एवं अशोककुमार जी रांका का तथा गुरु पुष्कर जन्म जयंती नवकारसी के लाभार्थी वयोवृद्ध श्रावक देवी चंद जी कानूनगो परिवार के सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन किया। दिल्ली के नवकार तीर्थ के श्री डी.सी. महेन्द्र जी दोषी राजकुमार जी भण्डी आदि द्वारा समाज रत्न अशोकजी रांका का विशेष अभिनंदन किया गया। विराजमान समस्त श्रीसंघों का एवं कांफ्रेंस अधिकारीजनों का एवं मुख्यरुप से पधारे स्वामी जी म. का शाब्दिक वह शॉल माला मोमेंटो साफा आद्रि से सम्मान करने के बाद जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से श्री बालचंद जी खरवड़, सौ. रूचिरा सुराणा, विनीता जी ओरडिया ने अपने विशेष भाव प्रकट किए। ठाकुर चक्रवर्ती सिंह जी ने राखी चातुर्मास का स्मरण करते हुए गुरु पुष्कर एवं जैन धर्म के महत्त्व पर प्रकाश ड़ाला। अंत में स्वामी जी म. के द्वारा गुरु पुष्कर के साथ अपने निजी अनुभव का विशेष मंत्र पाठ का स्मरण किया गया। स्वागताध्यक्ष उद्योगपति श्री घंवरचंद कानूनगो ने समाज का आभार अभिनंदन प्रदर्शन किया। गुरुभक्त सुकनराज धारीराज ने गुरुदेव को जोधपुर में पुष्कर धाम के लिए प्रार्थना की। इस भव्य समारोज में साहित्य दिवाकर पू. श्री सुरेन्द्र मुनि जी म. द्वारा लिखित **'आचार्य देवेन्द्र मुनिः ए लीजेंड्री जैन संत'** अंग्रेजी पुस्तक का विमोचन उदारमना दानदाता गुरुभक्तों द्वारा किया गया। जैन आचार्य देवेन्द्र मुनि जी श्रमण संघ के महान आचार्य पद पर विराजमान रहे चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत ग्रंथ में उनकी जीवनी का संदरतम वर्णन किय गया है। डॉ. दिव्यप्रभाजी की सेवा में ज्ञान ध्यान रत मुमुक्षु आत्मा पूजा जैन का श्रावक संघ का जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा सार्वजनिक अभिनंदन किया गया एवं दीक्षा गीतों का भी

आयोजन संपन्न किया गया। जन्म जयंती के अवसर पर सामुहिक ऐकाशन वृत एवं सामायिक आराधना से सम्पन्न की गई। कार्यक्रम को सफल बनाने में सिवाना के प्रवासी पारसमलजी जिनाणी श्री पुखराजजी जिनाणी श्रभ बाबूलाल जी लुकड, अशोकजी महेन्द्रजी राका श्री केसरीमल जी चोपड़ा।

खिवराज जिनाणीः- डूंगर जी जिनाणी राजमल जी भरत जी कानूनगो श्रीमदनजी सुमितजी मेहता जी श्री लक्ष्मीलाल जी कोठारी राजेन्द्र जी, श्री जोगेन्द्रजी रांका, श्री शांतिलाल जी छाजेड़, श्री जेवरचंदजी का अनुभव श्री मोतीलालजी बाला वाले श्री महेन्द्रजी जैन का सहयोग सराहनीय रहा। **प्रेषक : खींवराज जिन्नानी**

ध्यान प्रभावना

इंदौर (मध्य प्रदेश) : आत्म ज्ञानी सद्गुरुदेव शिवाचार्य भगवन के सान्निध्य में सप्तदिवसीय आत्म ध्यान साधना षिविर इंदौर में 10-09-2017 से 17-09-2017 तक हुआ। जिसमें देश भर से आये हुए गम्भीर साधकों ने आत्म ध्यान की गहन साधना की। इस शिविर में चेन्नई, हैदराबाद, पुणे, मुंबई, नाशिक, शिरड़ी, औरंगाबाद, अहमदनगर, सूरत, भीलवाड़ा, उदयपुर, इंदौर, जयपुर, दिल्ली, लुधियाना, जालंधर, पटियाला, सिरसा, अंबाला, करनाल, जम्मू आदि क्षेत्रों से आए हुए साधको ने आत्म बोध की साधना में परिपक्वता प्राप्त करते हुए सत्य की शोध की। यह ध्यान शिविर सत्य की शोध का पराक्रम था सभी ने अपने भीतर आत्म तत्व की खोज की। सभी ने आत्मा पर लगे हुए कर्मो कि निर्जरा की। अपने मिथ्यात्व को तोड़कर सम्यकत्व में परिवर्तित किया। सम्यकत्व को क्षायिक समकित में परिवर्तित करने के लिए वीतराग वाणी के माध्यम से जो वीतराग साधिका निशा जी के पराक्रम से चतुर्थ आरे की साधना का इस भरत क्षेत्र में प्राप्त हुई, उस हेतु सभी ने भरपूर प्रयास किया। यह शिविर 10-09-2017 को सायकाल 5:00 बजे शुरु होकर अंतिम दिवस प्रातःकाल 08:00 बजे पूर्ण हुआ। इस शिविर में साधको ने गम्भीर मौन का पालन करते हुए दो से ढ़ाई घण्टे तक एक आसन में ध्यान के प्रयोग करते हुए आत्म ध्यान व भेद-विज्ञान की साधना की। स्वाध्याय मे शिवाचार्य भगवन ने मोहकर्म को तोड़ने के विभिन्न प्रयोग समझाते हुए पराक्रम की प्रेरणा दी। वही पर प्रातःकाल इष्टोपदेश पर स्वाध्याय प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीश मुनिजी म. द्वारा करवाया गया। श्रावक दीक्षा 25-30 साधको ने ग्रहण की, 180 शिवरार्थियो में से लगभग 150 श्रावको ने श्रावक दीक्षा पूर्व में ग्रहण की हुई थी। सम्पूर्ण जैन दर्शन का व्यवहारिक, आध्यात्मिक और प्रयोगात्मक प्रशिक्षण करवाया गया। मिथ्यात्व को तोड़कर जीव-अजीव का बोध करवाकर आश्रव से सवंर निर्जरा करते हुए मुक्ति की साधना करवाई गई। बारह प्रकार के तपो की आराधना की गई, काफी साधकों ने उपवास, बेले, तेले, पोषध व्रत आदि तपस्याए भी की। साधकों ने इन सात दिनों मे साधना करते हुए अनमोल निर्जरा का लाभ लिया। इंदौर श्रीसंघ की सेवाएं सराहनीय रही।

बेसिक एवं चार दिवसीय गंभीर शिविर- 29-9-2017 को एक दिवसीय बेसिक शिविर का आयोजन किया। जिसमे लगभग 325 साधको ने भाग लिया, उनको दृष्टि परिवर्तन करते हुए आत्म बोध करवाया गया। मै कौन हूं, मै कहां से आया हूं? क्या है मेरा स्वरूप? जीवन का लक्ष्य क्या है? प्रथम सत्र प्रातः 10:30 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक चला। जिसमे प्रार्थना, प्रार्थना का महत्व, सोश्म ध्यानविधि, कोश्म का प्रयोग, योग आसन आदि करवाये गये। द्वितीय सत्र मे भोजनोपरांत योग निद्रा मे आत्मा का बोध कराने के बाद भेद विज्ञान के द्वारा मोह कर्म को तोड़ने की कला सिखायी गई। स्वास्थ्य, शक्ति, आनंद, ज्ञान व प्रेम इन पाँच सूत्रों के रहस्य बतायें गये। आलोचना के माध्यम से भूतकाल के कर्मो की शुद्धि एवं प्रायश्चित करवाया गया। सभी साधको को ध्यान से

ज्ञान पुस्तक, कोश्ष्म सी.डी. आदि साहित्य प्रदान किया गया। सहयोगी के रुप में साधक श्री सुशील जैन, गौरव जैन, अंकुर जैन आदि की सेवाएं सराहनीय रही। दिनांक 30-09-2017 से 03-10-2017 तक चार दिवसीय गम्भीर शिविर का आयोजन हुआ। जिसमे 326 साधको ने भाग लिया। इस शिविर मे पुरे देशभर से आये हुए साधको ने जैन दर्शन की साधना का प्रयोग करते हुए भगवान महावीर आदि तीर्थंकरो की साधना का प्रयोग किया। इस शिविर मे 46 साधको ने श्रावक दीक्षा ग्रहण की। **प्रेषक : कपिल जैन**

प्रथम चातुर्मास आनंद ही आनंद

पंढ़रपुर (महाराष्ट्र) : पुण्योदय से हमारे यहां पर श्रमण संघीय आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषि जी म. एवं कर्नाटक गजकेसरी श्री गणेशलाल जी म. एवं स्व. पू. श्री बिरदीकंवर जी म. की सुशिष्या शासन प्रभाविका श्री दिलीपकंवर जी म. आदि ठाणा-4 चातुर्मास के लिए पधारे हैं। हमारा यह प्रथम चातुर्मास है। हमारे संघ में उत्साह छा गया है। जबसे सतियाजी का आगमन हुआ है। प्रवचन धारा बह रही है। प्रवचन में पू. श्री भक्तिप्रभा जी म. 'कर्मों का रंग' यह सीरियल फ़रमाते हैं और साथ में पू. श्री अरुण प्रभा जी म. अपनी सुमुधुर आवाज़ से संगीत द्वारा लोगों का मन प्रफुल्लि कर देते हैं। यहाँ पर आज तक आनंद सजाह, रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस आदि कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास से मनाए गए। साथ ही तेले की और आयंबिल लड़ी निरंतर चल रही है। हर शुक्रवार माँ पदमावती के एकासना तप से मनाया जा रहा है। साथ-साथ 7,11,15 उपवास भी चल रहे हैं। दोपहर में महिलाओं के लिए नंदीसूत्र एवं विविध जानकारी के थोकड़े का ज्ञान और बच्चों की पाठशाला बड़े ही सुचारू रुप से चल रही है। रक्षाबंधन के उपलक्ष में भाई-भाई, बहन-भाई, सहेली-सहेली आदि ने सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे। चातुर्मास प्रवेश पर चांदा, घोड़ेगांव, अंबानोगाई, माजलगांव, आष्टी, धामनगांव, पुणे, औरंगाबाद, जालना, बदनापुर, वाबोरी, आदि जगह से भक्तगण गुरणी मैया के दर्शन के लिए धर्मसभा में सम्मिलित हुए। चातुर्मास बहुत सुंदर ढंग से चल रहा है। श्रावक संघ, नवयुवक मंडल, श्राविका मंडल, कन्यामंडल सभी में बहुत उत्साह छाया हुआ है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व तपस्याओं के साथ हर्षोल्लास से मनाया गया।

प्रेषक : चंद्रकांत चोरडिया

'सरित सुगंध' पुस्तिका का विमोचन

पुणे (महाराष्ट्र) : स्व प.पू. सरिताश्रीजी म. के जीवन पर प.पू. श्री वंदनाजी म. से सम्पादित पुस्तिका 'सरित सुगंध' का विमोचन राहाता जैन स्थानक में प.पू. श्री परागमुनि जी म.सा., प.पू. श्री मनोहरमुनि जी म., प.पू. श्री संयममुनि जी म. के सान्निध्य में डॉ. अशोक पगारिया, महामंत्री, सौ ललिता बंब, महिला उपाध्यक्ष प्रकाश बंब आदि महानुभावों के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। **प्रेषक : डॉ. अशोक कुमार पगारिया**

शहीद-ए-आजम भगत सिंह की जयंती पर 'युवा रत्न' सम्मान बांटे

नई दिल्ली: शहीद-ए-आजम भगत सिंह के 111वें जन्मदिवस के अवसर पर हिंदी भवन ऑडिटोरियम में आयोजित भव्य समारोह में समाज एवं राष्ट्र की विभिन्न क्षेत्र की प्रतिभाओं को **'युवा रत्न'** सम्मान बांटे गए। मोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से महान बलिदानी एवं क्रांतिकारी भगत सिंह की देशभक्ति की भावना को प्रभावी प्रस्तुति दी गई। अनेक गैरसरकारी संगठनों एवं सांस्कृतिक मंचों के द्वारा देशभक्ति के गीतों पर शानदार सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने मौजूद युवाओं में जोश भरा। भगत सिंह युवा क्रांति दल एवं सुखी परिवार

फाउंडेशन के द्वारा आयोजित इस समारोह में लोकसभा सांसद डॉ. साक्षी महाराज, सुखी परिवार अभियान के प्रणेता गणि राजेन्द्र विजय, शहीद-ए-आजम भगत सिंह के भतीजे श्री किरणजीत सिंह सिद्धू, अमर शहीद अशफाक उल्ला खां के पोते श्री अशफाक उल्ला, पत्रकार एवं साहित्यकार श्री ललित गर्ग, राजनीतिक सलाहकार श्री राज बहादुर, किसान यात्रा संदेश के संपादक पं. नरेन्द्र शर्मा, श्री सुरेन्द्र सिंह बिधूड़ी, बहुजन समाज पार्टी (बाबासाहब) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. बनारसी दास, मां योगशक्ति, डॉ. कमल टावरी आदि मौजूद थे। वक्ताओं ने इस अवसर पर महान क्रांतिकारी भगत सिंह को भारत रत्न से सम्मानित किये जाने, संसद परिसर में उनकी प्रतिमा स्थापित करने एवं उनके जन्म स्थान पर बन रहे संग्रहालय को यथाशीघ्र दर्शकों के लिए खोलने की मांग की। डॉ. साक्षी महाराज ने कहा कि देश जटिल हालातों से गुजर रहा है। लगता है एक और स्वतंत्रता संग्राम करना होगा। उन्होंने भगत सिंह की जन्म जयंती पर उनके जीवन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता व्यक्त करते हुए कहा कि हमें प्रधानमंत्री मोदी के स्वच्छ भारत अभियान जैसे जनकल्याणकारी कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सेदारी लेनी चाहिए। उन्होंने युवकों से आह्वान किया कि वे भगत सिंह की तरह क्रांतिकारी बनें, न कि आतंकवादी।

गणि राजेन्द्र विजय ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज भारत को सशक्त बनाने के लिए भगत सिंह का जोश एवं महात्मा गांधी की अहिंसा दोनों को समन्वित रुप से विकसित करना होगा। यह हमारे देश की राजनीतिक दुर्बलताएं एवं दुर्भावनाएं हैं कि आजादी के सात दशक बीत जाने के बाद भी हम भगत सिंह को भारत रत्न तक नहीं दे पाए। उन्होंने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य है कि आज के युवा भगत सिंह के निःस्वार्थ बलिदान के बारे में जाने और प्रेरणा लें। इससे उनमें राष्ट्रभक्ति की भावना प्रबल होगी और वे देश के अच्छे नागरिक बनेंगे। सुखी परिवार फाउंडेशन के राष्ट्रीय संयोजक श्री ललित गर्ग ने भगत सिंह की जीवन से जुड़ी घटनाओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुति दी। इस आयोजन की सफलता में भगत सिंह युवा क्रांति दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सिंह बागी, श्री सुरेन्द्र सिंह बिधूड़ी एवं पं. नरेन्द्र शर्मा का उल्लेखनीय योगदान रहा।

प्रेषक : बरुण कुमार सिंह

डायलिसिस के साथ ध्यान साधना उपक्रम का प्रारंभ

हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) : उपाध्याय पू. श्री प्रवीणऋषि जी म. के नेश्रा में भगवान् महावीर मेडिकल रिसर्च सेंटर हैदराबाद, भगवान महावीर डायलिसिस सेंटर, एवं अर्हम् विज्जा फाउंडेशन के संयुक्त प्रयास से डायलिसिस के साथ ध्यान-साधना का उपक्रम आरम्भ किया गया। भगवान महावीर डायलिसिस सेंटर के 800 से अधिक मरीज़ इस योजना से लाभान्वित होंगे। आनंदतीर्थ समवशरण टी-19 टॉवर्स रानी गंज, सिकंदराबाद में डायलिसिस मरीज के सेमीनार को संबोधित करते हुए उपाध्यायश्री ने कहा मैने भगवान महावीर रिसर्च हॉस्पीटल सेंटर में जाकर देखा कितनी पीड़ा से डायलिसीस मरीज़ गुजरते है। मनुष्य के शरीर में बहुत सामर्थय है। आत्मा में अनंत शक्ति है। ये शक्ति जागृत हुई तो उस सामर्थय का समस्या ये सुलझाने के लिये उपयोग किया जा सकता है। पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अग्नी पंच तत्वों से हमारा शरीर बना है। पांच तत्व में असंतुलन के कारण बीमारी आती है। इस असंतुलन को दूर कर पाये तो बीमारी दूर हो सकती है। आत्मा को विशुद्ध कराने के लिये पाँच रंग का ध्यान करते है। जैसे आसमाँ का धर्म नही होता, इस ध्यान का कोई धर्म नही है। कोई संप्रदाय नही। इसकी कोई पूजा पाठ, मंत्र नही। धूप-दीप या नैवेद्य चढ़ाना नही। किसी भी दिशा

में, किसी भी आसन में, किसी भी समय, कहीं पर भी इसे सहजता से किया जा सकता है। समय का बंधन नही। हमारी आत्मा ब्रह्म है और जब भी वो कार्य करती है वो ब्रह्म मुहुर्त है। श्रृद्धा या बिना श्रृद्धा से भी किया तो भी आप ठीक हो जायेंगे। श्रृद्धा आपको अतिरिक्त शक्ति देगी। जिस किसी भगवान से आप मानते है उन्हीं को याद कर साधना कर सकते है। जैसे सूरज कोई की शर्त नही, जो दुर्जन और सज्जन को भी उजाला देता है, पुरुषाकार ध्यान की भी कोई शर्त नही। जिस रुप में हमारी शुद्ध आत्मा होती है उस स्वयं के पुरुष आकार के प्रतीक चित्र का हम ध्यान करेंगे। आँख के माध्यम से हम ऊर्जा ग्रहण करेंगे। पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अग्नि पंच तत्व में जहाँ भी अंधेरा होगा वहाँ शरीर में आप स्वयं इस ऊर्जा को पहुंचाओगे। आँख बंद कर अलग-अलग रंग दिखेंगे। उस समय शरीर उस रंग को ग्रहण करेगा ओर बदलाव आरंभ हो जायेंगे। तनाव के कारण से मुख्यत: ये बीमारी शुरु होती है। जब आप ध्यान करेंगे तो आपका मन विचार रहित हो जायेगा। ऐसे तो हम विचारों को रोकना चाहे तो रोक नहीं सकते। जिस समय आँख बंद कर पुरुषाकार देखोगे, पूर्ण शरीर, मन और आपकी चेतना एक अलग उच्चाई पर पहुंचेगी। आत्मा की शक्ति को जागृत करने के लिये ध्यान साधना आवश्यक है। प्रतिदिन कम से कम 45 मिनिट ध्यान करना है, अधिकतम कोई सीमा नहीं।

उपाध्याय श्रीजी ने बताया इससे पूर्व पुणे में डायबिटीज़ रोगियों पर ध्यान साधना का प्रयोग किया गया। इसमें साठ प्रतिशत डायबिटीज़ रोगियों का शुगर लेवल संतुलित हुआ। ये कोई जादू-चमत्कार नही है, ये विज्ञान है जो आपके इच्छाशक्ति से, आत्मशक्ति से बीमारी दूर करता है। आत्मशक्ति के आधार पर स्वयं ही समस्या को दूर करना है। डायबिटीज़, कैंसर, लेप्रसी मरीज़ तथा गर्भ संस्कार पर प्रयोग हो चुके है और तपस्या के साधना में हम सतत् प्रयोग करते ही है। इस तमन्ना से ये प्रयोग हम आरंभ कर रहे है और मै परमात्मा से प्रार्थना करता हुं की आपका डासलिसिस बंद हो जाय। 15 वर्ष की साधना तथा अनुभव से मुझे विश्वास है आप जरूर स्वस्थ होंगे। इस प्रकल्प को क्रियान्वित करने हेतु पू उपाध्याय श्री प्रवीणऋषी जी म.सा.के मार्ग दर्शन में ट्रस्ट के श्री अशोक कोठारी, भगवान् महावीर मेडिकल रिसर्च सेंटर हैदराबाद के रिसर्च डायरेक्टर श्री पी. पी. रेड्डी तथा उनके सहकारी एवं पुरुषाकार पराक्रम ध्यान साधना, हैदराबाद के सौ. सपना कोठारी, नम्रता लुल्ला तथा उनकी टीम अथक परिश्रम कर रहे हैं। **प्रेषक : आनंदतीर्थ**

समय प्रबंधन ही जीवन का प्रबंधन है : पू. डॉ. चिंतनश्रीजी म.

उज्जैन (मध्य प्रदेश) : सुभाष नगर जैन स्थानक में चातुर्मास हेतु विराजित प. पू. गुरुवर्या, मेवाड़ सिंहनी श्री यशकंवर जी म. की सुशिष्या प्रज्ञामूति यशोदीप्ति महासाध्वी पू. श्री मधुकंवरजी म, सेवाभावी सरलमना पू. श्री प्रतिभाजी म. और स्वरकोकिला वांणी विभूषा डॉ. पू. श्री चिंतनश्रीजी म. अपने ज्ञान, ध्यान, संयम, तप व चारित्र की आलौकिक ऊर्जा से पूरे परिक्षेत्र को पावन कर रही है। आप महासतियें के प्रवचन आध्यात्मिक चिंतन के साथ ही घर-परिवार व समाज में व्याप्त कुरीतियों, बुराईयों और धर्म संस्कारों से विमुख हो रहे युवा वर्ग के लिये सुधारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

समय कालचक्र पू. महासती डॉ. चिंतनश्रीजी ने अपने सारगर्भित प्रवचन के माध्यम से समय के उपयोग व उसके सार्थक प्रयोगों पर कैसे क्रियान्वयन हो इस पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। समय एक अवसर होता है, परिवर्तन होता है। समय को पकड़ा नहीं जा सकता, वह वापस लौटकर नहीं आता। समय रुकता नहीं है, वह भेदभाव नहीं करता। समय सभी को प्राप्त होता है। समस होता है परंतु अनेक अवसरों

पर हमकों उसकी समझ नहीं होती है। समय प्रबंधन की बहुत चर्चा होती है। समय के पल-पल का प्रत्येक क्षेत्र अवस्था, और व्यवस्था मैं कैसे सदुपयोग हो, यह महत्त्वपूर्ण हैं समय का वास्तविक नियमन, उपयोग व प्रबंधन बाल्यकाल से ही प्रारंभ हो जाना चाहिए। विद्या के क्षेत्र में ज्ञान अर्जित करने और जीवन को सुसंस्कारित बनाने में समय को आधार बनाकर आगे बढ़ने से उपादेयता स्वयं उपलब्ध होगी। आचार्य श्री आनंद ऋषिजी म. ने कहा था 'समय कम और मंजिल दूर'। ये शब्द चिंतन को जागृत कर देते हैं।

भगवान महावीर ने अपने परम शिष्य गौतम के माध्यम से मानव मात्र व सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था को देशना, संदेश व सारतत्व का प्रकटीकरण करते हुए कहा था-

दुल्लहे खलु माणुसे भवे, चिरकालेण विं सव्वपाणिणं,
गाठाय विवाग कम्मुणों, समयं गोयम या पमायए।।

समय मात्र का प्रमाद मत करो। प्रमाद क्यों नहीं करना? इसके उत्तर में कहा है - मनुष्य जन्म की प्राप्ति होना अत्यंत दुलर्भ है। अन्य-अन्य शरीर तो फिर भी मिल सकते हैं किन्तु मानव शरीर मिलना और उच्च कुल में जन्म लेना तथा पाँचों इन्द्रियों का परिपूर्ण होना अत्यंत कठिन है। पुण्य के अभाव में ये सब बातें मिलनी महामुश्किल है। इसलिये कहा गया है कि समय मात्र का भी प्रमाद मत करो तथा जीवन के प्रत्येक पल को सार्थक बनाने का प्रयत्न करो।

प्रेषक : प्रेमचंद बापना जैन

श्रीमती पुष्पलता कटारिया जैन उत्कृष्ट जिला गौरव सम्मान से सम्मानित

उज्जैन (मध्य प्रदेश) : जैन कॉन्फ्रेंस की महिला शाखा द्वारा मन्दसौर में आयोजित प्रांतीय सम्मेलन में उज्जैन जिला शाखा की अध्यक्षा श्रीमती पुष्पलता कटारिया जैन को उत्कृष्ट जिला गौरव के सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान मन्दसौर में राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती रूचिराजी सुराणा जैन, मध्य प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष श्री विमलजी तांतेड़ जैन की उपस्थिति में महिला शाखा की प्रांतीय अध्यक्षा श्रीमती शशिजी मारु जैन, महामंत्री श्रीमती आशाजी साम्भर जैन एवं कोषाध्यक्षा श्रीमती मनीषाजी मेहता जैन द्वारा प्रदान कियागया। इस अवसरपर उज्जैन जिला महिला शाखा के पदाधिकारी महमंत्री निर्मला जी कांठेड़ जैन, कोषाध्यक्षा श्रीमती प्रेमलता जी सेठिया जैन, उपाध्यक्षा श्रीमती अर्चना जी बाफना जैन, श्रीमती आशाजी सेठिया जैन आदि उपस्थित थे।

प्रेषक : प्रतीक जैन 'सीए'

जरुरतमंद परिवारों को राशन एवं मिठाई बांटी गई

लुधियाना (पंजाब) : महिला शाखा भगवान महावीर सेवा सोसायटी रजि. द्वारा राशन वितरण समारोह सिविल लाईन्ज के प्रांगण में आयोजित किया गया। समारोह का शुभारंभ महामंत्र नवकार के सामूहिक जाप से शुरु हुआ। भगवान महावीर स्वामी गये निर्वाण गौतम स्वामी पाया केवल ज्ञान (दीपावली) के उपलक्ष्य में ३२ जरुरतमंद परिवारों को राशन एवं मिठाई बांटी गई। महिला शाखा भगवान महावीर सेवा सोसायटी की प्रधान श्रीमती नीलम जी जैन, महामंत्री सौ. रीचा जी जैन ने बताया कि दीपावली के उपलक्ष्य में असहाय एवं जरुरतमंद परिवारों को जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी जी ने दीपावली के दिन निर्वाण प्राप्त एवं गौतम स्वामी जी ने आज ही के दिन केवल ज्ञान पाया था। ये दिन जैन समाज के लिए बहुत ही खुशी का दिन होता है। इस अवसर पर श्री राकेशजी, श्री राजेशजी, श्री सुनीलजी जैन आदि उपस्थित थे।

प्रेषक : रीचा जैन

शोक समाचार

कोटा संघ प्रवर्तिनी पू. श्री प्रकाशकंवर जी म. सा. का देवलोक गमन

लातूर (महाराष्ट्र) : कोटा संघ प्रवर्तिनी वात्सल्यवारिधी, वात्सल्यमूर्ति महासाध्वी पू. श्रीप्रकाशकंवर जी म. सा. दिनांक 2 अक्टूबर 2017 को रात्रि ठीक 12.40 पर हृदयगति रुक जाने से अक्समात कालधर्म हुआ देवलोक गमन हुआ। उनकी उम्र 71 वर्ष की थी। चातुर्मास निमित्त श्रीजी लातूर में विराजमान थे।

पू. श्री प्रकाशकंवरजी म. का जन्म सेलूबबजार जिला अकोला में 1946 में पिताश्री पन्नालाल जी तथा माताश्री जतनबाई बोरा के घर पर हुआ। अल्पवय में उन्हें वैराग्य आया और परतूर जिला जालंना में महासती पू. श्री मानकुंवर जी म. ने उन्हें दीक्षा प्रदान की। मराठी, हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी, संस्कृत, प्राकृत भाषा उन्हें अवगत थी। वे शास्त्र विशारद थे। जैन धर्म ग्रंथ तथा अनेक स्तोत्र का उन्हें गहरा अभ्यास था। कोटा सम्प्रदाय के लगभग 65 सतियों का वे कुशल नेतृत्व कर रही थी। शांत-स्वभाव और निरंतर स्वाध्याय, अध्ययन में लीन रहना उनका स्थायी स्वभाव था। महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश क्षेत्र में उनके चातुर्मास हुए। उनकी प्रेरणा से विभिन्न क्षेत्र में गौशालाएं तथा स्थानक का निर्माण हुआ। अपने जीवन में उन्होंने गौसेवा के लिए सतत प्रेरणा दी। भारत भर में उनके गुरुभक्त थे। 1996 में लातूर नगरी में उनका चातुर्मास हुआ इस चातुर्मास में. पू. श्री प्रभाकंवर जी म. तथा पू. प्रकाशकंवर जी म. की प्रेरणा से लातूर में गौरक्षण की स्थापना हुयी। आज इस गौरक्षण में 300 गैंया माजूद हैं। दिनांक 1/10/ 2015 को उनका 54वां दीक्षा दिवस लातूर में मनाया गया।

गुरुणी मैंया के देवलोगमन की सुनकर गुरुभक्तों का सैलाब लातूर नगरी में उमड़ पड़ा- श्री वर्धमान श्वेताम्बर जैन श्रावक संघ लातूर द्वारा पूज्यश्री जी की अंतिम यात्रा लातूर शहर के प्रमुख मार्गो से मार्गक्रमण करते हुए श्रीगुरु गणेश जीवराज जैन गौरक्षण में विसर्जित हुई। पंचरंगी ध्वज, पू.म.सा. की भव्य प्रतिमा अमर रहे-अमर रहे - पू. प्रकाशकंवरजी म.सा.अमर रहे की घोषणा, श्रावक श्वेत वस्त्र, श्राविकाएं चुंदडी साडी, सुन्दर डोली (पालकी) ये शोभायात्रा की विशेषताएं थी।

जैन गैरक्षण में पू. महाराज साब के संसारिक पक्ष से श्री तेजमलजी बोरा, श्री अभयजी बोरा एवं बोरा तथा झांबड परिवा, जालना श्री संघ के प्रमुख एवं लातूर श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री विष्णुदासजी पोकरणा आदि श्रावको ने दाह संस्कार की विधि की। इस अग्निसंस्कार समारोह में औरंगाबाद, जालना, हैदराबाद, रायचूर, यादगिरी, पूण, नांदेड, परभणी, हिंगोली, बार्शी, कळंग, मुरुड, अंबाजोगाई, बीड़, परळी, गंगाखेड, अकोला तथा विदर्भ और अन्य क्षेत्र से गुरुभक्त भारी संख्या में उपस्थित थे। श्रावक संघ के सचिव संजय बोरा, सुनील कोचेटा, तेजमल बोरा, भूतपूर्व विधायक ओमप्रकाश पोकरणा, लातूर के महापौर सुरेश पवार डॉ. पी.पी. लुणावत, शरद डुंगरवाल, अनिल शहा, रितु कोठारी, पुखराज दर्डा, कल्पना बलदोटा, श्री गुरु गणेश ग्रंथालय के सचिव राजेश डुंगरवाल आदि वक्ताओं ने पूज्यश्री म. का गुणगान करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री वर्धमान श्वेतांबर जैन श्रावक संघ, लातूर की ओर से गौतमप्रसादी का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम को

सुचारुरूप से सम्पन्न कराने हेतु लातूर श्री संघ स्थानकवासी जैन नवयुवक ग्रुप चातुर्मास समिति, गोरक्षण समिति आदर्श महिला मंडल के सभी कार्यकर्त्ताओं ने अथक प्रयास किए।

श्रद्धांजलि सभा का आयोजन :- श्री वर्धमान श्वेताम्बर जैन श्रावक संघ लातूर की ओर से पू. श्री प्रकाशकंवर जी म. के निर्वाण पर 4/10/2017 को सदगुरु जीवराज भवन में विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा में प्रखर व्याख्याता पू. श्री सुशीलकंवरजी म., सेवाभावी पू. श्री जयश्रीजी म., पू. श्री आगमश्रीजी म., पू. श्री प्रबोधिजी म. ने अपने श्रद्धांजलि पर मनोगत व्यक्त किए। श्रावक-श्राविकाओं ने भी अपने भावपूर्ण मनोगत व्यक्त करते हुए गुरुणीमैंया को श्रद्धांजलि अर्पित की। पू. श्री सुशीलकुंवर जी म. ने चार लोगस्स सूत्र एवं मंगलपाठ दिया और कार्यक्रम संपन्न हुआ सूत्र संचालन राजेश डुंगरवाल ने किया।

जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्रजी बोकरिया जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री तनसुखजी झामड़ जैन, श्री बालचंद जी खरवड़ जैन, श्री पारसजी मोदी जैन आदि ने शोक श्रद्धांजलियाँ प्रस्तुत की।

प्रेषक : राजेश भागचंद डुंगरवाल

परम सेवाभावी पू. श्री संभव मुनि जी म. का संथारा सहित देवलोक गमन

औरंगाबाद (महाराष्ट्र) : पूज्य श्री गणेशलाल जी म. एवं उप-प्रवर्तक पू. श्री विवेक मुनि जी म. के सुशिष्य रत्न पू. श्री संभव मुनि जी म. ने दिनांक 12 अक्टूबर की सायं को संथारा ग्रहण किया, जो दिनांक 13 अक्टूबर को प्रातः 7:30 बजे पूर्ण हो गया। पू. श्री सौरभ मुनि जी म. महावीर गौशाला कुंभारवाड़ा, औरंगाबाद में चातुर्मासार्थ विराजित थे। पूज्य गुरुदेव काफी समय से श्रमण संघ और जिन शासन की पालना कर रहे थे। वे बहुत ही मिलनसार एवं सदैव तप-त्याग तथा गुरु सेवा में लीन रहते थे। समस्त जैन परिवार परिवार पूज्य गुरुदेव को नमन करते हुए श्रद्धांजलि अभिव्यक्त करता हैं।

प्रेषक : तनसुख झांबड़ जैन

सुश्राविका सौ. लक्ष्मीबाई सुरजमलजी बोथरा जैन देवलोक गमन

औरंगाबाद (महाराष्ट्र) : धर्म निष्ठ सुश्राविका लक्ष्मीबाई सुरजमलजी बोथरा जैन 25 दिन संथारा व्रत पश्चात पंडित मरण हो गया। सर्वश्री सुभाषचंदजी जैन, प्रेमचंदजी जैन, चंदरचंदजी जैन एवं डॉ. नंदलालजी जैन तथा स्व. सौ. विजयबाईजी रायसोनी जैन, सौ. चंचलबाईजी चोपड़ा जैन, सौ. सुशीलाबाईजी खिंवसरा जैन, सौ. शशिकलाबाईजी कोठडिया जैन एवं सौ. कल्पनाजी कुंकूलोळ जैन, 4 सुपुत्र तथा 5 सुपुत्रियों की मातोश्री श्रीमती लक्ष्मीबाईजी सुरजमलजी बोथरा जैन, (वैजापुर वाले) औरंगाबाद में चातुर्मासार्थ विराजित प.पू. गौतममुनि जी म. आदि ठाणा की प्रेरणा से एवं औरंगाबाद सिड़को विभाग में चातुर्मासाथ विराजित प.पू. श्री सुयशाजी म. आदि ठाणा के मुखारविंद से अपनी इच्छानुसार दिनांक 7 सितम्बर 2017 को सुबह 9.41 बजे संथारा व्रत धारण किया। संथारा के समाचार औरंगाबद एवं आसपास के उपनगरों में मिलते ही दर्शनार्थियों की भीड़ उमड़ पड़ी।

आपका जन्म जलगाँव जिले के वाकोद ग्राम में पिता श्री कपूरचंदजी छाजेड़ जैन एवं मातोश्री स्व. विरदाबाई कपूरचंदजी छाजेड़ जैन के घर में दीपावली के दिन सायं 7.15 बजे जन्म हुआ। लक्ष्मी पूजन के दिन जन्म होने के कारण उनका नाम लक्ष्मीबाई रखा गया। आप सिर्फ नाम से ही नहीं अपितु दीन-दुबलों की सेवा,

जरुरतमंद का आधार थी, धर्म-कर्म, दान, जिनशान की सेवा में सदैव अग्रसर थी। आपके गुरु प. पू. मिश्रीलाल जी म. तथा प.पू. श्र‍ अमृतकंवरजी म. गुरुनिमैया थीं। धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा की धनी श्रीमती लक्ष्मीबाईजी जैन ने अपने पतिदेव श्री सूरजमलजी बोथरा जैन को तबियत की असाता होने के पश्चात संथाराव्रत धारण कर जीवन का कल्याण करने की प्रेरणा दी। उनका पंडित मरण श्री भगवान महावीर जन्म कल्याणक के दिन 9-4-1998 को हुआ। धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत बोथरा परिवार की बेटी एवं सौ. लक्ष्मीबाईजी जैन की पोती कु. राजेश्री सुभाषचंदजी बोथरा जैन को संयम मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा देते हुए दीक्षा की आज्ञा दी। दिनांक 16.4.2012 को खाचरोज (एम.पी.) में गणाधीश प.पू. श्री उमेशमुनि जी म. के मुखारविंद से सम्पन्न हुई। ऐसे दीक्षार्थी का नाम प.पू. श्री रचिता जी म. जो इस वर्ष इंदौर में चातुर्मासार्थ विराजित हैं।

सौ. लक्ष्मीबाईजी जैन कायम ही साधु-यंतसें कर सेवा में कायम ही जुड़ी रहती थी। आप धार्मिक कार्यों में, दान धर्म में हमेशा से अग्रसर थी एवं अपने पतिराज एवं सुपुत्र एवं सुपुत्रियों को भी ऐसी ही शिक्षा दी थी। आपने अपनी 18 साल की उम्र में ही कंदमूल का त्याग किया। निरंतर तपस्या करते हुए 3,8,11 की तपस्यायें की। आप श्री अहिंसानगर जैन स्वाध्याय भवन- औरंगाबाद में प्रवचन हॉल के निर्माण में आर्थिक सहयोग देने की प्रेरणा अपने सुपुत्र श्री डॉ. नंदलालजी जैन को दी। माता की आज्ञा का पालन करते हुए आपश्री ने भी बड़ा सहयोग दिया। आप श्री तिलोकरत्नजी पार्थर्डी जैन स्वाध्याय भव, अहमदनगर की आजीवन सदस्या रही। काफी समय वैजापुर में बीता जो आपकी कर्मभूमि रही। उम्र के 81 वर्ष में मा.ना. श्री अरुणभाईजी जैन गुजराती की अध्यक्षता में तथा जलगांव निवासी उद्योगपति एवं सेवादास श्री दल्लुभाऊजी जैन की उपस्थिति में सम्पन्न आपा सहस्र दर्शन सोहळा सम्पन्न हुआ। औरंगाबाद में आकर अपने पुत्र श्री डॉ. नंदलालजी बोथरा जैन को अपने साथ रखा। अपने 12 वर्ष औरंगाबाद में वास्तव के दरमियान अपनी पुत्रवधु सौ. लताजी जैन तथा पौत्र शुभम जैन ने आपका पूरा-पूरा ध्यान रखा। उम्र की 93वर्ष की आयु में संथाराव्रत धारण कर 25 वें दिन दशहरा उत्सव पश्चात 1 अक्टूबर, 2017 को आपका पंडित मरण हुआ। अंतिम यात्रा में औरंगाबाद एवं आसपास के विविध उपनगरों के विविध श्रावक संघ के अध्यक्ष, विविध संस्था, संघटना, राजकीय नेतृत्व, आमदार एवं हजारों की संख्या में जनसमुदाय उपस्थित था। **प्रेषक : ताराचंद बाफना जैन**

दानवीर सेठ वरिष्ठ सुश्रावक श्री लड्डूलाल जी जैन (चौधरी) देवलोक गमन

सवाई माधोपुर (राजस्थान) : सरल स्वभावी मिलनसार मृदुभाषी हंसमुख स्वभाव के धनी धर्मपरायण संघ सेवाभावी, धर्मनिष्ठ दानवीर सेठ वरिष्ठ सुश्रावक श्री लड्डूलाल जी जैन (चौधरी) का आकस्मित दिनांक 28 सितम्बर 2017 को देहांत हो गया। आपके दैनिक रुप से सामायिक स्वाध्याय प्रतिक्रमण नवकारसी पोरसी का व्रत नियम अनवरत चलता रहता था। आप उदारमन सुश्रावक के इस वर्ष श्रमण संघीय उप-प्रवर्तनी महासती पू. श्री मैनाकंवर जी म. ठाणे-5 के पावन चातुर्मास में मंगल प्रवेश की गौतम प्रसादी आपके परिवार के द्वारा रखी गई थी। आचार्य सम्राट 1008 पू. श्री आनंदऋषि जी म. के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा रही थी।

श्रावक संघ सवाई माधोपुर की कार्यकारिणी में वर्षों तक विभिन्न पदों पर रहते हुए संघ निष्ठ रहे हैं। गौ-माता एवं पक्षियों के प्रति सेवा की भावना आपमें हर वक्त रहती थी। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर प्रभु चरणों में लीन हो गये। **प्रेषक : आनंद भवन, सवाई माधोपुर**

दिवंगत आत्माओं के प्रति कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

एच एस रांका फॅमेली

द्वारा

स्थापित एवम संचालित

रांका फॅमेली फाउन्डेशन्स

आध्यात्म एवम संस्कृति विकास तथा स्वास्थ्य एवम शिक्षा सेवार्थ

25 वर्षो से समर्पित (1992-2017)

- आचार्य श्री नानेश सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल - बेलापुर, नवी मुंबई
- आचार्य श्री नानेश बॉयज हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश गलर्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- महासती श्रीयश वर्किंग वूमन्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश डायलसिस सेंटर - अंधेरी, मुंबई
- रांका भवन (आध्यात्म-विकास) - वर्ली सीफेस, मुंबई
- रांका सेवा सदन (जनसेवा-प्रकल्प) - वर्ली, मुंबई
- रांका कला निकेतन (संस्कृति-विकास) - वर्ली, मुंबई
- शंकर समता भवन (जैन-स्थानक) - भीलवाडा, राजस्थान-सहभागिता
- आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट - दांता, राजस्थान-सहभागिता
- अन्य समाज सेवी संस्थाओं में सहभागिता/सहयोग एवम् संचालन

जनसेवा ही जिनेश्वर की सेवा है – स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश

Advt

RNI NO. - 2123/57
Date of Posting 23-24/10/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
अक्टूबर 2017, द्वितीय पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 20 October, 2017

श्री सोहनलाल जी कोठारी जैन

सौ. मंजुबाईजी कोठारी जैन

जीवन प्रकाश योजना प्रमुख आधार स्तम्भ

श्री सोहनलालजी कोठारी जैन एवं श्रीमती मंजुबाई जी कोठारी जैन

झीलवाड़ा, गोरेगाँव, मुंबई (महाराष्ट्र)

श्री सोहनलाल जी कोठारी जैन का जन्म अरावली पर्वत श्रेणी के मध्य में बसे झीलवाड़ा गांव में हुआ। आपका विवाह सुसंस्कारित, धार्मिक श्रीमती मंजुबाई जी से हुआ। आपके सुपुत्र श्री हितेश कुमार जी कोठारी जैन पुत्र वधु श्रीमती शीतलजी कोठारी जैन एवं श्री चेतनकुमारजी कोठारी जैन, पुत्रवधु श्रीमती दर्शनाजी कोठारी जैन है। आपकी सुपुत्री सौ. हेमाजी–पंकजजी चोरड़िया (आमेट, अगरिया, विक्रोली, मुंबई निवासी) है। आपके सुपौत्र श्री मन्न जी एवं सुपोत्रियाँ कु. हिर, शिया, नीवी, दोहिता भव्य, दोहिती मान्या हैं। आपके पिताजी स्व. श्री भंवरलाल जी कोठारी जैन एवं माताजी श्रीमती लेहरीबाईजी कोठारी जैन द्वारा दिये हुये सुसंस्कारों से आप पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ समाज सेवा में भी अग्रणी सेवा दे रहे हैं। आपकी फर्म चारभुजा ज्वैलर्स गोरेगाँव में एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान के रूप से स्थापित है।

आपके एवम् आपके परिवार के द्वारा समय–समय पर धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन शुरु से ही किया जाता रहा है, जिनमें चारभुजा चौराहा जैन मंदिर में शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान प्रतिमा एवं श्री नाकोड़ा भेरुजी की प्रतिमा की स्थापना की गई। चारभुजा चौराहे पर सप्त दिवसीय आई कैम्प लगाया गया, उसका सम्पूर्ण व्यय आपके द्वारा किया गया। जिसमें 550 मरीजों के ऑपरेशन किये गये। चारभुजा चौराहे पर नवनिर्मित हॉस्पिटल में आपरेशन थियेटर का निर्माण तथा आपरेशन मशीनरी आप द्वारा दी गई।

झीलवाड़ा जैन मंदिर की प्रतिष्ठा में आपके योगदान के साथ मूल नायक आदिनाथ भगवान की मूर्ति की स्थापना, झीलवाड़ा में क्षेत्रपाल भगवान के शिखरबंद मंदिर के निर्माण में पूर्ण सहयोग आप द्वारा किया गया। पूज्य आचार्य रवीशेखर विजयजी म. सा. के झीलवाड़ा चातुर्मास में उपधान तप कराने का सम्पूर्ण लाभ आपके परिवार ने लिया। उसमें 271 आराधकों ने उपधान तप किया। गोरेगाँव में सोनल जैन मंदिर में नाकोड़ा भेरुदेव की मूर्ति स्थापना एवं प्रतिवर्ष होने वाले कई कार्यक्रम आपके द्वारा संयोजित होते हैं।

चारभुजा जी मंदिर में पट्टशीला, भगवान की रासलीला का निर्माण आपके द्वारा किया गया। ऐसे कई समाजसेवा के काम आपके परिवार द्वारा किये जा रहे हैं।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती मंजुबाईजी कोठारी जैन सुसंस्कारों से कई तपस्यायें पूर्ण कर चुकी है उपधान तप, आयंबिल, ओली, सिद्धितप, वर्षीतप अनेक तपस्यायें पूर्ण कर चुकी हैं। आपकी पुत्रवधु श्रीमती शीतल कोठारी जैन ने उपधान तप एवं श्रीमती दर्शना कोठारी जैन ने अठाई की तपस्या सम्पूर्ण की। आप एवं आपका परिवार इसी प्रकार धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों में बढ़–चढ़कर रुचि लेता रहे। **श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की जीवन प्रकाश योजना में प्रमुख आधार स्तम्भ बनने पर आपको एवं आपके परिवार को हार्दिक बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ!**

मोहनलाल चोपड़ा जैन	डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन	महेन्द्र बोकरिया जैन	संजय बोथरा जैन	लालचंद बाफना जैन
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)	(राष्ट्रीय महामंत्री)	(राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)	(अध्यक्ष–जीवन प्रकाश योजना)	(मंत्री–जीवन प्रकाश योजना)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली-110 001 से प्रकाशित